काजी नजरुल इस्लाम

गोपाल हालदार

MT
891.440 92
N 239 H

MT
891.44092
N 239 H

काजी नजरुल इस्लाम (१८९९-१९७६), बंगलाक विद्रोही कवि, बीसम शताब्दीक विशिष्टतम भारतीय कलाकर मे परिगणित छथि। विलक्षण कवि एवं देश-भक्त नजरुल भारतक स्वतन्त्रता-संग्रामक समय अपार पीड़ाक अनुभव कएलन्हि। आ' एही पीड़ासँ जन्म लेलक हिनक कविता जे स्वयं कविकेँ तथा हिनक प्राण-प्रिय लक्ष्य केँ अमर बना देलक।

विद्रोही कवि अपन जीवनक अन्तिम तीन दशक भरि विश्वक लेल मृतप्राय रहलाह। भाग्यक विड़म्बनाजे अदम्य शक्ति सम्पन्न नजरुल तीस वर्ष धरि विक्षिप्त रहलाह। घोर उदासी एवं विवश मूकतासँ निस्तार नहि पओलन्हि। ओ हे दुखद मौनावस्थहुमे नजरुल जन-सामान्यक युग-संगीत बनल रहलाह।

गोपाल हालदार द्वारा प्रस्तुत एहि आलखमे, जे काजी नजरुल इस्लामक जीवितावस्थहिमे लिखल गेल छल, कवि सँ एहन पाठककेँ परिचित करएबाक प्रयास कएल गेल अछि, जे हिनक कविता, गद्य-साहित्य एवं गीतक रसास्वादन मूलसँ नहि कए सकैत छथि। एहिमे काजी नजरुल इस्लामक व्यक्तित्व एवं कृतित्व समयक समुचित सन्दर्भमे सार रुप मे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

आवरण-सज्जा : सत्यजित राय

भारतीय साहित्यक निर्माता

काजी नजरुल इस्लाम

लेखक
गोपाल हालदार

अनुवादक
रमाकान्त झा

साहित्य अकादेमी

Kazi Nazrul Islam : **Maithili translation by Ramakant Jha of Gopal Haldar's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1983), Rs. 4.**

Rs 15/-

Library IIAS, Shimla
MT 891.440 92 N 239 H
00117174

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : १९८३

MT
891.44092
N239 H

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोजशाह रोड, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय :

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता ७०००२९
२९, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास ६०००१८
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

Rs 15/-

मूल्य : चारि टाका

Indian Institute of Advanced Study
117174
19/12/04
SHIMLA

मुद्रक :
अशोक प्रेस,
शेखपुरा, पटना ८०००१४

पुरोवाक्

नजरुल इस्लाम पर ई आलेख बीसम शताब्दीक एक सर्वश्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्यकारक विनम्र परिचयात्मक प्रयास थिक । प्रस्तुत आलेख ओहि सज्जन-वृन्दक लेल अछि, जे मूलरूपमे नजरुलक कविता, गद्य-साहित्य एवं गीतक रसास्वादन करबासँ असमर्थ छथि, कारण जे ई सम्पूर्ण साहित्य कविक मातृभाषा बंगलामे रचित छैन्हि । ई कविकलाकारक एवं हिनक कृतिक विस्तारपूर्ण जीवनी वा आलोचनात्मक मूल्यांकन नहि थिक । सीमित रूपमे मात्र परिचयक उद्देश्यसँ, नजरुलक संक्षिप्त जीवनी एवं कृतिकेँ समयक समुचित संदर्भमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेल अछि, जे संदर्भ एक व्यक्ति एवं कलाकारक रूपमे नजरुलक सत्यस्वरूपक विवृति लेल आवश्यक छैक । एहि प्रयासमे हम सत्यनिष्ठ होएबाक कोशिश कएलहुँ अछि । संदेहास्पद घटना वा प्रसंगकेँ ग्रहण वा अस्वीकार करबाक काल साकांक्ष छलहुँ । नजरुलक प्रत्येक रचना एवं उपलब्धिक मूल्यांकनमे यथासाध्य तटस्थताक निर्वाह कएल अछि । हमर मुख्य उद्देश्य रहल अछि सीमित क्षेत्रमे अबंगला-भाषी पाठकवर्गकेँ बंगला साहित्य एवं संगीतक क्षेत्रमे नजरुलक स्थिति-विषयक सूचना देब तथा ओहिपर प्रकाशनिपात करब । एहि उद्देश्यक पूर्ति तखनहि बूझल जाएत, जखन पाठकवर्गमेसँ किछुओ व्यक्ति एहि आलेख दिश आकृष्ट होथि आओर कविक मूल कविता एवं गीतसँ प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त कऽ सकथि । कारण जे जखन सफलतम अनुवादो मूलक स्थानापन्न नहि भऽ सकैछ, तखन प्रस्तुत रूपरेखाक कोन कथा ?

अनुवादक होएबाक दावा कएने बिना यथास्थान मूल बंगला उद्धरण आओर मात्र शब्दार्थक संग अंग्रेजी रूपान्तर देब हमरा अपेक्षित बुझना गेल । एकर कारण ई जे कोनो काव्यक चर्चा भेला पर ओकरा मूल रूपमे पढ़बासँ असमर्थ पाठक ओहि विषयकेँ थोड़बहु जनबाक हेतु उत्सुक भऽ जाइत छथि । मूल अंश (रोमन लिपिमे अल्पतम स्वरचिह्नक संग) एवं अंग्रेजी रूपान्तर सीमित रूपमे ओहि उत्सुकताक शान्त्यर्थ देल गेलैक अछि ।

काजी नजरुल इस्लामपर आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं हुनक जीवनीलेखनमे उत्तरोत्तर वृद्धि भऽ रहल छैक (पश्चिम एवं पूर्व बंगाल दूनू ठाम), जाहिमेसँ किछु बड़ दिव आओर विश्वसनीय छैक, किन्तु ओ सभ प्रायः बंगला भाषामे छैक : हँ, एकमात्र अपवाद छैक अंग्रेजीमे श्री वसुधा चक्रवर्तीकृत संक्षिप्त एवं सुन्दर रेखाचित्र (नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित)। हम अनेक लेखकक ऋणी छी, जाहिमे श्री चक्रवर्ती महोदयक अतिरिक्त दू सज्जनक विशेष रूपेँ नामोल्लेख कएने बिना नहि रहि सकैत छी। ओ छथि साथी मुजफ्फर अहमद एवं जनाव अजहरुद्दीन खान। प्रथम तथ्यक हेतु विश्वसनीय छथि आओर दोसर छथि नजरुल साहित्यक सूचनास्रोत। हम हिनका दूनू एवं अन्य लेखक लोकनिक प्रति हृदयसँ आभारी छी।

हम साहित्य अकादेमीक प्रति दू कारणेँ क्षमाप्रर्थी छी : प्रथम, एहि आलेखक त्रुटि सभक लेल आओर दोसर, साहित्य अकादेमीसँ अनुदिष्ट भेला पर एकरा लिखवामे विलम्बजन्य अपराधक लेल। लेखनकार्य समाप्त भेलो उत्तर पाण्डुलिपि प्रस्तुत करबामे जे प्रमाद भेल, ताहू हेतु हम क्षमा-याचक छी।

२७ मइ, १९७२ ई०

विषय-सूची

जीवंत संबंध-सूत्र	९
जन्म ओ आरंभिक काल	११
योद्धा एवं साहित्य-स्रष्टा : प्रथम स्फुरण	१८
विद्रोही कवि	२८
जनगणक कवि	४५
गगन-विहारी नजरुल	५७
कपचल पाँखि	६६
नजरुलक बीजमंत्र	८१
ग्रंथ-सूची-संबंधी टिप्पणी	८७

চিত্র-সূচী

[illegible]

जीवंत सम्बन्ध-सूत्र

काजी नजरुल इस्लाम विश्वक लेल १९७२ ई०मे प्रायः मरि चुकल छलाह। अपना जीवनक ७३म वर्षमे दैहिक रूपसँ जीवित विद्रोही कवि अवस्थाक मोताबिक अधिक बूढ़ नहि बूझि पड़ैत छलाह। एकरा भाग्यक विड़म्बना छाड़ि आओर की कहल जा सकैछ, जे अप्रतिहत-अदम्य वर्चस्विताँ सम्पन्न विप्लवी कवि लगभग पैंतीस वर्ष धरि विक्षिप्त रहलाह। गहन उदासी तथा विवश मौनसँ निस्तारक कोनो संभावना नहि छलैन्हि। तथापि अज्ञात एवं अलक्षित रूपसँ कालक्रमेँ नजरुल एक युगसँ दोसर युग तथा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक मध्य जीवंत संबंध-सूत्र बनल गेलाह। उदाहरणस्वरूप, बंगालक कला एवं साहित्य यद्यपि नवीन युगमे प्रविष्ट भऽ चुकल अछि, तथापि एखनहु धरि स्नेह एवं कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धाक संग नजरुलसँ प्रेरणा ग्रहण भऽ रहल छैक। बंगालक जनता—नजरुलक जनसमुदाय—राजनीतिक दृष्टिसँ दू भिन्न स्वतंत्र राज्यमे विभक्त भऽ चुकल छथि। दू राज्यमे विभाजित भेनहु ई लोकनि प्रत्यक्षतः अनुभव करैत छथि जे नजरुलक वाणी एवं एहि वाणीकेँ प्राण प्रदान कएनिहार चेतना "सीमाहीन" छैक आओर दूनू देशक जनता एक एहन चैतन्यपूर्ण राष्ट्रमण्डलक नागरिक छथि, जाहि राष्ट्रक अधिष्ठाता-विधाता छलाह किंवा एखनहु छथि नजरुल एवं एहि दू राज्यमे अवस्थित नजरुलक सहकर्मी साहित्यकारगण। ओहि दुखद मौनावस्थामे रहलो उत्तर काजी नजरुल इस्लाम नवयुगक झंकार छलाह आओर संगहि छलाह सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अन्वेषणमे निरत सर्वदेशस्थ वंगीय जनसमुदायक वंशानुगत संपत्ति।

करैत छलाह। हाजी पहलमान सदृश फकीर, साधुजन, वाउल एवं सूफीसंत तथा आसपासक दरवेश सभक ई वड़ भक्ति-भावसँ सत्संगति सेहो करैत छलाह। धार्मिक प्रवृत्तिक होएव तँ स्वाभाविक छले, विशेष उल्लेखनीय विषय ई जे सांसारिकताक प्रति उदासीन ई प्रारंभहिसँ छलाह। सांसारिक काज-धंधा दिश ध्यान देब तँ कहियो ई सिखवे नहि कएलन्हि। नजरुलकेँ कोनो बातक चिंता-फिकिर नहि रहैत छल। किछु अंशमे ई अतिव्ययी सेहो छलाह। वास्तवमे ई 'खेपा' छलाह : 'खेपा'क अर्थ होइछ प्रमत्त एवं उन्मत्त चेतना। आनन्दमूर्ति तँ ई छलाहे ; बालचपलता आओर लोकगीतमे सेहो बड़ रुचि छलैन्हि। ग्रामीण लेटो दलक प्रति हिनक विशेष आकर्षण छल। एहि सभक संभाव्य कारण ई जे हिनका हेतु नियमित शिक्षाक व्यवस्था नहि छलैन्हि। 'लेटो' शब्द 'नाटक' शब्दसँ निःसृत भेल छैक। चुरुलियाक समीपवर्ती गाम सभमे संगीत-मंडलीकेँ लेटो दल कहल जाइत छलैक। ई गायक दल बंगलाक सुपरिचित 'तरजा' आओर 'कवीर' दलक समान होइत छलैक। एहि गायक दल सभक मध्य संगीत आओर प्रश्नोत्तरमे प्रतिद्वन्द्विता रहैत छलैक। तेँ प्रत्येक लेटो दलमे गायक सदस्यक अतिरिक्त व्यंग्य-पटु प्रत्युत्पन्नमति गीत-रचनाकार सेहो रहैत छल। एहि गीतकार कविकेँ विपक्षी दलक प्रत्युत्तरमे तत्काल (सभामध्य) गीतक रचना करए पड़ैत छलैक। नजरुलक एक पित्ती एही भाँतिक एक लेटो दलक सदस्य छलाह। ओएह हिनका एहि दलमे अनलथिन्ह आओर मात्र १४ वर्षक आयुमे ई एक लेटो दलक प्रधान बनि गेलाह। नजरुलक किछु लेटोगीत एखनहु सुरक्षित छैन्हि (द्रष्टव्य अजहरुद्दीन खानक 'बंग साहित्ये नजरुल,' पृ० ७-८, बंगाब्द १३६३), जाहिसँ लोकगीत एवं लोक-जीवनमे हिनक जड़ि जमल रहवाक प्रमाण भेटैछ। ई गीत सभ हिनक विषयवस्तु संबंधी विस्मयकारी वैविध्य एवं बंगला भाषाक छन्द ओ लय पर सहज अधिकारक परिचायक सेहो छैक। तेँ निश्चित रूपेँ कहल जा सकैछ जे नजरुलक परवर्ती गीत कोनो विजातीय विकासक परिणाम नहि छल। लेटोक प्रदर्शन विशेष ऋतुमे होइत छलैक। लेटो दलक हेतु अधलाह-प्रतिकूल ओ काल होइत छलैक, जखन उपजा मारल जाइत छलैक।

प्रथम-प्रथम प्रवासहेतु नजरुल विशाल रेल जंक्शन आओर कोइलाक खानिक लेल प्रसिद्ध स्थान आसनसोल अएलाह। ओतए पहिने एक रेलगार्डक डेरामे टहलूक काज भेटलैन्हि। पुनः एक पावरोटीक कम्पनीमे काज सीखए लगलाह। काजसँ पलखति होइतहि दोकानहिमे ई संगीत एवं बाँसुरीवादनमे प्रवृत्त भऽ जाइत छलाह, जाहि आकर्षणसँ लोक हिनका लग एकत्रित भऽ

जाइत छल। श्रोतागण मध्य एक पुलिस दरोगा रफीजुल्ला हिनक प्रतिभासँ बड़ प्रभावित भऽ हिनका अपना गाम लऽ अनलथिन्ह आओर निकटवर्ती दरिया रामपुर हाइ स्कूलमे शुल्कमुक्त छात्रक रूपमे हिनक प्रविष्टि करा देलथिन्ह (१९१२ ई०)। तत्काल ई स्थान मैमनसिंह जिलामे छलैक मुदा आब बंगला देशमे छैक। (पढ़बासँ) बेशी रस भेटैत छलैन्हि नजरुलकेँ रास्ता-कातक खेतमे कृषक बालक-मण्डली मध्य वा ओकरा सभक संग खेलब आओर बीड़ी पीअबमे। माछ मारब आओर अपना गीतसँ ओहि मण्डलीक मनोरंजन करबामे सेहो कम रुचि नहि छलैन्हि हिनका। सुनल जाइछ जे स्कूलक वार्षिक परीक्षामे बंगला रचना पत्रक उत्तर ई पद्यमे देने छलथिन्ह। किन्तु अन्य विषयक स्थिति नीक नहि छलैन्हि, जाहिसँ ई अनुत्तीर्ण भऽ गेलाह। एकरा पश्चात् नजरुल आसनसोल फिरि अएलाह। संभवतः स्कूलक शुल्कक ओरिआओन करबामे असमर्थ होएबाक कारणेँ नियमितरूपेँ शिक्षा प्राप्त करबाक हिनक इच्छा पूर्ण नहि भऽ सकलैन्हि।

आसनसोल अएलापर नजरुलक नाम मथरूमक हाइ स्कूलमे लिखाओल गेल। एहि स्कूलक संचालक छलाह कासिम बाजार (मुर्शिदाबाद)क उदार जमीन्दार महाराजा मणीन्द्र चन्द्र नन्दी। स्कूलक हेड मास्टरक नाम छलैन्हि कुमुदरंजन मल्लिक, जे कवि सेहो छलाह। एतऽ हिनका निःशुल्क छात्रवृत्ति एवं अन्य सुविधाक आशा छलैन्हि, मुदा से भऽ नहि सकलैन्हि। तेँ आब नजरुल रानीगंज (वर्दमान) स्थित सिरसोल हाइ स्कूल चल अएलाह। ई स्कूल पुरान सामन्ती राज द्वारा पोषित छलैक। एतऽ हिनका निःशुल्क छात्रवृत्तिक संग मुस्लिम होस्टलमे मुफ्त भोजन आओर आवासक सुविधा भेटलैन्हि। एकरा अतिरिक्त सात रुपैया मासिक वृत्ति सेहो। एहि स्कूलमे आठम वर्गक छात्र मध्य नजरुल प्रथम स्थान प्राप्त कएलन्हि आओर एकहि सालमे दू वर्ग टपा कऽ हिनका दसम वर्गमे प्रोन्नत कऽ देल गेलैन्हि। रानीगंजमे हिनक समकालीन छलाथिन्ह बंगलाक सुविख्यात उपन्यासकार ओ कथाकार शैलजानन्द मुखोपाध्याय, जे दोसर स्कूलमे पढ़ैत छलाह। दूनूगोटाक मध्य साहित्यिक मित्रता आजीवन रहलैन्हि। ओहिकाल नजरुल बेशी गद्य आओर शैलजानन्द बेशी पद्य लिखैत छलाह। ई क्रम पछाति उनटि गेलैक।

एहि काल नजरुल पर अन्यो व्यक्ति सभक प्रभाव पड़लैन्हि। एही स्कूलमे छलाह निवारणचन्द्र घटक नामक शिक्षक, जे एक गुप्त क्रान्तिकारी दल (युगान्तर)क सदस्य छलाह। संयोगवशात् घटक महोदयक पितिआइन

दुखारी देवी बंगालक प्रथम महिला छलीह, जनिका क्रान्तिकारीलोकनिक अस्त्र-शस्त्र रखबाक अपराधमे जेल भेल छलैन्हि। एहिठाम मुख्य कथ्य ई जे घटक महोदय नजरुलमे जोश आओर वर्चस्विता देखि हिनका अपना दिश आकर्षित कएलन्हि। ओ प्रथम विश्व-युद्ध (१९१४-१९१८)क समय छल आओर छल स्वाधीनताक हेतु भारतीय क्रान्तिकारीक द्वारा कसि कऽ चोट करबाक व्यस्त काल। ब्रिटेनक विपत्तिकालकेँ ईलोकनि अपना हेतु सुअवसर बुझलैन्हि। ब्रिटिश शासक सेहो एहि संकट-कालमे तोपक लेल भारतसँ बेशी-सँ-बेशी भोजन-सामग्री (अर्थात् युद्धमे मरबाक लेल सैनिक) चाहैत छल। मुदा शासकक दृष्टिमे बंगालीजन असैनिक जातिक लोक बुझल जाइत छलाह। तेँ सेनामे हिनका लोकनिक भर्ती वर्जित छल। सर्वप्रथम एहि बेर प्रयोगक हेतु बंगालीलोकनिक 'डबल कम्पनी' शुरू कएल गेल, जे पछाति उनचासम 'बंगाली रेजीमेन्ट' नामसँ अभिहित भेलैक। नजरुल ओहि समय १८ वर्षक छलाह। हिनका सैनिक शिक्षा अर्जित करबाक हेतु प्रेरित कएल गेलैन्हि। स्वातंत्र्य-संग्रामक सफलताक हेतु ई अपेक्षित बुझल गेलैक। वस्तुतः नजरुलकेँ बेशी प्रोत्साहनक आवश्यकतो नहि छलैन्हि, कारण जे स्वतंत्रताक हेतु हिनक आंतरिक प्रेम स्वतः बड़ उद्‌बुद्ध छल। मुदा एतबा तँ स्वीकार करहि पड़त जे निवारण घटक द्वारा ओहि स्वतंत्रताप्रेमक दिशा-निर्धारण भेल आओर ओएह लक्ष्य सेहो निश्चित कएलन्हि: ओ लक्ष्य छल देशक स्वाधीनता। एहि स्थायी प्रेरणाक अर्थ काल-क्रमेण व्यापक होइत गेलैक। नजरुलक सृजनात्मक चेतनाकेँ जे तत्व सभसँ अधिक प्रभावित कएलक, से छल क्रान्तिकारी देशभक्ति आओर उत्कट स्वातंत्र्य-अभिलाषा। कोनहु महत्वपूर्ण कलाकारक हेतु अपन युगधारासँ उदासीन रहब बड़ कठिन होइछ। ओहीं भाँति होइछ अस्वाभाविक कोनो पराधीन देशक लेखकक हेतु स्वातंत्र्य-संग्रामक मुहूर्तमे अपनाकेँ असंपृक्त राखब। आ' नजरुल तँ सिरसोल आवास-कालहिसँ ओहिलेल प्रतिबद्ध छलाह। एक कवि ओ कलाकारक रूपमे काजी नजरुल इस्लामक समुचित मूल्यांकन करबाक हेतु आवश्यक छैक परवर्ती बीस वा पचीस वर्ष मध्य भेल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधिक विहगावलोकन।

नजरुल स्कूल-कोर्सक अंतिम वर्षमे पढ़ाइ छोड़ि कऽ सेनाक 'डबल कम्पनी'मे भर्ती भऽ गेलाह। किछुए दिनक बाद हिनका अपना रेजीमेन्टक संग पश्चिमोत्तर सीमापर पहिने नौसेना आओर पुनः करांची पठा देल गेलैन्हि, जतए ई १९१७ ई० सँ १९१९ ई० धरि छलाह। साधारण सैनिकसँ हिनक पदोन्नति हवलदारक (इंडियन कमीशन अफसरक) रूपमे भेलैन्हि। बूझ जे ई अपना

कम्पनीमे क्वार्टर मास्टर छलाह। निश्छल, उन्मुक्त एवं प्रियगर साहचर्य तथा काव्यहुसँ अधिक अपन गीतसँ ई करांची बैरेकक सैनिक दलक मनोरंजन करैत छलाह। एकरा प्रतिदानमे अर्जित कएलन्हि ई सेनासँ संबद्ध एक पंजाबी मौलवीक सहायतासँ फारसी भाषा ओ काव्यक विस्तृत ज्ञान। ओहि काल नजरुलक रचना गद्य आओर पद्य दूनूमे होइत छल। ओहिकाल ई हाफिजक रुबाइक अनुवाद प्रारम्भ कएने छलाह, जे बहुत दिन बाद पूर्ण भेलैक आओर १९३० ई० (बंगाब्द १३३७)मे प्रकाशित भेलैक।

ओहीकालक रचित आत्मकथापरक कहानी—**'बाउल-डुलेर आत्मकथा'** कलकत्तासँ प्रकाशित **'सौगात'** पत्रिकाक ज्येष्ठ, १३२६ (१९१९ ई०) अंकमे छपलैक। 'सौगात'क सम्पादक छलाह मौलवी नासीरुद्दीन। साहित्य जगत्मे एहि पत्रिकाक नीक प्रतिष्ठा छलैक। हिनक दोसर रचना 'मुक्ति' शीर्षक वर्णनात्मक कविता 'बंगीय मुसलमान साहित्य पत्रिका'क श्रावण, १३२६ (जुलाइ-अगस्त १९१९ ई०) अंकमे प्रकाशित भेलैन्हि। ई त्रैमासिक पत्रिका 'बंगीय मुसलमान साहित्य समिति'क अंग छलैक। एहि रचनाक कवि द्वारा निर्धारित मूल शीर्षक छलैक 'क्षमा'। मुदा बादमे सम्पादक-मण्डल एकरा बदलि कऽ 'मुक्ति' शीर्षक देलथिन्ह, जे नजरुलकेँ स्वीकृत भेलैन्हि। एहि तथ्यपरक रचनामे रानीगंजक एक स्थान-विशेषक बड़ सजीव वर्णन भेल छैक। वर्ण्यविषय थिक एक फकीरक जीवन एवं मृत्युक प्रसंग तथा ओही फकीरक प्रतापसँ एक सूखल ठूठ गाछक नवपल्लवित होएब। ई तुकान्त कविता विषयानुकूल एवं आयासहीन शैलीमे लिखल छैक। अनेक दृष्टिसँ एहि कविताक महत्व छैक। एहिसँ इहो ज्ञात होइछ जे नजरुलकेँ बाल्यावस्थहिसँ अलौकिक घटना एवं रहस्यपूर्ण शक्तिमे किंचित् विश्वास छलैन्हि। एहि कविताक द्वारा नजरुलक सम्पर्क प्रसिद्ध साम्यवादी नेता कामरेड मुजफ्फर अहमदसँ पुनः स्थापित भेलैन्हि। अहमद साहेब औपचारिक रूपसँ तँ एहि पत्रिकाक सम्पादक नहि छलाह, मुदा वास्तवमे एहि पत्रिका एवं 'समिति'क प्राण ओ आत्मा छलाह इएह। ज्ञातव्य जे नजरुल आओर अहमद साहेबक बीच सम्पर्क पत्राचार द्वारा स्थापित भेल छल। तीक्ष्ण आलोचनात्मक दृष्टिसँ सम्पन्न अहमदकेँ 'मुक्ति' शीर्षक कविता पढ़ैत देरी अनुभव भेलैन्हि जे हुनका एक 'देदीप्यमान नक्षत्र'क दर्शन भेल होन्हि। ओ 'बंगीय मुसलमान साहित्य पत्रिका'क हेतु आओर अधिक रचना पठएबाक हिनकासँ आग्रह कएलथिन्ह। एवं विधिएँ एक दृढ़ महत्वपूर्ण मैत्रीक जड़ि रोपल गेल, जे यदि भारतमे नहि तँ, बंगालमे सर्वप्रथम स्पष्ट साम्यवादी

चेतनाक कविक रूपमे नजरुल इस्लामक उत्तरोत्तर विकासमे महत्वपूर्ण तत्व सिद्ध भेल। तत्काल इएह 'वंगीय मुसलमान साहित्य पत्रिका' हिनक (प्रकाशन)-मंच छल। 'हेना' आओर 'व्यथार दान' दू गोट कथा, जाहिमे दोसर कथा अधिक महत्वपूर्ण छैक, ओही पत्रिकामे छपलैक। एहि दून कथाक प्रकाशनसँ ई पाठकवर्ग—विशेषत: समितिक शिक्षित युवा मुसलमानक वीच आदरणीय भऽ गेलाह। मौलवी काजी अब्दुल वदूद आओर अबुल कलाम शमसुद्दीन, जे वादमे साहित्य-क्षेत्रमे वड़ प्रसिद्ध भेलाह, नजरुलक मित्र भेलथिन्ह। पवित्र गांगुलीक माध्यमसँ वंगालक श्रेष्ठ मासिक 'प्रवासी'मे हिनका द्वारा प्रस्तुत हाफिजकृत रुवाइक अनुवाद १९२० वा १९१९ ई० दिसम्वर मासमे प्रकाशित भेलैक। ई भेल नजरुल एवं पवित्र गांगुलीक वीच स्थायी मित्रताक आधार।

१९२० ई०क प्रारम्भमे रेजीमेंट तोड़ि देल गेलैक। एकर पूर्व जनवरी मासमे नजरुल एक सप्ताहक अवकाश पर कलकत्ता आओर चुरुलिया आएल छलाह। कलकत्तामे प्रथम बेर हिनक भेँट मुजफ्फर अहमदसँ भेलैन्हि। अहमद नजरुलसँ अनुरोध कएलथिन्ह जे सेनासँ मुक्त भेला पर ई साहित्यक सेवा करथि। ठीक १९२० ई०क मार्च मासमे वंगाल रेजीमेंट तोड़ि देल गेलैक आ नजरुल स्थायी रूपेँ वंगाल चल अएलाह। माइक दर्शनार्थ किछु दिन लेल अपन गाम सेहो गेल छलाह। कलकत्तामे हिनक स्वागत शैलजानन्द द्वारा भेल। हिनक आवासक व्यवस्था भेल मुजफ्फर अहमदक संग ३२ ए, कॉलेज स्ट्रीट स्थित मकानक दोसर तल्ला पर। एही मकानमे 'मुस्लिम भारत' आओर 'मुसलमान साहित्य समिति'क कार्यालय छलैक। दुनूक प्रवंध-कर्त्ता लोकनि सेहो एतहि रहैत जाइत छलाह। ओहिकाल हिनका लोकनिक जीवनक केन्द्र छल इएह ३२ नं०क मकान। नजरुलो हिनका लोकनिक प्रिय सहचर भऽ गेलथिन्ह।

भूतपूर्व सैनिक होएवाक कारणेँ सरकारी नौकरी भेटवाक खूब संभावना छलैन्हि। सरकारी राजस्व विभागमे कोनो पदक हेतु साक्षात्कार लेल बजाओल सेहो गेलाह, किन्तु जँ १९१७ ई०मे उत्कट देशभक्तिसँ प्रेरित भऽ ई सेनामे भर्ती भेल छलाह तँ साम्राज्यवादी युद्धक अंत भेला पर सेहो ई अपन निश्चित आत्मतुष्ट आत्मकेन्द्रित जीवनमे नहि रहि सकलाह। कराँचीक सैनिक शिविरमे हिनका मध्य एशियाक सामंतवादी सत्ताक ध्वंस होयवाक आओर लाल सेनाक विजयाभियानक (१९१८-२० ई०) सूचना भेटि चुकल छलैन्हि।

साम्राज्यवादी शक्ति द्वारा हिजाज एवं अन्य मुसलमानी क्षेत्र सभक अपहरण कएल जएबाक कारणेँ भारतीय मुसलमानक बीच जे क्रोध-आक्रोश छलैक ई तकर समर्थन कएलन्हि। घृणास्पद रोलेट ऐक्ट (१९१९ ई०)क कारणेँ सम्पूर्ण भारत ब्रिटिश राजक विरोधी भऽ चुकल छल। गाँधीजी सत्याग्रहक गप चला चुकल छलाह। पंजाबक अत्याचार—ताहिपर जालियाँवाला बागक हत्याकांड (१३ अप्रैल १९१९ ई०)—बूझू राष्ट्रीय विद्रोह आओर संघर्षाग्निकेँ आओर अधिक प्रज्ज्वलित कऽ देने छलैक। भारतक हिन्दू आओर मुसलमानक हृदयमे समान रूपसँ जे विद्रोहाग्नि दह्यमान भऽ चुकल छलैक से की नजरुलक हृदयमे नहि धधकल होएतन्हि? एहि आगिक सवसँ बेसी धधरा बंगाल आओर कलकत्तामे उठल छलैक। नजरुल निश्चय क' चुकल छलाह जे ओ देशक स्वाधीनता एवं राष्ट्रीय साहित्यक सेवामे सपरि कऽ लागि जएताह—तेँ परिणाम जे हो। मित्रगण द्वारा हिनक निर्णयक स्वागत भेल। हुनका लोकनिकेँ साहित्यक क्षेत्रमे हिनकासँ बड़ पैघ आशा छलैन्हि। तेँ नजरुल सरकारी प्रस्तावकेँ लात मारि बड़ उत्साहक संग जातीय संघर्षमे कूदि पड़लाह। एहि समय नजरुल २१ वर्षक छलाह।

२. योद्धा एवं साहित्य-स्रष्टा : प्रथम स्फुरण

१९२० ई०मे नजरुल यौवनावस्थामे प्रवेश कएलन्हि। ओहिकाल हिनका मनमे छलैन्हि दू गोट संकल्प : स्वतंत्रता-संग्राममे सन्नद्ध जनसमुदायक पक्ष लेब आओर साहित्य-जगतमे विशिष्टताक संग यश प्राप्त करब। 'मुस्लिम भारत पत्रिका' बनल प्रकाशन-प्रधान मंच। मित्रवर्गक बीच एहि निर्णयसँ बड़ उत्साह छलैक आ सभसँ बेशी उत्साहित छलाह स्वयं कवि नजरुल इस्लाम। शान्तिपुर निवासी सुविख्यात मुस्लिम कवि मुजम्मल हक 'मुस्लिम भारत'क नामक लेल सम्पादक छलाह। वस्तुतः सम्पादन-कार्य करैत छलथिन्ह हिनक पुत्र जनाब अफजलुल हक। ३२, कॉलेज स्ट्रीटमे छलैक पत्रिकाक कार्यालय। नजरुल इस्लामक पहिल उपन्यास **बाँधनहारा**क प्रकाशनसँ 'मुस्लिम भारत'क प्रथम अंक (वैशाख १३१७ बंगाब्द अथवा अप्रैल १९२० ई०) छपल। पत्रशैलीमे रचित ई उपन्यास अनेक मास धरि क्रमशः प्रकाशित होइत रहलैक। एहिबीच नजरुलक अनेक नव ओ सशक्त कविता 'मुस्लिम भारत'क अतिरिक्त अन्य साहित्यिक पत्रिका सभमे छपऽ लागल छलैन्हि, यथा- 'सौगात', 'उपासना', 'बिजली' आदि। बंगाब्द १३२७ मध्य हिनक अधोलिखित रचना एहि पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल (मुजफ्फर अहमद, स्मृति-कथा, तृतीय संस्करण, पृ० ६०) :

१. बाँधनहारा (उपन्यास),
२. कुर्बानी (कविता),
३. बादल बरिसन (प्रतीक कथा),
४. बादल प्रातेर सौरभ (कविता),
५. बोधन (कविता),
६. मोहर्रम (कविता),
७. शत-इल-अरब (कविता) (मेसोपोटार्मियाक नदी युफ्रेटिसक अरबी नाम)।
८. गीत (तीन गोट),

९. गजल (हाफिजक अनुवाद),
१०. फतवा-इ-दोअज्जदोम (कविता),
११. विरह-विधुर (कविता)
१२. मरमी (गीत)
१३. स्नेह भीत (कविता)

एहिमेसँ किछु रचना ओहिकाल पाठकवर्गकेँ विस्मयविमुग्ध कऽ देने छलैक आओर सम्प्रतिओ कम उत्कृष्ट नहि मानल जाइछ। एहि नव कविक प्रायः सर्वत्र सोत्साह स्वागत भेल। एतेक तक जे 'बाँधनहारा' उपन्यासहुक प्रशंसा भेलैक जखन कि उपन्यासक लेल उपयुक्त प्रतिभाक हिनकामे अभाव छलैन्हि। नायक हवलदार क्वार्टर मास्टरक करांचीमे अर्जित अनुभवक तानी-भरनीसँ एकर कथापट बुनल गेल छैक। सेनामे स्वयं नजरुल अपनो तँ इएह छलाह। उपन्यासमे काव्यात्मकता, रोमांस आओर भावुकता भरल छैक। तथापि एकर प्रकाशनक्रमहिमे प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'नारायण'मे एकरा प्रसंग चर्चा भेल छलैक (भाद्र १३२७ वंगाब्द, अथवा अगस्त १९२० ई०)। 'नारायण'क संस्थापक एवं सम्पादक छलाह क्रमशः श्री चित्तरंजन दास एवं वारीन्द्र कुमार घोष। 'मुस्लिम भारत' तथा 'सौगात'मे नजरुलक जे रचना सभ प्रकाशित भेल छल, तकर साहित्यिक धरातल पर स्वीकृति पहिनहि भऽ चुकल छलैक। 'शत-इल-अरब'मे एक बंगाली सैनिक द्वारा इराक (बलिदानीक देश)क प्रति पराधीनताजन्य दुख-व्यथाक निवेदन भेलैक अछि' यद्यपि ई अपना कोटिक पहिल रचना छलैक, तथापि एहिमे देशभक्तिक प्रवहमान उज्ज्वल-उच्छल धारा देखबाक योग्य छैक। भाषा-शैलीक दृष्टिसँ एकर विशेषता छैक फारसी-अरबी शब्दावलीक सौन्दर्य एवं बंगलाक पदलालित्यक समन्वयसँ उत्पन्न प्रवाहमय प्राजंलता। एही भाँति 'मुहर्रम', 'बादल प्रातेर सौरभ' एवं अन्य रचना बड़ आकर्षक छलैक। मुसलमान-विषयक रचनाक प्रकाशन दिशि 'मुस्लिम भारत'क बेशी झुकाव छलैक। तेँ ई स्वाभाविक छलैक जे नजरुल एहि पत्रिकामे प्रकाशनार्थ 'मुहर्रम', 'कुर्बानी', 'फतवा-इ-दोअजदोम' सदृश रचना कएलन्हि। शीर्षकसँ स्पष्ट भऽ जएबाक चाही जे एहि सभ रचनाक विषय छलैक मुसलमानी धर्म एवं संस्कृतिसँ संबंधित पाबनि-तिहार। साहित्यिक दृष्टिसँ उत्कृष्ट रचना होएबाक संग-संग एहि रचना सभक दोसर महत्व सेहो छलैक।

संस्कृतक स्रोतसँ गृहीत विषयक रचनाक तुलनामे फारसी-अरबी स्रोतसँ

लेल गेल विषयपर आधारित रचना बंगलामे बड़ अल्प छलैक। एकर मुख्य कारण छलैक बंगला-साहित्यकार मध्य मुसलमान लेखकक संख्याक कम होएब एवं शिष्टजन द्वारा हुनका लोकनिक उपेक्षा। सामन्तकालीन भारतमे शिष्टजन द्वारा फारसी भाषाकेँ अधिमानता भेटैत छलैक, यथा यूरोपमे लेटिनकेँ। आब निश्चित रूपसँ नजरुल इस्लाम अरबी स्रोतसँ प्राप्त विषयकेँ बंगलामे साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त कराएब प्रारम्भ कएलन्हि आओर बंगालक हिन्दू वर्गमे एहि कोटिक रचनाक मर्मानुभूतिक प्रेरणा सेहो देलथिन्ह।

एहि लेल परिस्थिति सेहो अनुकूल छलैक। खिलाफत आन्दोलनक फल-स्वरूप हिन्दू-मुसलमान साम्राज्य-विरोधी धरातल पर एक दोसराक निकट आबि चुकल छलाह। दूनू सम्प्रदायक लोक मध्य एक दोसराक संस्कृति एवं धर्मसँ अवगत होएबाक उत्सुकता जाग्रत भऽ चुकल छलैक।

राष्ट्रीय एकता एवं स्वाधीनता संग्राममे सहायक सभ प्रकारक साहित्यिक सांस्कृतिक प्रयासक स्वागत करबा लेल दूनू पक्ष समुत्सुक छल। सितम्बर १९२० ई०मे असहयोग आन्दोलनक प्रस्ताव कलकत्तामे पास भऽ चुकल छलैक। बुझू जे नजरुलक इच्छानुसारहि जनमानस ओ लोक-चेतनाक निर्माण भऽ रहल छलैक। अण्डमन कारावाससँ आएल क्रान्तिकारी वर्गक वारीन्द्र कुमार घोष एवं अविनाश भट्टाचार्य, संगीतज्ञ नलिनीकान्त सरकार एवं अन्य उग्र क्रान्तिकारी जनक मैत्रीपूर्ण संपर्कमे ई आबए लागल छलाह। 'बिजली'क साहित्यिक-राजनीतिक मण्डलीमे नजरुलक हार्दिक स्वागत भेल आ स्वागतक कारण छल हिनक साहित्यिक साधना, उग्र वैप्लविक विचार-धारा एवं हृदयक निश्छलता। वस्तुतः नजरुल बंगालक एक एहन मुसलमान संतान भेलाह, जनिका भविष्यमे राष्ट्रीय एकताक संवाहक बूझल गेल।

बड़ अल्पकालमे विवेकशील पाठक एवं सम्पादक गणक मध्य नजरुल समादृत भऽ गेलाह। उग्र वैप्लविक विचारसँ ओतप्रोत समाचारपत्र तथा जनसमुदाय विशेष रूपेँ हिनक आदर कएलक। 'मुस्लिम भारत' आ 'सौगात' सदृश मुसलमानी साहित्यिक पत्रिकामे तँ हिनक रचना प्रकाशित होइतहिँ छल, 'उपासना' आओर 'भारती' आदि साहित्यिक पत्र सेहो हिनक रचना छापऽ लागल। वारीन्द्र कुमारक सद्यःप्रकाशित 'बिजली' नव एवं उग्र वैप्लविक विचारक रचना छपैत छल। एहि साप्ताहिकमे रूस मध्य

होइत समाजवादी प्रयोगक विषयक सहानुभूतिपूर्ण समीक्षा छपैत छलैक। 'बिजली'मे हिनक स्वागत होएब स्वाभाविक छल। ई अनवरत रूपसँ गद्य आओर पद्य दुनू कोटिक रचना करऽ लगलाह। किन्तु हिनक मूलाधार छल कविता। गीतक रचना एवं गान दुनूमे हिनक बड़ रुचि रहैत छल। कलकत्ताक व्यापक लोकमध्य हिनक लोकप्रियताक कारण छल हिनक स्वरचित गीत आओर कवीन्द्रक गीतक गायन। एक गायकक रूपमे हिनक प्रभाव आओर अधिक व्यापक छल। जाहि लोकक बीच ई रहैत छलाह तकरा प्रति आत्मीयताक अनुभव करैत छलाह। टैगोर-भक्त 'भारती' मण्डलक आधुनिक वैप्लविक राजनीतिक विचारक साहित्यकारक बीच हिनक खूब समादर भेल। एहि मण्डलमे सम्मिलित छलाह मणिलाल गांगुली, प्रेमकुमार आतर्थी, मोहितलाल मजुमदार एवं कवि सत्येन्द्र नाथ दत्त, जनिका रवीन्द्रनाथक पश्चात् बंगला कविक रूपमे द्वितीय स्थान प्राप्त छलैन्हि। मोहितलालक स्वीकृति छल नव भाव एवं रीतिक कविक रूपमे। मोहितबाबू नजरुलकेँ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बुझलैन्हि। हिनकासँ साक्षात् परिचय होएबाक पूर्वहि (मुस्लम भारतमे) ई नजरुलकेँ प्रतिभावान् कवि घोषित कऽ चुकल छलथिन्ह। ओहिमे नजरुलक दू गोट कविताक विशेष चर्चा छलैक। मोहितबाबूकेँ विश्वास छलैन्हि जे ई अपन प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति-शैली तथा अधिकारपूर्ण शब्द-योजना, छन्द एवं लयक भव्य प्रयोग द्वारा बंगलाक काव्यकेँ विशिष्ट शक्ति एवं स्वरूप प्रदान करताह। एहि पत्रक दृष्टिमे स्वातंत्र्यसंग्राममे शिक्षित समुदायक अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण भूमिका सामान्य जनसमुदायक बूझल गेलैक। अपन सशक्त लेखनी, निश्चित समाचार-संचयन-पटुता एवं सफल सम्पादन-कलाक प्रतापेँ नजरुल 'नवयुग'क मूल पूँजी बूझल जाइत छलाह। हिनक सहज उत्साह-उत्फुल्लनव युतलल,ग'क आवेगपूर्ण सम्पादकीय टिप्पणीकेँ सरसता एवं संतुलन प्रदान करैत छलैक। 'नवयुग' कार्यालयक समीपताकेँ ध्यानमे राखि दुनू मित्र टर्नर स्ट्रीटमे रहऽ लगलाह। नजरुलक प्रसादेँ ओ स्थान सभ प्रकारक साहित्यिक एवं उग्र वैप्लविक राजनीतिक विचारधाराक लोकक अड्डा बनि गेल। 'नवयुग' हिन्दू एवं मुसलमान दुनू समुदायक बीच समान रूपेँ लोकप्रिय छल। पत्रक साम्राज्यविरोधी उग्र विचार जनभावनाक अनुकूल छलैक। मुदा इएह लोकप्रियता एवं सफलता अनेक समस्याक कारण भऽ गेलैक। तत्कालीन सरकार ओ पुलिस द्वारा पत्रमे प्रकाशित लेखपर आपत्ति होमए लगलैक। पत्रक स्वामी फजलुल हक जँ सम्पादनकार्यमे हस्तक्षेप नहि करैत छलथिन्ह

Indian I... ...anco 117174

तँ अर्थादिक चिन्तासँ सेहो मुक्त रहैत छलाह। घोर राष्ट्रवादी एवं जन-साधारणक प्रति ममतापूर्ण रहलो उत्तर हक महोदय समकालीन राजनीतिक गतिविधिसँ सामंजस्य स्थापित नहि कऽ रहल छलाह। जनता गाँधीक आगू-पाछू हिनका द्वारा प्रस्तावित असहयोग आन्दोलनक समर्थनमे संगठित होमए लागल छल। स्मरणीय जे 'नवयुग'क प्रकाशन २० जुलाइ, १९२० ई० सँ प्रारम्भ भऽ चुकल छलैक। कलकत्तामे अगस्तमे आयोजित कांग्रेसक विशेष अधिवेशनमे असहयोग संबंधी प्रस्ताव स्वीकृत भेलैक, जाहिमे सम्मिलित छलैक कचहरी, स्कूल, कॉलेज आदिक बहिष्कार। फजलुल हक स्वयं ओकील छलाह। ओ एहि नीतिक समर्थन नहि कएलथिन्ह। मुदा 'नवयुग'क जमानतिक जप्ती लऽ कऽ ओ प्रसन्नो नहि छलाह। तथापि फेर जमानतिक रुपैयाक लेल प्रयत्नशील सेहो नहि भेलाह। किछु दिन धरि पत्रक प्रकाशन बन्द भऽ गेलैक। युवा सम्पादकद्वयकेँ हक महोदयक गाम चखार बारिसल अएबाक निमंत्रण भेटलैन्हि। एहन आशा कएल गेलैक जे मैत्रीपूर्ण वार्तालापक माध्यमसँ दुनू युवालेखक हक महोदयक राजनीतिक विचारधाराक समीप अओताह। मुदा ई दुनू तँ छलाह दृढ़ विचारक। कोनो तरहेँ 'नवयुग'क प्रकाशन पुनः प्रारंभ भेल आ एहिबेर पत्र एवं हक महोदयक बीच मतवैभिन्य आओर बढ़ि गेल। १९२० ई०क दिसम्बर मासमे नजरुल 'नवयुग'सँ सहसा पृथक भऽ गेलाह आ तकरा किछु दिनक पश्चात् अहमद सेहो। पत्रकारिताक पाछू अपन प्रतिभा नष्ट करबाक अपेक्षा साहित्यसृजन एवं विश्रामक उद्देश्यसँ नजरुल देवघर चल अएलाह। पूर्वमे एहन व्यवस्था भेल छलैक जे नजरुल जे किछु लिखताह तकरा छपबाक अधिकारक प्रतिदानस्वरूप 'मुस्लिम भारत' हिनका प्रतिमास १००रु० देतैन्हि। मुदा ई व्यवस्था नहि चलि सकलैक। देवघरमे नजरुल नवागंतुक छलाह। 'मुस्लिम भारत'सँ कोनो राशि नहि अएलैन्हि। एहि स्थितिमे प्रायः दू मासक बाद नजरुलकेँ 'नवयुग'मे किछु दिनक हेतु घुरि आवऽ पड़लैन्हि। ई कलकत्ता चल अएलाह।

देवघरमे हिनक लघुकालीन वास दू बात लऽ कऽ ध्यानमे रखबाक योग्य अछि। प्रथम तँ ई जे ई तेहन ने सरल ओ असतर्क छलाह जे कोनो नव स्थानमे, जतए केओ परिचित व्यक्ति नहि हो, ततए आवास एवं भोजनादिक खर्चाक व्यवस्था विनु कएनहि विदा भऽ गेलाह। दोसर ई जे एक 'बाँधनहारा' वा दू 'गीत'क अतिरिक्त, खाहे कारण जे हो, कोनो महत्वपूर्ण रचना करबामे नजरुल असमर्थ रहलाह। ओतऽ अहमद साहेबकेँ हिनक दुर्गतिक कोनो तरहेँ पता लागि गेलैन्हि। ओ स्वयं देवघर जा' कऽ हिनका कलकत्ता लऽ अनलथिन्ह।

जँ कोनो गलत धारणा हो तँ ओकर निवारणार्थ ज्ञातव्य जे नजरुलक समान अहमद केवल साम्राज्यविरोधी एवं जदूरवर्गक हितक समर्थक छलाह अहमदक आत्मकथास सेहो स्पष्ट भऽ जाइछ जे १९२० ई० आओर १९२१ ई०क प्रारम्भ तक हिनका साम्यवादी सभसँ कोनो संपर्क नहि छलैन्हि। 'नवयुग'क रचनामे जे वर्गभावनाक संकेत भेटैछ, से पृथक् बात थिक।

अंतिम रूपसँ 'नवयुग' छोड़लाक बाद नजरुल एक एहन दुस्साहसपूर्ण कर्म कएलन्हि जे वास्तवमे बड़ अपढँगाह ओ अरुचिपूर्ण छलैक। अली अकबर खान नामक एक व्यक्ति छलाह, जे बालपोथीक प्रकाशक छलाह, हिनकासं एक सुन्दर रचना 'लीचूचोर' हथिया लेलन्हि। अकबर अली अपन योजनानुसार हिनकासँ आत्मीयता बढ़ा कऽ हिनका अपन गाम दौलतपुर चलबाक लेल राजी कऽ लेलन्हि। दौलतपुर यात्राक क्रममे ई लोकनि चारि-पाँच दिनक लेल कोमिल्लामे रुकलाह। अली अकबर खान इन्द्रकुमार बाबूक पुत्र वीरेन्द्र कुमारक सहपाठी छलाह। मित्रक मित्र होएबाक कारणेँ सेनगुप्त परिवारमे नजरुलक नीक जकाँ स्वागत-सत्कार भेलैन्हि। ई परिवार मध्यवित्त वर्गक, खूब वेशी धनिक नहि, मुदा सुशिक्षित ओ उदार विचारक तथा साहित्य-संगीतक अनुरागी छल। नजरुलक विशेष रूपेँ स्वागतक कारण ईहो भेल। गृहपत्नी (इन्द्रबाबूक धर्मपत्नी)—विराज सुन्दरी देवी-वेश आकर्षक व्यक्तित्वक स्त्री छलीह। बंगाली समाज जे एतेक आनन्ददायक संस्था बनल जाइछ, ताहिमे विराजसुन्दरी देवी सदृश महिला सभक अल्प योगदान नहि छैन्हि। हिनक मातृवत् स्नेह सभक हृदय जीति लेने छल आओर सभ हिनका माए जकाँ मानऽ लागल छल। निश्छल ओ निष्कपटहृदय नजरुल एहि शुद्ध स्नेहक प्रतिदान लेल प्रस्तुते छलाह। अल्पकालहिमे ई विराजसुन्दरी देवीकेँ 'माँ' आओर हुनक ननदि गिरिबाला देवीकेँ 'मासी माँ' कहऽ लागलथिन्ह। गिरिबाला देवी विधवा छलीह। हुनका प्रायः तेरह वर्षक प्रमिला नामक एक मात्र संतान छलैन्हि। एकर दुलारक नाम छलैक 'दुली' वा 'दोलन'। एक सप्ताहक अभ्यंतरहि अनायास सहज रूपेँ मैत्री संबंध स्थापित भऽ गेलैक। ओहिकाल ई ककरहु आभास नहि छलैक जे एहि संबंधमे भविष्यक लेल अमित संभावना निहित छैक। आगू चलि कऽ नजरुल प्रमिला संग परिणय-सूत्रमे आबद्ध भेलाह। विवाहक दिन धरि ककरो एहि बातक कल्पना नहि छलैक, कारण जे प्रमिला ओहिकाल मात्र १३ वर्षक बालिका छलि।

अली अकबर खानक संग नजरुल आब दौलतपुरक हेतु बिदा भेलाह।

दू मासक भीतर नजरुलक कलकत्ता स्थित मित्रगण एक आकस्मिक निमन्त्रण-पत्र पावि विस्मित भऽ उठलाह। ई निमंत्रण-पत्र छलैक दौलतपुरमे नजरुलक विवाह होएबाक। आ ई विवाह १९२१ ई०क जून मासमे होएबाक छलैक अली अकबरक विधवा बहिन नर्गिस बेगम (सैदा खातून)क संग। कवि-लोकनिक चरित्र विचित्र होइत छैन्हि। चट मंगनी पट विवाह। शिक्षा-दीक्षा एवं स्वभावसँ नजरुल पूर्ण कवि छलाहे। कोमिल्लाक सेनगुप्त परिवारक नवयुवक आओर वयस्क सभ सदस्यकेँ ई अपन संबंधी बूझि दौलतपुर आवि विवाह-समारोहमे सम्मिलित होएबाक लेल राजी कऽ लेलैन्हि। मुदा भवितव्य की छलैक से के जानए। विवाहक काल निकट अएलापर नजरुलकेँ अली अकबरक प्रपंचक आभास भेटलैन्हि। एहिमे संदेह नहि जे वधू नजरुल दिशि आकर्षित छलीह, मुदा ओ छलीह अशिक्षित निठट्ठ गमारि। हुनकामे नहि छल कोनो सामाजिक गुण आओर नहि व्यक्तित्वक विशेषता। एहि सभ कारणेँ नजरुलक मन तँ पहिनहिसँ विरक्त छल : विवाहक दिन ओ देखलैन्हि जे शर्तनामामे अली अकबर एहन विषय सभक समावेश कएने जाइत छथि, जाहिसँ ई हुनका हाथक कठपुतरी भऽ कऽ रहितथि। आत्माभिमानी नजरुलक हेतु एहि तरहक शर्त स्वीकार करब असंभव छल। ई शर्तनामा पर हस्ताक्षर नहि कएलन्हि। तेँ ई विवाह नियमतः आओर वस्तुतः कोनो रूपेँ सम्पन्न नहि भऽ सकल। नजरुल रुष्ट भऽ दौलतपुरसँ कोमिल्ला चल अएलाह। एहि प्रसंगसँ दुखी ओ क्षुब्ध सेनगुप्त परिवार सेहो दोसर दिन पछोड़ धएने पहुँचल।

एहि भाँति एक दुखद प्रसंगक अन्त भेल, जे एखनहु धरि रहस्य बनल अछि। हारल बाजी जितबाक उद्देश्यसँ अली अकबर कलकत्तामे नजरुलसँ एक बेर आओर भेँट कएलन्हि मुदा असफल रहलाह। आब नजरुलकेँ एहिसँ कोनो मतलब नहि, तथापि एहि प्रसंग शंका बनल रहलैक। शंका ई जे की नजरुलक दौलतपुरसँ बिदा होएबाक पूर्व विवाह सम्पन्न नहि भेलैक वा भऽ गेल छलैक। मुजफ्फर अहमदक मतानुसार विवाह सम्पन्न नहि भेल छलैक। किन्तु किछु संदेहास्पद प्रमाणक आधार पर अली अकबर लोककेँ ई बुझएबाक प्रयास कएलन्हि जे, हुँ, विवाह भऽ चुकल छलैक। तथापि ई विश्वास करबाक कारण अवश्य छैक जे विवाह पक्का होएबाक पूर्व वर-वधूक मध्य पारस्परिक कोमल भावना उत्पन्न भेल छल। बूझल जाइछ जे नजरुल इस्लामसँ साक्षात्कारक समय नर्गिस बेगम पूर्णयौवना छलीह। नर्गिसक

आकर्षणमे नजरुल एहि भाँति प्रेमाभिभूत भऽ गेलाह जे विवाह-प्रस्तावकेँ हृदयसँ स्वीकार कऽ लेलैन्हि ।

अंती अकबर अहि अवसरसँ लाभ उठावऽ चाहलैन्हि । अकबरक योजना एवं उद्देश्य छल जे नजरुलकेँ विवाहक शर्तमे बान्हि अपना मुट्ठीमे कऽ ली, जाहिसँ प्रकाशनव्यवसायक हेतु सदाक लेल भाड़ाक लेखक भेटि जाए। नजरुल शीघ्रे एहि मायाजालकेँ तोड़ि बाहर भऽ गेलाह । मुदा नर्गिस एहिसँ निस्संग नहि रहि सकलीह, जे बादक घटनासँ स्पष्ट भऽ जाइछ । ओ बहुत दिन धरि विवाह नहि कएलन्हि आओर अनेक बेर पत्राचार द्वारा नजरुलसँ सम्पर्क स्थापित करबाक प्रयास कएलन्हि । नजरुल १९३७ई०मे संभवतः पहिल जुलाइक प्रथम ओ अंतिम अस्वीकारात्मक पत्रक अतिरिक्त कोनो दोसर पत्रक जवाब नहि देलथिन्ह । एहि अस्वीकृतिक संग एक आओर बात उल्लेख्य छैक जे ओहीं तिथिकेँ एच० एम० भी० कम्पनीक रेकर्डक वास्ते नजरुल एक गीत प्रस्तुत कएने छलाह । गीत एहि भाँति छैक :—

जार हात दीए माला नीते पारो नाइ
केनो मने राखो तारे
भूले जाओ तारे, भूले जाओ एकेबारे

[जकर हाथसँ अहाँ माला नहि लए सकैत छी तकरा किएक स्मरण करैत छी ? तकरा बिसरि जाउ, सदाक लेल बिसरि जाउ ।]

उपरिनिर्दिष्ट पत्र एवं गीत एहि विषयमे निर्णयात्मक साक्ष्य बुझना जाइछ । गेल वस्तु फेर नहि बहुरल । किछु दिनक पश्चात् बेगमकेँ योग्य पति प्राप्त भलैन्हि आओर ओ शान्तिपूर्ण वैवाहिक जीवन व्यतीत करऽ लगलीह । ई प्रसंग नीक जकाँ प्रारंभ होएबासँ पहिनहि समाप्त भऽ गेल मुदा छोड़ि देलक अपना पाछू एक चिन्त्य एवं निराधार अपवाद ओ विवाद ।

दौलतपुरक एहि विफल प्रसंगसँ बूझू जे नजरुलक काव्य एवं संगीतात्मक प्रतिभाक स्रोत-द्वार उन्मुक्त भऽ गेल । क्षतिपूर्त्यर्थ आहत हृदयक ई सहज साधन छल । १९२१ ई०क १८ जूनसँ ६ जुलाइ धरि कोमिल्लामे ई सेनगुप्त-परिवारक स्नेहच्छायामे रहलाह । एहि अवधिकेँ सृजनात्मक दृष्टिसँ अजस्र प्रवाहक काल मानल गेलैक अछि । विभिन्न प्रेरणासँ उद्भूत अनेक कविताक रचना एही अवधिमे भेलैक । १९२१ ई०क ई काल चित्तरंजन दासक नेतृत्वमे समस्त बंगाल, विशेष कऽ कोमिल्ला, असहयोग आन्दोलनसँ उद्वेलित छल ।

एकर प्रतिक्रिया नजरुलमे द्रष्टव्य अछि। ओहिकाल अनेक राजनीतिक गीत लिखल गेल छलैक, जाहिमे सँ एक प्रसिद्ध गीत छैक 'मरण-वरण'।

एकर प्रथम पंक्ति छैक—**'एसो, एसो, एसो ओगो मरण'**। अभीष्ट छलैक लोककेँ निर्भयतापूर्वक मृत्युक वरण करबालेल प्रेरणा प्रदान करब।

एहि सभ कविताक विषय राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवनसँ संबंधित छलैक। एकर समानान्तर दोसरो लय-सुर पर रचित कविता छलैक, जे पछाति 'पूबेर हावा'—पोथीमे संकलित भेलैक। व्यक्तिगत अनुभूति एवं उल्लाससँ परिपूर्ण ई कविता सभ बड़ सरस-मधुर छैक, यथा—'दुपुर अभिसार :'—

'आस कोथा सेइ एकला ओ तुइ असल बैशाखे

[एहि असल वैशाखमे एकसर कतए जाइत छी अओ हमर प्रियतम।]

अथवा 'रश्मिडोर' जे सेनगुप्त परिवारक धीयापुताकेँ संबोधित कऽ लिखल गेल छैक :—

तोरा कोथा हते केमने एसे मणिमालार मतो
आमार कंठे जराली।

[तोँ सभ कतएसँ कोना आबि हमारा कंठमे मणिमाला जकाँ लटकि गेलह ?]

उक्त कविता सभमे कविक तृषित हृदय दिशि संकेत भेटैछ—ओहि तृषित हृदय दिशि जे छैक हताश-निराश आओर जकरा मात्र सेनगुप्त परिवारसँ स्नेहवारि भेटि रहल छलैक। दौलतपुर-काण्डक बाद नजरुलक हृदय आत्मीयता एवं स्नेहवारि लेल बड़ तृषित छल। 'स्नेहातुर' शीर्षक कवितामे एतादृश भावनाक स्वीकारोक्ति भेलैक अछि। ई कविता संबोधित भेल छैक घरक अधिष्ठात्री देवीक प्रति जनिक स्नेहजलसँ नजरुलक रिक्त हृदय आप्लावित छल। एही प्रकारक संकेत भेटैछ एक अन्य दीर्घ कवितामे, जे गृहपतीक छोट कन्याक मृत्युपर 'अभिमानिनि' शीर्षकसँ लिखल गेल छलैक। एकरा विपरीत एक-आध एहनो रचना छैक, जाहिमे आनन्द एवं उल्लासहुक अभिव्यक्ति भेलैक अछि। एहि भाँतिक 'पुलक' शीर्षक कवितामे प्रकृतिक वैविध्यपूर्ण रूप-रंगक आस्वादनजन्य आनन्दक वर्णन भेल छैक; संगहि एहि कविताक द्वारा नजरुलक दृश्य-श्रव्यानुभूतिक सामंजस्यक परिचय भेटि जाइछ। एहिमेसँ अधिकांश गीत एवं कविता आगू चलि कऽ

रचित अन्य कविताक संग 'पूवेर हावा' ग्रन्थमे संकलित भेलैक। ओना तँ ई रचना सभ वंगला पत्र-पत्रिका सभमे पहिनहि (१९२१ ई०) प्रकाशित भऽ चुकल छलैक जखन कि नजरुल अहमदक संग कलकत्ता आपस आवि गेल छलाह।

१९२१ ई० भारतवर्ष एवं वंगालक हेतु उत्तेजनपूर्ण काल छलैक। किछु अत्यंत आत्मकेन्द्रित व्यक्तिकेँ छाड़ि सामान्यतः केओ ओहि स्थितिमे अपनहिमे मगन नहि रहि सकैत छल। आओर ई तँ बूझले अछि जे नजरुल प्रकृतितः एहि कोटिक लोक नहि छलाह। कोमिल्ला एवं दौलतपुरक अप्रिय प्रसंगजन्य मनोभावसँ बहुत-किछु ई मुक्त भऽ चुकल छलाह। एकर श्रेय एक दिशि जँ सेनगुप्त-परिवारक स्निग्ध सहानुभूतिकेँ छलैक तँ दोसर दिशि ओहि राजनीतिक तीव्र तरंगकेँ, जे पूर्व वंगाल स्थित कोमिल्ला तककेँ आप्लावित-परिप्लावित कऽ चुकल छलैक। १९२१ ई० क जुलाइ मासमे कलकत्ता घुरला पर नजरुल पुनः अपनाकेँ पूर्वपरिचित सामाजिक जीवन, राजनीतिक उथल-पुथल, साहित्यिक क्रियाकलाप, संगीत-गोष्ठी एवं अड्डा (जे वंगलाक जीवनक एक विलक्षण पक्ष थिक)मे सहज रूपेँ लीन कऽ देलैन्हि। मुदा एखनहु धरि जीविकोपार्जनक कोनो निश्चित व्यवस्था नहि छलैन्हि। एहि समस्याक समाधानार्थ अहमद एक लिमिटेड कम्पनी प्रारंभ करबाक लेल प्रयत्नशील छलाह। एहि कम्पनीसँ प्राप्त आयसँ एक दैनिक पत्र प्रकाशित करबाक नियार छलैन्हि। किन्तु से भऽ नहि सकलैक। तथापि नजरुलक काव्य-संगीतक क्रम चलिते रहल।

●

३. विद्रोही कवि

'स्वराज्यवर्ष' (१९२१ ई०) नवम्बर-दिसम्बरमे चरमोत्कर्ष पर छलैक। दस दिसम्बरकेँ चित्तरंजन दासकेँ कारावास दऽ देल गेलैन्हि। इएह हाल भेलैन्हि प्रायः सभ कांग्रेसी नेता एवं आन्दोलनमे सक्रिय रूपेण भाग लेनिहारक। प्रायः सभ नेता ओ कार्यकर्त्ताकेँ कार्यक्षेत्रसँ (कारावास दऽ) हटा लेल गेल छलैन्हि। देशवन्धुक साप्ताहिक 'वंगलार कथा'क कार्यभार आव वासंती देवीकेँ देल गेलैन्हि। श्री एवं श्रीमती दास दुनू गोटे तथा हुनक निकट संपर्कमे रहनिहार राजनीतिक व्यक्ति सभ नव युगक नव कविक रूपमे नजरुल इस्लामक मानदान करैत छलथिन्ह। स्वयं रवीन्द्रनाथ सेहो स्वदेशी आन्दोलनकालक कवि वूझल जाइत छलाह। ज्ञातव्य जे वंगालक लोककेँ तावत् संतोष नहि होइत छैन्हि, यावत् कोनो महत्वपूर्ण आन्दोलनकेँ अपन कवि नहि भेटि जाइत छैक। नजरुल दिशि ध्यान गेलापर वासन्ती देवी हुनकासँ 'वंगलार कथा'मे अपन रचना देवाक हेतु आग्रह कएलथिन्ह। नजरुल द्वारा ई आग्रह वड़ प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार भेल। ओ तँ स्वयं देशवन्धुक प्रशंसक छलाह। जहिना अधिकांश वंगवासी देशवन्धुक निश्छल त्यागसँ प्रोत्साहित छलाह, तहिना नजरुल इस्लामो छलाह। तेँ 'वंगलार कथा'क लेल नजरुल तत्कालीन संग्रामोन्मुख मनोभावक अभिव्यंजक आन्दोलनसँ संवंधित एक अमर गीत रचलैन्हि :—

कारार ओइ लौह-कपाट
भेँगे फेल कर रे लोपाट
रक्त जमात
सिकल-पुजार पाषाण-वेदी।

[वन्दीगृहक एहि लौहकपाटकेँ तोड़ि वलिदानक देवीक रक्तरंजित पाषाण-वेदीकेँ ढाहि-ढनमना दिअऽ]

राष्ट्रीय आन्दोलनक ई प्रथम महत्वपूर्ण गीत छलैक। ई गीत पूर्वक स्वदेशी गीत सभसँ किछु वेशी प्रखर स्वरक छलैक तथा नजरुल द्वारा

भविष्यमे रचित होमएवाला गीत सभक पुरोगामी सेहो छलैक। आह्वान-गीतक रूपमे लय, शब्दविन्यास एवं सामान्य प्रेषणीयताक दृष्टिसँ एकर निस्संदेह बड़ प्रभाव पड़लैक। एहि कवितापर प्रतिबंध लागव स्वाभाविक छलैक, किन्तु राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-संग्रामक सम्पूर्ण अवधिमे १९४७ ई० धरि ई गीत जनता द्वारा विभिन्न स्थान पर गाओल जाइत रहलैक। वासन्ती देवी तुरत नजरुलकेँ अपना आवास पर निमंत्रित कएलथिन्ह। अतिथि-सत्कारक लेल विख्यात दास-परिवारक स्वागत-सत्कारक संग संग हिनका स्नेहपूर्ण आशीर्वादक प्राप्ति भेलैन्हि। ई बात नजरुलकेँ आजीवन स्मरण रहलैन्हि, जे 'चित्तनामा' रचनासँ प्रमाणित होइछ।

१९२१ ई०क अंतिम काल बड़ उत्तेजनापूर्ण छलैक आओर ई आशापूर्ण राष्ट्रव्यापी उत्थानक चेतना नजरुल सदृश व्यक्तिक मनोनुकूल सेहो छलैक। मित्र ओ सहवासी मुजफ्फर अहमदक साक्ष्यानुसार १९२१ ई०क दिसम्बर मासक अंतिम सप्ताहमे नजरुल कोनो रातिक पछिला पहर किछु लिखि रहल छलाह। संभवतः ओ छलैक एक खूब दीर्घ कविता। दोसर दिन प्रातःकाल उठितहिँ नजरुल मित्रकेँ ई रचना पढ़ि कऽ सुनओलन्हि। रचनाक शीर्षक छलैक 'विद्रोही'।

'बलो बीर,
बलो उन्नत मम शीर।'

[बाजह, हे वीर, बाजह; उन्नत अछि हमर सिर]

एही भाँति छैक आगूक पंक्ति। एहि कविताक श्रेष्ठता एवं विलक्षणताक विषय स्वयं नजरुलकेँ बड़ विश्वास छलैन्हि। एकर प्रकाशनमे तँ कोनो तरहक संदेह नहि छलैक किन्तु ई चिन्ता धरि अवश्य छलैक जे प्रकाशनमे विलम्ब नहि हो। एहि गीतकेँ छापबाक प्रथम अधिकार छलैक 'मुस्लिम भारत'केँ, किएक तँ ओ नजरुलक अपन प्रकाशन-मंच छलैन्हि। मुदा कुसंयोगात् ई छलैक मासिक पत्र आओर एकर प्रकाशन सेहो नियमित नहि छलैक। एहि पत्रमे 'विद्रोही'क प्रकाशनक अर्थ होइतैक विलम्ब। स्वयं कवि एवं हुनक मित्रवर्ग दुनूमे केओ एहि विलम्ब लेल प्रस्तुत नहि छलाह। तेँ निश्चय भेलैक जे 'मुस्लिम भारत' समयक सुविधानुसार एकरा छापय, आ से होएबो कएलैक। एहि बीच वारीन्द्र कुमार घोषक साप्ताहिक 'बिजली' दिशिसँ 'विद्रोही'केँ छपबाक अनुमतिक याचना भेलैक। 'विद्रोही'केँ सर्व-प्रथम (२२ पूस, १३२८ बंगाब्द; जनवरी ६, १९२२ ई०) छपबाक श्रेय ई

सासाहिक प्राप्त कएलक। बंगालक पाठक-समुदायकेँ ई कविता झंझावात-जेकाँ आलोड़ित-विलोड़ित कऽ देलकैक। एहि कविताक कारणेँ 'बिजली'क ओहि अंकक ततबा ने माँग भेलैक जे ओकर पुनर्मुद्रण करऽ पड़लैक। कहल जाइछ जे 'बिजली'क ओ अंक पबितहिँ नजरुल आनन्दोल्लासमे अपना 'गुरुदेव'केँ ओ गीत पढ़ि सुनएबाक हेतु जोड़ासाकोँ दौड़ल छलाह। 'गुरुदेव' कवितापाठ सुनि अभिभूत भऽ नजरुलकेँ आशीर्वाद एवं शुभकामना प्रदान कएलथिन्ह।[1] एहिमे रंचमात्रो संदेह नहि जे 'विद्रोही'क प्रकाशनसँ नजरुल सहसा लब्धप्रसिद्धि भऽ गेलाह।

'विद्रोही' एक श्रेष्ठ रचना थिक, मुदा दोषहीन नहि। ओहू काल पाठक-वर्गकेँ एहन अनुभव भेल छलैन्हि आओर संप्रतिओ नजरुलक प्रशंसक एहि बातकेँ स्वीकार करैत छथि।

किन्तु एहि दोषक कोनो विशेष अर्थ नहि छलैक, कारण जे 'विद्रोही'क प्रकाशन बंगालक साहित्यिक एवं राजनीतिक जीवनमे एक विशिष्ट घटना बूझल गेलैक। ज्ञातव्य अछि जे विद्रोहक चेतना तँ ओहि काल सम्पूर्ण वातावरणमे व्याप्त छलैक। तेँ विद्रोही लोकक एकदम ठीक प्रतीक्षित कविता छलैक आओर नजरुल बूझल गेलाह एकर उपयुक्त कवि ओ व्यक्ति। स्वयं नजरुलक इएह मनोदशा छलैन्हि—एक विद्रोही सभ भाँतिक बंधनकेँ तोड़बाक लेल व्यग्र आओर स्वाधीनताक लेल उद्विग्न। आत्माक मुक्ति लेल ई अत्युत्सुक छलाह, जाहिसँ ओकर प्रगति ओ विकास संभव हो। व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय स्वाधीनताक समविन्दुक एक अस्पष्ट आभास तँ नजरुलकेँ छलैन्हि (यथा मानवक अधिकारमे), बौद्धिक धरातलपर एतद्विषयक स्पष्ट ज्ञान हुनका नहि छलैन्हि। ओहि समय एकर ज्ञान प्रायः ककरहु नहि छलैक। सभ एक भाँतिक रहस्यपूर्ण बौद्धिक भ्रममे पड़ल छल। तथापि ई तँ स्वीकार करहि पड़त जे सभ एक मूलभूत स्थिर लक्ष्य तथा निश्छल भावात्मक

---

१. जँ ई बात सत्य तँ तिथि लऽ कऽ किंचित् भ्रम उत्पन्न भऽ जाइछ, कारण जे ओहि साल २१ पूस वं० वा जनवरी ४, १९२२ ई०केँ रवीन्द्रनाथ शान्तिनिकेतन लौटि कऽ 'मुक्तधारा' लिखबामे संलग्न छलाह। एहि बातमे संदेह नहि जे कविकेँ रवीन्द्रनाथक दर्शन एवं शुभकामना भेटल छलैन्हि, मुदा उक्त तिथि एवं अवसर पर नहि (संदर्भ —प्रभात कुमार मुखोपाध्याय—रवीन्द्रजीवनी, खण्ड ३, पृ० २१; १३५९ वंगाब्द; मुजफ्फर अहमद स्मृतिकथा, पृ० २३८१)

उल्लास—अर्थात् कोनो भाँति स्वराज्यक प्राप्तिसँ अभिभूत छलाह। एक स्पष्ट साहित्यिक स्वरूपक अभाव रहलो उत्तर 'विद्रोही' जनताक कविता भेल एवं नजरुल जनताक कवि भेलाह। आ' सभसँ महत्वपूर्ण बात तँ ई भेलैक जे एहि कविताक प्रकाशनक संग नजरुलक आत्माभिव्यक्तिक मार्ग मुक्त एवं प्रशस्त भऽ गेलैन्हि।

'विद्रोही' क प्रकाशनसँ वंगवासी जनसमुदायकेँ तँ अपन कविक प्राप्ति भऽ गेलैक किन्तु नजरुल भऽ गेलाह वंचित अपन एक घनिष्ठ मित्रसँ। एहि प्रसंगक उल्लेख एतहि अपेक्षिक बुझना जाइछ।

'विद्रोही' कविता पढ़िकऽ मोहितलाल मजुमदार रुष्ट भऽ गेलाह। हुनक आरोप छलैन्हि जे ई रचना हुनक गद्य-लेख 'आमि'क कुशल साहित्यिक चौरकर्म थिक। 'आमि'क पाठ अपन कनिष्ठ प्रियमित्र नजरुलक समक्ष ओ कोनो समय पहिने कऽ चुकल छलाह। मोहितबाबूकेँ पूर्ण श्रेय दैत एहि ठाम ई कहि देव उचित थिक जे हुनक ई आरोप नितान्त काल्पनिक आओर निराधार छलैन्हि। जँ ई बात स्वीकारो कऽ लेल जाए जे ओ नजरुलकेँ 'आमि' पढ़ि कऽ सुनौने छलथिन्ह आओर नजरुल एहिसँ प्रभावितो भेल छलाह, तथापि दूनू रचनाक कथ्य एवं शिल्पमे पर्याप्त पार्थक्य छैक। गद्य एवं पद्यक मध्य विधागत पार्थक्यक अतिरिक्त मोहितलाल एवं नजरुल इस्लामक प्रस्तुतीकरणक स्वरूपक बीच भिन्नताक संगहि दूनू रचनाक अन्तर विषय लऽ कऽ सेहो छलैक। 'आमि'क मूल विषय थिकै ब्रह्मवाद—अद्वैत वेदान्ती 'अहम्' आर नजरुलक 'विद्रोही' थिक एक विद्रोही आत्माक अभिव्यक्ति। ई विद्रोह यद्यपि समस्त भौतिक बंधनक प्रति छलैक, किन्तु छलैक साभिप्राय, अर्थात जीवन तथा जीवनक सत्य एवं सौन्दर्यक हेतु विद्रोह। 'आमि'क स्वर छलैक विश्वदेववादी किन्तु आत्मनिष्ठ; 'विद्रोही'मे भेल छैक स्वाभिमानपूर्ण व्यक्तित्वक अभिव्यंजना; ओ व्यक्तित्व जे आत्मनिष्ठसँ बेशी छलैक वस्तुनिष्ठ।[1]

---

१. प्रस्तुत लेखक (हालदार) जनिका कवि मोहितलालक सत्यानिष्ठाक प्रति बड़ आदर छैन्ह, स्वयं कविक मुहसँ सुनने छथि जे हुनका (मोहितलालकेँ) 'आमि'क प्रेरणा 'मानसी'मे प्रकाशित क्षेत्रमोहन बन्द्योपाध्याय (भूतपूर्व प्रोफेसर, रीपन कालेज, कलकत्ता) द्वारा रचित 'अभयेर कथा' अथवा 'ठाकुरानीर कथा'क कोनो रचानासँ भेटल छलैन्ह। दुर्भाग्यक विषय जे दूनू पठनीय रचना विस्मृत भऽ गेल छैक। मोहितलाल बेशीकाल एहि रचनाकेँ पढ़ैत छलाह जाहिसँ निस्संदेह कहल जा सकैछ जे 'आमि' सर्वतोभावेन अद्वैत अहम् विषयक रचना थिक।

'विद्रोहा'मे लक्षणगत अस्पष्टता आओर वैचारिक विसंगतिक संभावित कारण छलैक नजरुलक अर्द्धचेतन मन पर 'आमि' द्वारा अंकित रहस्यमयता। नजरुलक प्रति मोहितलालक रोष, जे कहिओ शान्त नहि भेलैन्हि, तकर एक आओर कारण छलैक। एहि विषय मुजफ्फर अहमदक मत छैन्हि जे दूनूक बीच विरोध अवश्यंभावी छल। मोहितलाल अहंकारवश नजरुलकेँ अपन शरणस्थ संरक्षित बूझैत छलथिन्ह आओर नजरुल स्वभावसँ कोनो भौतिक 'संरक्षित' स्थितिकेँ स्वीकार करएवला नहि छलाह। मुक्त ओ स्वेच्छया सभसँ समानरूपेँ मैत्री संबंध स्थापित कएनिहार नजरुल मोहितलालसँ क्रमशः पृथक भऽ गेलाह। ई विरोध छल दू भिन्न कोटिक व्यक्तित्वक मध्य अनिवार्य विरोध। से दू वर्षक पश्चात् (१९२४) जखन नजरुल लोकप्रियताक चरमोत्कर्ष पर छलाह आओर 'कल्लोल'क माध्यमसँ युवावर्ग द्वारा तत्कालीन साहित्यिक मान्यता एवं नैतिक मूल्यकेँ चुनौती देल गेलैक, तखन भ्रमवश नजरुलकेँ एहि विद्रोहीवर्गक नेता बूझि लेल गेलैन्हि। आओर एहि 'चुनौती' क प्रत्याक्रमणमे ताल ठोकि कऽ ठाढ़ भेल 'शनिवारेर चीठी।' एहि साहित्यिक प्रतिपक्षक सैद्धान्तिक प्रवक्ता भेलाह मोहितलाल। एहिबीच 'विद्रोही'क अनुकरणपर एक व्यंग्य कविता लिखलैन्हि यद्यपि रजनीकान्त, किन्तु लोककेँ संदेह भेलैक मोहितलाल पर। एहिसँ क्रुद्ध भऽ नजरुल एक तीव्र आक्षेपपूर्ण कविता 'सर्वनाशेर घंटा' लिखलैन्हि। मोहितलाल आब प्रत्यक्ष रूपेँ समरांगणमे आबि 'गुरु द्रोण' रचलैन्हि जे विषवमनक मर्मान्तक कृति बूझल जाइछ। नजरुलक 'सर्वनाशेर घंटा'मे क्रोधसँ बेशी क्षोभक अभिव्यक्ति भेल छलैक तेँ ओ अधिक कटाह आओर अभद्रतापूर्ण नहि छलैक। सौभाग्यक विषय जे आगू चलि कऽ नजरुल द्वेषभावाभिभूत नहि रहलाह, किन्तु मोहितलाल एहि द्वेषभावसँ कहियो मुक्त नहि भऽ सकलाह। तेँ जहाँ धरि नजरुलक प्रश्न छैन्हि 'आमि' आओर 'विद्रोही' लऽ कऽ उत्पन्न विवादक ओतहि अंत भऽ गेल। (सूचित हो जे) एक अर्थेँ बंगलाक सामान्य जनता एवं मूर्द्धन्य साहित्यिक द्वारा मोहितलालक आरोप-आक्षेप अस्वीकृत भऽ चुकल छल। आओर आगू चलि कऽ (१० फाल्गुन बंगाब्द १२३९; २४ फरवरी १९२३ ई०) रवीन्द्रनाथ जखन अपन गीतिनाट्य 'वसंत' नजरुलकेँ समर्पित कएलथिन्ह, तखन बंगलाक लोक संतुष्ट भऽ उठल आओर नजरुल सेहो मोहितलालक बात पर ध्यान देब छोड़ि देलैन्हि। 'विद्रोही'क प्रकशनक पश्चात् नजरुल 'विद्रोही कवि'क उपाधिसँ अभिज्ञात होमए लगलाह से हुनक प्रथम चरणक हेतु उपयुक्त अभिधान थिक। मुदा हुनक अन्य चरणक—जीवन एवं आन्तरिक

व्यक्तित्वक निश्चित पक्ष, विद्रोहपूर्ण आत्मस्थापनाक अभिव्यंजनाक अतिरिक्त आत्मप्रकाशनक अन्य विधि-संकेत प्रथम चरणमे भेटि जाइछ। आ एकरा आकस्मिक घटना नहि बुझबाक थिक। नजरुल तँ प्रारंभहिसँ संघर्षोद्यत कवि छलाह। एहि कालावधिमे नजरुल बड़ सशक्त रचना सभ कएलन्हि जाहिमे सम्मिलित छैक कमाल पाशाक जयनादक कविता आओर मिस्रक जगलुल पाशाक प्रशस्तिगान। विस्मयक बात ई जे कमाल पाशासँ संबंधित कवितामे कमाल पाशाक विपक्षी अनवर कमालकेँ पीठमर्द बूझल गेलैक अछि। अली भ्रातृद्वयक कारावास एवं गांधीजीक नेतृत्वमे कांग्रेस-आन्दोलन सदृश राष्ट्रीय विषय पर सेहो अनेक कविता लिखल गेलैक। अन्य बंगवासीक समान नजरुल गांधीजीक कट्टर समर्थक नहि छलाह। हँ, अहिंसा एवं सत्याग्रहक उच्चादर्शक प्रशंसक ई अवश्य छलाह, किन्तु हिनका विचारमे ई अव्यावहारिक आदर्श छलैक। राष्ट्रक स्वतंत्रता, जनताक सहयोग एवं प्रत्यक्ष संघर्षक लक्ष्यसँ गर्भित गांधीजीक नेतृत्वकेँ नजरुल प्रारंभमे हृदयसँ स्वीकार कएने छलाह। १९२१ ई०मे अपन कोमिल्लावासकालमे नज़रुल गांधीजी पर अनेक कविता लिखने छलाह जाहिमे स्वतंत्रतासंग्रामक क्षितिज पर गांधीजीक पदार्पणक मुक्त हृदयसँ स्वागत-प्रशंसा भेल छैक। उदाहरणस्वरूप एक-दू पाँती द्रष्टव्य अछि :—

कोन पागल पथिक छुटे एलो बंदिनी मार आंगिनाय
त्रिश कोटि भाइ मरण-हरण गान गेये तार संगे जाय

[ई के बताह पथिक थिक, जे बंदिनी मातृभूमिक प्रांगणमे दौड़ि आएल अछि, जकर पाछू धऽ लेलक अछि मृत्युजयी गीत गावैत तीस कोटि जन।]

एही भाँति एक सुन्दर कविता चर्खा पर सेहो छैक। चर्खाकेँ नजरुल राष्ट्रीय आह्वानक प्रतीक बूझैत छलाह। वास्तवमे गांधीजीसँ संबंधित एतादृश रचना सभक अतिरिक्त नजरुल बराबरि अनेक कविता लिखैत रहलाह, जाहिमे अभिव्यक्त छैक देश-प्रेम आओर स्वतंत्रताक लेल राष्ट्रव्यापी असहयोग आन्दोलनक प्रति हिनक आस्था। एतबे नहि; किछु काल धरि तँ ई अपनाकेँ एहि आन्दोलनसँ एकात्म सेहो कऽ चुकल छलाह। उक्त कविता-सभक आओर ओहि कालक अन्य रचनाक माध्यमसँ तत्कालीन आन्दोलनक प्रकृति एवं स्वरूप परिज्ञान भऽ जाइछ।

किन्तु तखन ई नहि बुझबाक थिक जे नजरुल बराबरि केवल एही कोटिक रचना करैत छलाह। उल्लास-उत्साहसँ परिपूर्ण व्यापक हृदयक स्वामी

नजरुलक जीवनक बहुरूपी आकर्षणक प्रति सतत संवेदनशील रहब स्वाभाविक छल। हिनक सृजनात्मक कालावधिक कोनहु चरणमे वैविध्यक अभाव नहि छलैन्हि। १९२२ ई० मे 'भांगार गान' सदृश गीतक संग ई किछु आत्मानुभूति-परक सुन्दर गीत ओ कविता सेहो लिखने छलाह। नारीसौन्दर्यसँ प्रेरित एहि कविताक संतोषक तत्व छैक पौरुषपूर्ण स्वीकृति। ई प्रणयगीत सभ 'दोलन चंपा' (१९२३ ई०), 'छायानट' (१९२४ ई०) आओर 'पूबेर हावा'मे संगृहीत भेल छैक। घटना ओ काल पर विशेष ध्यान नहि दऽ स्मरण राखक थिक जे ई पोथी सभ बादमे प्रकाशित भेल छलैक। वास्तवमे १९२१ ई० धरि हिनक कोनो गीत वा कविता प्रकाशित नहि भेल छलैन्हि। हिनक प्रथम पुस्तक १९२२ ई०मे प्रेसमे छलैन्हि। जेनाकि पूर्वहि उल्लेख भऽ चुकल अछि हिनक 'व्यथार दान' कथा-संग्रह १९२२ ई०क मार्चमे प्रकाशित भेल छलैन्हि, जे बहुत दिनसँ मुद्रणाधीन छलैक। हिनक 'नवयुग' मे प्रकाशित निबंध सभक संग्रह 'युगवाणी' ओहिसाल अक्टूबर मासमे छपलैक। 'युगवाणी' तुरंत प्रति-निषिद्ध भऽ गेलैक। आओर अन्तमे अक्टूबरहिमे प्रकाशित भेलैक ज्वालासदृश तेजोमय काव्यग्रन्थ 'अग्निवीण'। एहि काव्यग्रन्थक सहस्राधिक प्रति एखनहु विकाइत छैक। हँ, एहिसँ कविकेँ कोनो वित्तीय लाभ धरि नहि भेलैन्हि। एहि ग्रन्थक प्रकाशनसँ संबद्ध छैक एक अविस्मणीय प्रसंग, जकर उल्लेख कऽ देब अपेक्षित बुझना जाइछ।

ई 'अग्निवीण' बंगालक अग्नियुगक अग्रणी क्रान्तिकारी बारीन्द्रकुमार घोषकेँ समर्पित कएल गेल छलैन्हि। 'अग्नियुग' सँ अभिप्रेत छैक १९०० ई० आओर १९०८ ई०क मध्य क्रान्तिकारी गतिविधिक काल। एहि पोथीक मुख-पृष्ठक चित्रांकन कएने छलाह स्वयं मास्टर अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, जे कोनहु रचनाकारक लेल अलभ्य गौरव बुझबाक थिक। ई एहू बातक द्योतक अछि जे नजरुल सामान्य जनताक संग-संग ठाकुर-परिवारक हृदयमे सेहो अपन स्थान बना चुकल छलाह। एहि काव्यग्रन्थक खूब भव्य स्वागत भेलैक। तिनिए चारि मासक अभ्यंतर (१९२३ ई०क फरवरीमे) एकर दोसर संस्करण छपलैक। एहि सभक अर्थ छलैक नजरुलक सौभाग्य, आर मित्रवर्गक संग एहि सौभाग्यपूर्ण स्थितिसँ आनन्द उठबैमे ई एको रत्ती संकोच नहि कएलन्हि। हिनका जे किछु राशि उपलब्ध होइन्ह तकरा ई भविष्यक चिन्ता बिनु कएने आनन्दोत्सवमे बूकि देथि।

१९२२ ई०क उतरार्द्धमे, जखन नजरुलक पोथी सभक प्रकाशन प्रारंभ भऽ चुकल छल, नजरुल अपन एक चिरसंचित अभिलाषाक पूर्तिक संभावनासँ

बड़ उल्लसित छलाह। ई अभिलाषा छलैन्हि अपन साप्ताहिक पत्र 'धूमकेतु' क प्रकाशन।

नजरुल पूर्वमे कोमिल्ला गेल छलाह। एहि बीच ओतऽ ई बेशी काल जाए लागल छलाह। पारिवारिक आराम-शान्तिक जे अभाव हिनका जीवनमे छलैन्हि, तकरा पूर्ति ओतऽ भऽ जाइन्हि। मुदा १९२२ ई०क मइ वा जून मासमे हिनका एक बड़ कर्मवृद्ध राष्ट्रवादी पत्रकार मौलाना मुहम्मद अकरम खान द्वारा संचालित नवीन दैनिक पत्र 'सेवक' मे योगदान करबाक उद्देश्यसँ कलकत्ता बजा लेल गेलैन्हि। आगू चलि कऽ इएह खान साहेब तेसर आओर चारिम दशकमे बंगाल मध्य मुस्लिम लीगक 'प्रेस स्वामी' भऽ गेल छलाह। इएह कारण जे भारतक विभाजनक बाद ई ढाका चल गेलाह। 'सेवक' मे नजरुल प्रायः दू मास धरि रहलाह। तखनहि ई एक मित्रसँ मात्र २०० रु० पैंच लऽ कऽ एक अपन पत्र प्रारंभ करबाक निश्चय कएलन्हि। सप्ताहमे दू बेर एकर प्रकाशन होएबाक लेल छलैक। नामकरण कएल गेलैक 'धूमकेतु'।

'धूमकेतु'क प्रथम अंक १९२२ ई०क १२ अगस्तकेँ छपलैक। एहि अंक मे प्रकाशित भेलैक रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचन्द्र, बारीन्द्र कुमार घोष एवं अन्य वरिष्ठ जनक शुभकामना। रवीन्द्रनाथ जे स्वागत-पद पठओने छलथिन्ह, तकर अंतिम पदक अंश छलैक:

जागिए दे रे चमक मेरे आछे जारा अर्द्धचेतन

[जे एखन धरि सुषुप्तावास्थामे अछि तकरा प्रकाश-किरणसँ जगा दे।]

वस्तुतः इएह छलैक 'धूमकेतु'क उद्देश्य आओर एहि चरणमे नजरुलक रचना सभक मूल स्वर छल —लोकमध्य नवजागरण उत्पन्न करब एवं जीवनक चुनौतीपूर्ण सत्यसँ पलायन कएनिहारकेँ झमारि कऽ सचेष्ट कऽ देब। बूझू जे विद्रोही कवि झंझावातसँ सम्मुख युद्ध करबाक लेल समुद्यत भेलाह। आ' से एहि लेल नहि जे हिनका कोनो प्रकारक राजनीतिक महत्वाकांक्षा वा बद्धमूल सिद्धान्त छलैन्हि, बल्कि एहि लेल जे एक लेखकक रूपमे ई प्रतिबद्ध छलाह। उग्र एवं अनहनरैन स्वभावक कारणेँ नजरुलक हेतु एहन कोनो महत्वाकांक्षा बुद्धिमत्तापूर्ण नहि होइतन्हि। आ 'धूमकेतु' अपन धाता-विधातासँ एहि बातमे एको रत्ती भिन्न नहि छल। अर्थात् ओ छल प्रतिबद्ध, उग्र एवं अनहनरैन। 'धूमकेतु' मे कवि नजरुलक सभ गुण विद्यमान छलैक। कोन नजरुल ? तऽ प्रेरणाप्रद मार्मिक पथक एवं प्रज्वालनशील चेतनाक नजरुल

आओर क्रान्तिकारी चुनौतीक लेखक आओर योद्धा नजरुल। ई सभ छलैक कविसँ समयक अपेक्षाक एकदम अनुकूल।

१९२२ ई०क अगस्त मास। चर्खा एवं कांग्रेस कार्यक्रमक अन्य वस्तु बारदोली-सत्याग्रहक विफलताक बाद मंद होइत जा रहल जनोत्साहकेँ पुनर्जाग्रत करबामे असमर्थ छलैक। चतुर्दिक उत्सुकतापूर्ण प्रश्न पूछल जाइक— आगू की ?

चर्खा एवं अहिंसाक विकल्प छलैक सिनफिन आओर आयरलैंडक राष्ट्रवादी आतंकवादी मार्ग (जे बंगालक तत्कालीन आतंकवादी क्रान्तिकारी जनकेँ पसिन्न छलैन्हि।) अथवा लेनिन द्वारा निर्देशित जनआन्दोलन एवं क्रान्तिक मार्ग, जाकर समर्थक छलाह अधिकांश राजनीतिज्ञ लोकनि। ई बात नहि जे मार्क्सवाद-लेनिनवाद एहि स्वतंत्रताप्रेमी जनकेँ (जे अपनाकेँ अक्तूबर क्रान्तिक संवादवाहक मानि चुकल छलाह) पूर्णरूपेण बुद्धिग्राह्य भऽ गेल होइन्ह। तावतकाल धरि भारतमे एहि विषयपर पोथी उपलब्ध नहि छलैक। मानवेन्द्र नाथ रायक 'दि भैनगार्ड' एवं भारतीय कम्यूनिष्ट पार्टीक गया-अधिवेशन (दिसम्बर १९२२ ई०) द्वारा राष्ट्रीय जनवादी क्रान्तिक कार्यक्रमक प्रचार हेतु कएल गेल प्रयासक अछैत भारतमे 'कोमिन्टर्न मात्र एक नाम एवं साम्यवाद मात्र एक भावनापूर्ण दृष्टिकोण बुझल जाइत छलैक। एकर प्रेरक भाव छलैक परोपकार ओ बलिदान। किन्तु मुजफ्फर अहमद एहि 'मार्ग' क प्रतिबद्ध पथिक छलाह आओर ओहिकाल (१९२१-१९२२ ई०) हुनक घनिष्ठ मित्र छलथिन्ह नजरुल, जनिका ओहि मार्गक 'सहयात्री' बुझल जा सकैत छल। तथापि राष्ट्रीयतावादी एवं अंतरराष्ट्रीयतावादी दूनूमेसँ केओ हिनका लेल अग्राह्य-अस्पृस्य नहि छलथिन्ह। नजरुलक प्रशंसकमंडली मे सम्मलित छलथिन्ह 'विजली' सँ संबद्ध वारीन्द्र कुमार घोष सदृश भूतपूर्व क्रान्तिकारीलोकनि आओर 'आर्य पब्लिशिंग हाउस'क सदस्यगणसँ लऽ कऽ अनेक युवाजन। नजरुलकेँ यद्यपि मानवमात्रक एकता एवं स्वाधीनतामे ज्वलंत आस्था छलैन्हि एवं बहुलांशमे ई साम्यवादी सेहो छलाह, तथापि हिनका दैवी शक्तिमे बड़ विश्वास छलैन्हि। हिनक रचनासभमे ई बात देखल जाइछ। ई बात तावत स्पष्ट रूपेँ बुझवा योग्य नहि भऽ सकैछ यावत नजरुलक संपूर्ण विकासक्रमकेँ ध्यानमे नहि राखल जाए। 'धूमकेतु'मे जे नजरुलक विद्रोही चरणक भावना आओर तत्कालीन क्रान्तिकारी चिन्तनधाराक प्रतिनिधित्व होइत छलैक तकरा स्वयं नजरुलक क्रान्तिकारी भावनाक अभि-

व्यक्ति बुझबाक थिक। एकर दृष्टिकोण समान रूपसँ राष्ट्रवादी आओर अन्तर-राष्ट्रीय छलैक। मूलतः ई 'स्वतंत्रता, समानता एवं भातृत्वभाव' क समर्थक छलैक आओर छलैक स्वयं नजरुलक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण तथा ईश्वरमे असांप्रदायिक विश्वासक द्योतक। 'धूमकेतु'क माध्यमसँ नजरुलक कम्यूनिज्म—वर्ण एवं वर्गहीन समाजक प्रति हार्दिक अनुरागक परिचय सेहो भेटैत छलैक।

नजरुलक जीवन एवं चिंतन तथा तत्कालीन राजनीतिक विचारधाराक स्पष्टीकरणक उद्देश्य कवि-पत्रकारक स्वयं अपन धारणाक संग 'धूमकेतु'क लक्ष्य एवं प्रयोजनक व्याख्यापक वक्तव्यसँ किछु उदाहरण देल जाइछ :—

"**'मा भैः'** (भय नहि करू) एहि बीजमंत्र आओर 'महाकालक विजय हो' एहि नारापर विश्वास कऽ हम नूतन पथक पथिक भेल छी। एहि पथ पर हमर रथ थिक 'धूमकेतु' आ हम स्वयं छी अपन सारथी। सत्य होएत हमर दिशानिर्देशक। ई आत्मज्ञान, आत्मसत्यक अभिज्ञान, आत्मगुरु ओ आत्मनिर्देशक द्वारा अपना सौभाग्यक संधाता होएत—अहंकार वा दुस्साहसवश नहि। ई थिक मात्र आत्मज्ञानक उद्घोष....."

प्रस्तुत उद्धरणमे द्रष्टव्य अछि व्यक्तिक अपन अभिमतक उद्घोषणा आओर एक स्वतंत्र व्यक्तिक रूपमे अस्तित्वक अधिकार, अपन सत्यस्वरूपक अभिव्यक्ति तथा ओहि रूपमे संकटपूर्ण रीतिसँ जीवित रहबाक इच्छा। 'धूमकेतु'क लक्ष्यक विषय आओर अधिक स्पष्ट वक्तव्य एहि भाँति छैक :—

"एहि देशक जातीय जीवनक रक्त-मज्जा पूर्णरूपेण सड़ि गेल छैक। यावत जड़िसँ एकर निदान नहि होएत तावत देशक नवनिर्माण असंभव। 'धूमकेतु' अपन प्रचण्ड ज्वालामे ओहि सभ तत्वकेँ भस्मसात् कऽ देत जे राष्ट्रहितक शत्रु थिक—ओहि सभकेँ, जे थिक मिथ्या, प्रपंच आओर आडम्बर।"

पत्रक प्रयोजनक विषय बारंबार निश्चित रूपेँ कहल गेल छलैक—

"पहिल बात ई जे 'धूमकेतु' साम्प्रदायिक पत्र नहि थिक। एकरा अनुसार सर्वोच्च धर्म थिक मानव धर्म। एकर अनेक उद्देश्यमेसँ एक उद्देश्य छैक हिन्दू-मुस्लिम-एकताक मार्गमे अवरोधक तत्व वा मिथ्यावादकेँ ताकि ओकरा दूर करब। जाहि व्यक्तिकेँ अपन धर्ममे आस्था छैक, अपन धर्मक सत्यस्वरूपक अभिज्ञान छैक, से अन्य धर्मक प्रति घृणाभाव नहि राखि सकैछ।"

'धूमकेतु'क एक अन्य अंकमे नजरुल अपन राजनीतिक आदर्शक स्पष्टीकरण करबाक प्रयास कएने छलाह :—

"वारंवार प्रश्न होइछ—'धूमकेतु' कोन मार्ग अपनाओत ? प्रथम एवं सर्वोपरि वस्तु जे 'धूमकेतु' चाहैत अछि, से थिक भारतक पूर्ण ओ अखंड स्वाधीनता। हमरालोकनिक हेतु ई सर्वथा निरर्थक जे 'स्वराज्य' वा एहि भाँतिक शब्दक की मतलव होइछ, कारण जे नेतागण एहि शब्दकेँ अनेकार्थक वना रहल छथि। यदि हमरालोकनि पूर्ण स्वाधीनता चाहैत छी तँ सर्वप्रथम सभ विधि-नियम, सभ तरहक वंधन-प्रतिवंधक विरोधमे विद्रोह करऽ पड़त। आ ओहि विद्रोहक लेल अपेक्षित होएत सर्वप्रथम अपनाकेँ चीन्हव····। विद्रोहक कथमपि अर्थ नहि भेल—सभ किछुक अस्वीकृति वा तिरस्कार। विद्रोहक अर्थ भेल निर्भयतापूर्वक ओहि सभ वस्तुकेँ त्यागि देव, जे निरर्थक वूझि पड़ए।"

"धूमकेतु'क अभिमत छैक—अन्तःप्रेरणानुसार कर्तव्य। धर्म, समाज, राजा वा ईश्वर, एहिमे ककरहुसँ भयभीत होएवाक नहि थिक। विद्रोह करी तँ सत्यक स्वरूपज्ञानक हेतु। उचित रूपेँ विद्रोह कएला पर, प्रलयक आह्वान कएला पर महानाश ओ अनुग्रहक देवता 'शिव' जागि उठैत छथि आ' तखन होइछ सत्यक विजय आओर कल्याण।"

तत्काल प्रस्तुत उद्धरण पर्याप्त वुझना जाइछ। एहिठाम (अनुवादमे) भाषागत वैशिष्ट्यक दीप्ति, भावक तेजस्विता एवं शैलीक सशक्त प्रवाह नहि भेटैछ। किन्तु नजरुलक व्यक्तिगत लक्ष्य एवं तद्धेतुक प्रयत्न, राजनीतिक मत एवं क्रान्तिपूर्ण जोश-उत्साहमे हिनक दृढ़ आस्था तथा हिनक मूल चिंतन-धाराक परिचय अवश्य भऽ जाइछ। एहिसँ नजरुलक विचारधाराक स्पष्टताक संग भावक निश्छलता सेहो ज्ञात होइत छैक। 'धूमकेतु'मे प्रकाशित किछु सम्पादकीय लेख आओर वक्तव्यक, जकर उल्लेख ऊपर भऽ चुकल अछि, संचय ओ प्रकाशन 'दुर्दिनेर यात्री' (१९३८) तथा 'रुद्रमंगल' (१९४१) नामक गद्यग्रन्थमे भेल छलैक। एही भाँति 'धूमकेतु'क कविता सभ 'विषेर वाँसी' तथा 'भांगार गान' (१९२४) कविता-संग्रहमे प्रकाशित भेलैक। आगू ई सभ देखवाक अवसर भेटत। एहि ठाम ई ध्यातव्य जे हिनक किछु काव्यग्रन्थ प्रकाशनक तुरन्त बादहि प्रतिनिषिद्ध भऽ गेल छलैन्हि। घटनाक्रमक तारतम्य वनल रहए तेँ हेतुक ई उल्लेख्य जे बंगालक जनता विशेष कऽ युवजन 'धूमकेतु'क प्रत्येक अंकक प्रकाशन पर उमंगसँ उन्मत्त भऽ उठैत छलाह। यथाक्रम सभ राष्ट्रवादी-क्रान्तिकारी एकर स्वागत कएलन्हि। हरेक अङ्कक मूल्य प्रकाशनक पूर्वहि जमा कऽ देल जाइक। तेँ स्वाभाविक छलैक जे जाहि दिन एकर अङ्क प्रेससँ बहराइक ताहि दिन 'धूमकेतु' कार्यालयमे चौकड़ही जमौनिहार खूब आनन्दोत्सव मनाबथि। कार्यालय ३२, कालेज स्क्वायरसँ निकटस्थ ७, प्रताप लेन आनल गेलैक। कवि, लेखक,

राजनीतिज्ञ एवं नजरुलक क्रान्तिकारी मित्रमण्डली ओतऽ साँझकेँ जमा भऽ कप-पर-कप चाह घोंटैत रहथि आओर गर्मागर्म बहसक बीच 'दे गोरुर गा धुइए' हर्षध्वनि कऽ उठैत छलाह। यद्यपि ई शब्दावली निरर्थक छैक, तथापि नजरुल एवं मित्रमण्डली मध्य एकरा अभिवादनसूचक बूझल जाइत छलैक। एहि प्रसंगोल्लेखसँ नजरुलक मस्ती ओ विद्रोही मनोदशाक परिचय भेटि जाइछ। धूमकेतुक प्रकाशन हिनक विजयोत्सवक प्रथम मुहूर्त छल। मुदा बंगालक पुलिस-राज एकरा बर्दाश्त नहि कऽ सकल। 'धूमकेतु'क प्रत्येक अङ्ककेँ ब्रिटिश राज अपन अस्तित्वक लेल चुनौती तथा शान्ति-व्यवस्था आओर सुशासनक हेतु खतरा बूझैत छल। तेँ 'धूमकेतु'क अल्पजीवी होएब निश्चित छलैक। दुर्गापूजाक समय निकट छलैक आ' एहि पर्वक उपलक्षमे बंगला पत्र-पत्रिका द्वारा विशेषांक प्रकाशित करबाक प्रथा छैक। तदनुसार दुर्गा देवीक पूजोत्सवक स्वरूप नजरुल 'धूमकेतु'क हेतु एक दीर्घ कविता लिखलैन्हि—'आनन्द माइर आगमन'।

प्राचीन धार्मिक व्याख्यानुसार दुर्गा युद्धक देवी चण्डी, राक्षससंहारिणी, दुष्टनाशिनी मानलि गेलि छथि। ई स्वत्वसम्पन्न शक्तिमयी संरक्षिका शक्ति छथि। ई मातृदेवी विदेशी शोषक-वर्गक विरुद्ध सशस्त्र संघर्षक आह्वान कएनिहारि भारत-माताक प्रतीक बनि गेलि छलीह। प्रायः चारि दशक लगल छलैक ई प्रतीक बनबामे। सर्वप्रथम बंकिम चन्द्र चटर्जी 'कमलाकान्तेर दफ्तर' (१८७३ ई०)मे अमर दुर्गोत्सव आओर पुनः 'आनन्दमठ' (१८८२-८३ ई०)मे एकर संकेत कएने छलाह। एहि भाँति आनन्दमयी देवी दुर्गा आओर भारतमाताक बीच तादात्म्य भऽ गेल छलैक।

देवीक स्तुति एवं आह्वान तँ होइन्ह छद्मरूपेँ साहित्यिक आवरणमे, मुदा पुलिसक सतर्क दृष्टिस ई बात छिपल नहि रहलैक। काव्यक हेतु अपेक्षित संवेगात्मकताक उपेक्षा नहि भेल छलैक। स्वाधीनता-प्रेमी कवि नजरुलकेँ चाही देवीक बस एक रूप—दुष्ट-विदारिणी रूप, जे परंपरासम्मत सेहो छलैक। मुदा कविताक शब्दविन्यास एवं शैली परंपरागत नहि छलैक। भाषाशैली नातिमंद रहलो उत्तर ओहि कवितामे समसामयिक घटनाक्रम तथा ज नविरोधी पुलिसक अत्याचारक स्पष्ट निर्देश-संकेत छलैक। ई छल एक विध्वंसकारी व्यंग्यपूर्ण रचना जाहिमे राक्षसी शासनपर तीक्ष्ण-कठोर प्रहार भेल छलैक। शीघ्रहि 'धूमकेतु'-कार्यालयपर पुलिस द्वारा धाबा भेल। पत्रक संपादन आओर कविताक लेखक लेल गिरफतारीक वारंट सेहो छलैक।

ओहि अंकक जतवा प्रति उपलब्ध भऽ सकलैक, से जब्त कऽ लेल गेलैक। संयोगात् सम्पादक छलाह अनुपस्थित। नजरुल ओहि काल कलकतासँ बाहर छलाह। पछातिकाल ई कोमिल्ला गेलाह आओर अपन मित्र इन्द्रकुमार सेनगुप्तक ओहिठाम ठहरलाह। तत्काल नजरुल ओहि शरणस्थलमे सुरक्षित छलाह आओर 'धूमकेतु' क प्रकाशन होइत रहलैक।

पुनः दीपावली अंकमे बड़ कड़गर सम्पादकीय छपलैक। शीर्षक छलैक 'मैं भूखा हूँ।' ई छल देवीक आह्वान—शोणित एवं बलिदानक हेतु आह्वान। पुलिस आओर अधिक सक्रिय भऽ उठल। जनरुलक पता लगा हिनका पकड़ि कलकत्ता आनल गेल। प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटक अदालतिमे राजद्रोहक मोकदमा चलल। आ' जेना कि निश्चिते छलैक, जनरुल अपराधी सावित भेलाह आओर १६ जनवरी १९१३ ई०कें कविक लेल एक सालक सश्रम कारावासक दण्ड घोषित भेल। एहि दण्ड-घोषणाक पूर्व कठघरामे कवि एक भव्य वक्तव्य देलैन्हि जकरा 'राजबंदीर जबानबन्दी' क संज्ञा देल गेलैक अछि। तात्विक गुण, उत्साह-उमंग एवं उच्चादर्शसँ गर्भित एहि वक्तव्य द्वारा बंगला साहित्यक नीक अभिवृद्धि भेलैक अछि। किछु साल पूर्व अदालतिमे महात्मा गांधी द्वारा देल गेल वक्तव्यक विषयवस्तु एवं विचारक दृष्टिसँ ई वक्तव्य भिन्न छलैक। 'राजबंदीर जबानबन्दी' क तात्पर्य स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष छलैक—गांधीजीक शब्दावलीमे 'राक्षसी शासन' एवं एकर समस्त न्यायिक तथा कार्यपालक तंत्रक तीव्र भर्त्सना। एहू सभसँ बढ़िकऽ तँ ई एक निर्भीक उद्घोषणा छलैक एहि बातक जे कवि देववाणीक मनोनीत प्रवक्ता, सत्यक (भारतीय परिस्थितिक सत्यक) पक्षधर, ईश्वर एवं न्यायक समर्थक तथा जे किछु विद्रूप कुत्सित छैक तकर विध्वंसक थिकाह।

"हमरा अनुभव भेल अछि जे हम ईश्वर द्वारा प्रेषित विश्वक्रान्तिक लाल सैनिक छी, जकर कर्तव्य थिकैक सत्यक रक्षा आओर न्यायक प्राप्ति। ओ हमरा क्रान्तिक दुन्दुभीवादक एवं अग्रदूत बना कऽ पठौलन्हि अछि एहि शश्यश्यामला वंगभूमिमे—ओहि बंगालमे जे इन्द्रजालक मोहनिद्रामे सूतल अछि। हम मात्र एक साधारण सैनिक छी आओर अपना भरि ईश्वरादेशक पालन कएलहुँ अछि।"

वक्तव्यक आगूक अंश एतादृशे छैक। ई वक्तव्य एक अविस्मरणीय अभिलेख मानल जाइछ। कहि चुकल छी, नजरुल दोषी सिद्ध भऽ कऽ दण्डित भेलाह।

तत्पश्चात् प्रथमतः 'धूमकेतु'क प्रकाशन दू सप्ताहक लेल स्थगित कऽ देल गेलैक। एहि अवधिक समाप्ति पर ई पाक्षिकपत्रक रूपमे नजरुलक एक पूर्वसहायक वीरेन्द्रकुमार सेनगुप्तक सम्पादकत्वमे पुनः प्रकाशित भेल। पछातिकाल सेनगुप्त महोदय 'फ्री प्रेस आफ इण्डिया' मे चल गेलाह। ज्ञातव्य जे ई सेनगुप्त नजरुलक मित्र एवं संबंधी कोमिल्लावासी वीरेन्द्र-कुमार सेनगुप्तसँ भिन्न छलाह। पाक्षिक 'धूमकेतु' क प्रथम अंकमे नजरुलक अदालतिमे देल गेल वक्तव्य 'राजवंदीर जबानवंदी' प्रकाशित भेलैक। दू गोट अन्य मासिक पत्र—'प्रवर्तक' आओर 'उपासना' सेहो एहि वक्तव्यकेँ छपलक। दोसर अंकक बाद 'धूमकेतु' क प्रकाशन पुनः बन्द भऽ गेलैक। नजरुल छलाह एकर शरीर आओर आत्मा। हिनका बिना ई जीवित नहि रहि सकल। परिवर्तित परिस्थितिमे, जखन कि नजरुल अपना जीवनमंचक नूतन कक्षमे प्रवेश कऽ चुकल छलाह, ई पुनर्जीवित नहि भेल। प्रायः दस सालक पश्चात् १९३१ ई० मे किछु उत्साही जन द्वारा नजरुलक एक मित्रक सम्पादकत्वमे एकरा पुनः प्रारम्भ करबाक प्रयास कएल गेलैक। नजरुलसँ अनुरोध भेलैन्हि जे ई एहि घोषणासँ सहमत भऽ जाथि जे 'धूमकेतु काजी नजरुल इस्लामक पथप्रदर्शनमे प्रकाशित होमए जा रहल अछि। किन्तु नजरुल एकरा कार्य-कलापमे व्यक्तिगतरूपेँ कोनो रुचि नहि देखौलथिन्ह। जहाँधरि नजरुलक संबंध अछि, एहन मानल जा सकैछ जे १९२३ ई० मे कारावास भेलाक संग 'धूमकेतु' हिनका लल बन्द भऽ गेल।

१९२३ ई० नजरुलक कारागजीवनक संग प्रारंभ भेलैक। एहि वर्ष (१५ दिसम्बर) ११ मासक कारावासक अवधि पूर्ण कऽ ई मुक्त सेहो भेलाह। सामान्यतया स्वीकृत छूट तँ भेटले छलैन्हि। एकरा अतिरिक्त एहि वर्षक विशिष्टताक कारणस्वरूप किछु अन्य उल्लेखनीय एवं अविस्मरणीय घटना-क्रम छैक, यथा—नजरुलक प्रथम कविता-संग्रह 'अग्निवीण' क प्रकाशन। एहि पोथीक तुरंत दोसरो संस्करण भेलैक। नजरुलक हेतु एहि कालक सर्वाधिक गौरवपूर्ण विषय छल ई जे रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपन सद्यः रचित गीतिनाट्य 'वसंत' 'श्रीमान् काजी नजरुल इस्लाम' केँ स्नेहाशीषक संग समर्पित कएने छलथिन्ह। रवीन्द्रनाथक ई कार्य हुनक उदार मनोवृत्ति आओर नजरुलक गुणक निश्छल प्रशंसाक द्योतक छल। विप्लवी कवि एहिसँ अत्यंत कृतज्ञ एवं आह्लादित भेल छलाह। 'धूमकेतु' क यशस्वी (सम्पादक) नजरुलक हेतु रवीन्द्रनाथक एहि कार्यसँ

बढ़िक' निस्संदेह कोनो दोसर राष्ट्रीय स्वीकृति एवं सम्मान नहि भऽ सकैत छल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरक एहि कार्यक ठीकसँ महत्वांकन करबाक हेतु ई स्मरण रखबाक थिक जे तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन हुनक रुचिक अनुकुल नहि छलैन्हि। असहयोग आन्दोलन, चर्खा, विदेशी वस्त्रक बहिष्कार तथा पश्चिमी शिक्षाक प्रश्न पर रवीन्द्रनाथकेँ गांधीजीसँ प्रकटतः मतवैभिन्य छलैन्हि। नजरुलक विद्रोही स्वभाव तथा क्रान्तिकारी आन्दोलनक समर्थनसँ हुनक सहमति तँ आओर असंभव छल। ओ अपन स्थिर विचार 'स्वदेशी समाज' क वक्तव्यद्वारा १९०८ ई०मे स्पष्ट कऽ चुकल छलाह। एहिमे सामाजिक पुनर्निर्माण एवं राष्ट्रीय पुनर्जागरणक कार्यक्रम प्रस्तुत भेल छलैक। किन्तु रवीन्द्रनाथक धैर्य एवं श्लथ गति प्रखर विप्लवी स्वभावक नजरुलक अनुकूल नहि छलैन्हि। साक्षात्कार भेला पर कविद्वय एक दोसरसँ एहि विषयमे असहमत भऽ चुकल छलाह। एहि असहमतिक अछैत रवीन्द्रनाथ नजरुलक कवित्व एवं गीत-लेखन-प्रतिभाक प्रशंसक छलाह। नियमित अभ्यासद्वारा प्रतिभाकेँ आओर तीक्ष्ण करबाक सुयोग-लाभ लेल ओ नजरुलकेँ शान्तिनिकेतन अएबाक निमंत्रण सेहो देने छलथिन्ह। संगहि देने छलथिन्ह परामर्श जे नजरुल आन्दोलनपूर्ण राजनीतिक अपेक्षा साहित्य-सृजनकेँ प्राथमिकता देथि। मुदा नजरुलक स्वभाव ओहि रूपक नहि छलैन्हि आओर ई आन्दोलनमे प्रत्यक्ष सहयोग देबाक पक्षमे छलाह। एहिसँ रवीन्द्रनाथ दुखी छलाह, कारण जे हुनका मतेँ नजरुलक काव्यप्रतिभाक दुरुपयोग भऽ रहल छलैन्हि। रवीन्द्र नजरुलक कार्यपद्धतिकेँ सरल विवेक आ उदारतापूर्ण शब्दमे 'तलवारसँ दाढ़ी काटब' कहने छलथिन्ह। एहि पृष्ठभूमिमे नजरुलक प्रशंसा जखन रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा भेलैन्हि तँ समस्त बंगवासी प्रसन्न भऽ उठल। एहिसँ सरकारक मूर्खता ओ अर्थहीनता सेहो स्पष्ट भऽ गेलैक। मुदा एहि परिस्थितिक मोकाबला करबालेल नौकरशाहीक अपन उपाय छलैक। आब ओकरा दृष्टिमे नजरुल छलाह मात्र एक राजद्रोही बंदी आ एहि प्रकारक बंदीक संग कोन तरहक व्यवहार हो से ओकरा अज्ञात नहि छलैक। एम्हर नजरुलकेँ सेहो अपन रास्ता छलैन्हि। ओहो नौकरशाहीक मोकाबला करबाक लेल प्रस्तुत छलाह। समाजमे अपन स्थिति एवं अपराधक स्वरूपक अनुरूप नजरुल तत्कालीन कारा-नियमावलीक मोताबिक विशेष श्रेणीक व्यवहारक अधिकारी छलाह। अन्य राजनीतिक बंदीजन सेहो एहि अधिकारसँ वंचित छलाह। अलीपुर केन्द्रीय कारामे प्रारंभिक किछु दिन बितओलाक बाद स्वयं नजरुल जखन हुगलीक जिलाकारागारमे स्थानान्तरित

कएल गेलाह, तखन हिनकहु एहि सुविधासँ अकारण वंचित कऽ देल गेलैन्हि। संगहि एहन निर्देश देल गेलैक जे हिनकहु संग एक साधारण अपराधीक योग्य व्यवहार कएल जाइन्ह; यथा अन्य कांग्रेसी बंदीजनक संग अन्यापूर्वक व्यवहार भऽ रहल छलैन्हि। तेँ नजरुल अन्य बंदीजनक संग एकर विरोधमे ठाढ़ भेलाह। उचित अधिकारक अपहरण लऽ कऽ नजरुल एवं अन्य कारावासी द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ भेल। ओम्हर नौकरशाही दिशिसँ सेहो आओर अधिक कठोर दण्डक व्यवस्था भेलैक—कष्टकर भोजन, वस्त्र एवं परिश्रान्तिक संग डंटावेड़ी आओर कैंची डंटा-वेड़ीक व्यवस्था। ई दण्डव्यवस्था एकक बाद एक तावत् काल धरि होइत रहलैक यावत् काल धरि नजरुल अपना संगी-साथी सहित एहि अत्याचार एवं आतंकपूर्ण उच्छन्नरक विरोधमे अनशन नहि कऽ देलैन्हि।

अनशनमे अनेक दिन ओ सप्ताह बीति गेलैक। एहिसँ लोकक चिन्ता बढ़ल जाइक। किन्तु अपन मित्रमण्डली आओर आदरणीय राष्ट्रनेतागणक अनशन तोड़ि देबाक आग्रह स्वीकार करैक हेतु नजरुल तैयार नहि छलाह। एहि अनशन आओर नजरुलक अवस्थाक सूचना पबितहि रवीन्द्रनाथ ठाकुर शिलांग (असम)सँ तार देलथिन्ह—'अनशन त्यागू। अहाँपर साहित्य जगतक किछु अधिकार छैक।' नजरुलकेँ ई तार नहि देल गेलैन्हि। 'प्रेषितीक पता अज्ञात'—ई कहि तार रवीन्द्रनाथकेँ घुरा देल गेलैन्हि। देशबन्धु चित्तरंजन दास तथा उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्यायक परामर्शसँ कलकत्तामे एक विशाल जन-सभाक आयोजन भेलैक, जाहिमे प्रतिज्ञा कएल गेलैक जे बंगालक जनता बंदीजनक पक्ष-समर्थन करत, आ संगहि नजरुलसँ आग्रह कएल गेलैन्हि जे ओ अपन लड़ाइ जनताकेँ लड़ए देथुन्ह। एही प्रकारक आश्वासन पुनः रवीन्द्रनाथ दिशिसँ सेहो देल गेलैन्हि। अन्ततः अनशन समाप्त भेल। आगू झंझटि नहि बढ़ए—ई सोचि जेलक अधिकारीगण नजरुलकेँ हुगली जेलसँ बरहमपुर जेल स्थानान्तरित कऽ देलकैन्हि आओर जाहि उच्च श्रेणीक हेतु ई संघर्ष शुरुह कएने छलाह, से श्रेणी हिनका भेटि गेल।

एहि भाँति, आब अपेक्षाकृत शान्तिपूर्वक, नजरुलक एगारह मासक काराजीवन १५ दिसम्बर, १९२३ ई०केँ समाप्त भेल। काराजीवनक किछु कविता ओ गीत, बंगला साहित्य मध्य, स्थायी कीर्तिस्तम्भ बनल छैक।

यथा—'सुपेर वंदना' आओर 'सिकल-परा गान'। प्रथममे कारा-अधीक्षकक उपर तीक्ष्ण व्यंग्य भेल छैक आओर दोसर गीत लोकसभक अधरमे अनुगुंजित होइत रहैत छलैक। एहि गीतक एक पाँती देल जाइछ—

एइ सिकलपरा छल आमादेर, सिकल परा छल

[ई सिकिड़, जे हम सभ पहिरने छी से, तँ थिक एक व्याज, एक छलना : वस्तुतः ई तँ थिक अत्याचारीकेँ घोर प्रहार द्वारा व्यग्र-व्यथित करबाक शस्त्र।]

४. जनगणक कवि

'मात्र प्रस्तर-प्राचीरसँ बंदीगृहक निर्माण नहि होइछ'—ई कथन कवि नजरुलक प्रसंगमे अक्षरशः चरितार्थ भेल छलैन्हि । यद्यपि १९२३ ई०मे ई बन्दीगृहमे छलाह, तथापि हिनक कविता एवं गीत जहलक बाहर बंगला पत्र-पत्रिका एवं पाठकवर्ग धरि निश्चित-निर्बाध रूपेँ पहुँचैत रहल । वस्तुतः एहि अवधिमे हिनक रचना आओर व्यापक रूपेँ पढ़ल जाइत छल । हुगलीमे कविक मित्र एवं प्रशंसकक संख्यामे दिन-प्रतिदिन अभिवृद्धि भेल आओर ई लोकनि कारावासमे कविसँ तथा कलकत्तामे कविक मित्रगणसँ सम्पर्क बनओने रहलाह । अंततः मुक्त भेला पर नजरुलकेँ अपना मध्य रहबाक लेल राजी करवामे ई लोकनि सफल भेलाह आ' दू वर्षसँ उपर—संभवतः २ जनवरी, १९२७ ई० धरि—नजरुल हुगलीमे छलाह ।

कारामुक्त भेलापर नजरुल राजनीतिमे आओर अधिक जोर-शोरसँ जुटि गेलाह । बंगालक विभिन्न राजनीतिक एवं साहित्यिक मंडली द्वारा आयोजित अधिवेशनमे हिनका आमंत्रित कएल जाइन्ह । भारतीय राजनीतिमे ई जोआरि नहि, भाटाक काल छलैक आओर राष्ट्रीय संघर्षक हेतु नवीन मार्ग आओर नव माध्यमक प्रसंग वादविवाद एवं अन्वेषण सेहो चलि रहल छलैक । बारदोली प्रस्तावक कारणेँ तीव्र गतिसँ चलैत असहयोग आन्दोलनक मशीन अकस्मात् ठमकि गेल रहैक । प्रेरणाहीन रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा एकरा पुनः चलायमान करब संभव नहि छलैक । देशबन्धु चित्तरंजन दास, मोतीलाल एवं अन्य नेताकेँ तँ पूर्वहिसँ एकर आशंका छलैन्हि । जनान्दोलन प्रायः विफल भऽ चुकल छलैक । जनतामे पराजयक भाव देखि, ब्रिटिश पदाधिकारी गांधीजीकेँ राजनीतिक मंचसँ अभद्रतापूर्वक हटा देलकैन्हि । हिनका पर राजद्रोहक अभियोग चलाओल गेल । पूर्वयोजनानुसार हिनका अपराधी साबित कऽ ६ वर्षक सश्रम कारावास देल गेलैन्हि । एम्हर कारामुक्त भेला उत्तर चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू आदि नेतागण असहयोग आन्दोलनक कार्यक्रममे परिवर्तनक माँग कएलथिन्ह आओर सुझाव देलथिन्ह

जे विधान-मण्डलक उपयोग दायित्वहीन ब्रिटिश सरकारक विरोध करबामे होएबाक चाही। 'विधान-मण्डलक अभ्यंतरसँ असहयोग'क नीतिक परामर्श सेहो देल गेलैक।

परिवर्तन-संबंधी प्रस्तावक घोर विरोध अधिकांश कांग्रेसी कएलन्हि। यथास्थितिवादीक नेता छलाह चक्रवर्ती राजगोपालाचारी। विरोधक स्वर एतेक नै उग्र भेलैक जे १९२२ ई०मे कांग्रेसक गया-अधिवेशनक अध्यक्षता कएनिहार चित्तरंजन दास अपना पदसँ त्यागपत्र दऽ देलथिन्ह आओर आगू चलि कऽ (१९२३ ई०) मोतीलाल, हकीम अजमल खाँ एवं अन्य परिवर्तनवादीक सहयोगसँ कांग्रेस स्वराज्य पार्टीक स्थापना कएलन्हि। ई स्वराज्य पार्टी कांग्रेसक भीतरसँ कांग्रेसीजन एवं अन्य लोकक बीच परिवर्तनक प्रचार प्रारंभ कएलक। १९२३ ई० निराशा ओ विभ्रमक कठिन काल छलैक। परिवर्तनवादी एक दिशि रचनात्मक कार्यक्रमक विफलता ओ दोसर दिशि स्वतंत्रता सेननीक बीच उत्पन्न विभेदक कारणेँ खिन्न छलाह। एम० मुहम्मद अलीक सत्प्रयाससँ नव दिल्लीमे भेल कांग्रेसक विशेष अधिवेशन (१९२३ ई०) मे एहि विवादक अंत भेलैक आओर स्वराज्य पार्टीकेँ विधान-मण्डलक अग्रिम चुनाव लड़बाक अनुमति देल गेलैक। किन्तु ई स्पष्ट कऽ देल गेलैक जे एहि लेल कांग्रेस संस्थाक नाम आओर साधनक उपयोग नहि हो। स्वराजी लोकनि एहि समाधानसँ संतुष्ट छलाह। जनताक समक्ष आब ठोस एवं आकर्षक कार्यक्रम छलैक। चतुर्दिक् व्याप्त उत्साहहीनताक निवारणार्थ ई आवश्यको छलैक। जखन बारदोलीक रचनात्मक कार्यक्रमक कारणेँ संघर्षक उत्साह-चेतनामे ह्रास भऽ गेल छलैक, स्वराज्य पार्टीक संसदीय कार्यक्रम सीमित क्षेत्रमे आंशिकरूपसँ एहि चेतनाकेँ जीवन्त राखि सकल। तथापि जनसामान्यकेँ स्वतंत्रताक हेतु कोनो सुनिश्चित संघर्षमे संलग्न नहि कराओल गेलैक। ई तावत नहि भऽ सकलैक यावत पूर्ण स्वतंत्रताक प्रस्ताव (दिसम्बर १९२९ ई०) आओर सविनय अवज्ञा आन्दोलन (मार्च १९३० ई०) द्वारा पुनः जनान्दोलन प्रारंभ नहि कऽ देल गेलैक। आन्दोलन एवं अन्य कार्यकलापक दृष्टिसँ १९२४ ई० स्वराज्य पार्टीक आरंभिक वर्ष छलैक, जखन लोककेँ मात्र 'यथास्थितिवादी' एवं 'कट्टर गांधीवादी' नहि रहि असहयोगक कार्यक्रमक विषयमे तथा अन्य आओर अधिक कारगर उपायक लेल फेरसँ सोचबाक हेतु प्रेरित कएल गेलैक। 'धूमकेतु'क विद्रोही कवि नजरुल इस्लामकेँ यथा-स्थितिवादीक समान नियम-निष्ठाक पालन करबाक धैर्य नहि छलैन्हि।

अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय 'परिवर्तनवादी'के नजरुलक व्यक्तित्वमे आन्दोलनक हेतु एक सशक्त सहयोगी मित्र भेटि गेलैन्हि। कारामुक्तिक बाद (१९२४ ई०) नजरुल विभिन्न राजनीतिक एवं साहित्यिक समारोहमे सम्मिलित होएबाक लेल आमंत्रित भऽ एक जिलासँ दोसर जिलामे भ्रमण करैत रहलाह। ई हिनक नव कविता एवं नूतन गीत रचनाक काल छल। एहि रचना-सभक खूब प्रशंसा भेलैक। एहिमेसँ अधिकांशके 'जनकविता' आओर 'जनगीत' कहल जा सकैछ, कारण जे एकर संबंध सार्वजनिक सभा-समारोहसँ छलैक। आगू यथास्थान एहि प्रसंग आओर चर्चा होएत।

एहि बीच नजरुलक व्यक्तिगत जीवनक किछु महत्वपूर्ण घटनाक उल्लेख भऽ रहल अछि जे जतबा नजरुलसँ संबंधित छैक ततबा सार्वजनिक जीवनसँ सेहो—संभवतः ओहूसँ बेशी। एहि घटनासभमे सर्वप्रमुख छैक नजरुलक विवाह प्रसंग (अप्रैल १९२४)।

जेनाकि ज्ञात अछि, नजरुल कोमिल्लामे बहुधा सेनगुप्त परिवारक अतिथि रहैत छलाह। एक बेर ई ओतए ठहरल छलाह। गृहपत्नी विराजसुन्दरी देवीक मातृवत् स्नेहक कारणेँ ओ परिवार हिनका अपन घर-जकाँ बूझि पड़लैन्हि। परिवारक वयस्क एवं युवा सदस्य द्वारा प्रस्तुत मैत्रीपूर्ण वातावरण नजरुलकेँ ओहि परिवारमे स्वागतपूर्ण आगुन्तक बना देलकैन्ह। परिवारक एक किशोरी प्रमिलासँ हिनक हेमछेम क्रमशः बढ़ैत गेल। भविष्य मे ई अपन हस्ताक्षर 'प्रमिला नजरुल इस्लाम' कर' लागलि छलीह। ई प्रमिला सेनगुप्त महोदयक विधवा सारि गिरिबाला देवीक एकमात्र संतान छलथिन्ह आ एहि संबंधेँ हुनक सरबेटी भेलथिन्ह। बंगाली परिवारमे जेना बहुधा होइत छैक, विधवा माए आओर बेटी दूनू सेनगुप्त परिवारक आश्रममे छलीह। १३-१४ वर्षक किशोरी प्रमिला (दुलारक नाम 'दुली' ओ 'दोलन') शनैः शनैः नजरुलक आकर्षक व्यक्तित्व, सहृदयता एवं निश्छलतासँ प्रभावित होमए लागलीह। १९२२ ई० धरि दूनू गोटे एक दोसराक मनोभावनासँ अवगत भऽ गेल छलाह। ओहि सालक 'मुस्लिम भारत'क 'विजयिनी' शीर्षक प्रणयगीतसँ ई संकेत भेटैत छैक जे नजरुल विवाहक वाग्दान दऽ चुकल छलाह। ई गीत पछाति 'छायानाट' पोथीमे संकलित भेलैक। मुदा तत्काल ई वाग्दानक बात प्रायः गुप्त रहल। 'धूमकेतु'मे नजरुलक अतिव्यस्तता एवं बादमे कारावासक कारणेँ प्रेमीद्वयक भावना-विचारकेँ परिपक्व होएबाक अवसर भेटलैक। १९२४ ई०मे हुगलीवासकालमे सगाइक बातक लोकमे

विज्ञापन तथा पाणिग्रहण भेलैक। ई विवाह लऽ कऽ हिन्दू-मुसलमान दुनू सम्प्रदायक बीच बड़ असंतोष-रोष व्याप्त छलैक। एहि पृष्ठभूमिमे प्रमिला एवं नजरुल द्वारा देल गेल साहस आओर प्रेमक दृढ़ताक परिचयकेँ नगण्य नहि बुझबाक थिक।

एक शिक्षित हिन्दू परिवारक कन्याक मुसलमानसँ विवाह हिन्दू शास्त्रक विरुद्ध होएबाक संग-संग ओहि परिवार ओ समाजक लेल खिधांसक विषय सेहो छलैक। कन्याक माए गिरिबाला देवीकेँ छोड़ि सेनगुप्त-परिवारक कोनो अन्य व्यक्ति एहि विवाहक पक्षमे नहि छल। गिरिबाला देवी वर-कन्याक संग दऽ सुख-दुख सहैत एहि नव परिवारक संचालन करऽ लागलि छलीह मुदा एकर अर्थ भेलैक सेनगुप्त परिवारसँ संबंध-विच्छेद। विराज-सुन्दरी देवी यद्यपि नजरुलकेँ पुत्रवत् मानैत छलथिन्ह, तथापि ओ एहि विवाहक समर्थन नहि कएलथिन्ह आओर विवाह-समारोह एवं नव दम्पतिसँ अपनाकेँ पृथक् राखलैन्हि। मुदा एहिमे कोनो आश्चर्य नहि। अपना पुत्र-पुत्रीकेँ सामाजिक घृणा एवं कलंकसँ बचएबाक कोनो दोसर उपाय नहि छलैन्हि। नजरुल हुनक एहि विवशतासँ अवगत छलाह। एहि कारण हुनका मनमे कोनो मालिन्य नहि छलैन्हि। तेँ ई आगू चलिक ऽ अपन 'सर्वहारा' शीर्षक पोथी विराजसुन्दरी देवीकेँ समर्पित कएने छलथिन्ह। हर्षक विषय जे एहि विच्छिन्न संबंधक अंत १९३३ ई० धरि भऽ गेलैक। एतबे नहि; पुनःस्थापित पूर्ववत् संबंध विराजसुन्दरी देवीक मृत्युपर्यन्त (१९३८ ई०) बनल रहलैक।

मुसलमान सेहो एहि विवाहकाण्डसँ प्रसन्न नहि छलाह, जखनकि ओहि काल जे वातावरण छलैक, ताहिमे साम्प्रदायिक दृष्टिमे ई विवाह मुसलमान समुदायक लेल लाभकर छलैक। मुदा वर-कन्यामेसँ केओ एकर परबाहि नहि कएलन्हि। हिन्दू वा मुसलमान केओ प्रसन्न रहथि वा नराज, नजरुल दम्पतिक लेल धनिसन। कट्टर मुसलमानी पद्धतिसँ विवाह लेल परिस्थिति अनुकूल बूझि पड़लो उत्तर जाहि विधिसँ ई विवाह सम्पन्न भेल छलैक ताहूसँ बहुत मुसलमान असंतुष्ट छलाह। ओहि समय प्रमिलाक आयु मात्र १६ वर्ष छलैन्हि, तेँ १८ वर्षक पूर्व भारतीय सिविल विवाह अधिनियमक अनुसार कोटमे विवाह नहि कऽ सकैत छलीह। मात्र एक विकल्प छलैक जे ओ धर्म-परिवर्तन कएलाक पश्चात् मुसलमानी पद्धतिसँ विवाह करथि। कट्टरपंथी मुसलमानक अनुसार बिना धर्म-परिवर्तन कएने प्रमिलाक नजरुलसँ विवाह

अमान्य-असंभव छलैक। मुदा भारतमे अकबर सदृश मुगल सम्राट् एहन व्यवस्था देने छलथिन्ह, जाहि अनुसार ओलोकनि हिन्दू स्त्रीक संग मुस्लिम पद्धतिसँ विवाह करैत छलाह आ बादमे ओकरा (हिन्दू स्त्रीकेँ) अपना धर्मक पर्व-त्योहार मनएबाक स्वतंत्रता दऽ देल जाइत छलैक। कट्टरपंथी एकरा अनुचित बूझैत छलाह। किन्तु स्वाभिमानी एवं सत्यनिष्ठ नजरुल ककरो धर्मत्याग करबालेल नहि कहि सकैत छलथिन्ह। तेँ मुसलमानी नहि बनलो पर प्रमिलाक विवाह मुसलमानी विधिसँ भेलैन्हि। विवाहक बाद नजरुलक अपन पत्नी आओर परिवारक भार अपन सासुकेँ सौंपि देलथिन्ह। ज्ञातव्य जे सासु (गिरिबाला देवी) छलथिन्ह एक हिन्दू विधवा। एहि भाँति नजरुल परिवारमे सहिष्णुतापूर्ण असाम्प्रदायिक वातावरण छलैन्हि; लेशमात्रो हिन्दू वा मुसलमानी कट्टरताक चिह्न नहि। ईहो किछु मुसलमानकेँ पसिन्न नहि। ओलोकनि नजरुलकेँ आचार-विचारमे एक कट्टर मुसलमानक रूपमे देखऽ चाहैत छलाह। किन्तु नजरुलकेँ तऽ छलैन्हि अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व—एक विद्रोही ओ कविक व्यक्तित्व। एहि कारणेँ ई मित्रमण्डली एवं पाठकवर्गक मध्य आओर बेशी ग्राह्य भेलाह। कवि एवं कविपत्नीक दृढ़ प्रेम आओर साहस सेहो एहि वर्गद्वारा प्रशंसित भेल। एहि सभ बातकेँ ध्यानमे राखैत सामान्यतया कहल जा सकैछ जे तत्काल पति-पत्नी दूनू व्यक्तिक जीवन सुखी छलैन्हि यावत् एक अदृश्य दुखद घटना, जाहि पर ककरो वश नहि, हिनकालोकनिकेँ शोकाभिभूत नहि कऽ देलकैन्हि। यद्यपि ई नहि कहल जा सकैछ जे नजरुल पूर्णता एवं दोषहीनताक मूर्ति छलाह, तथापि अपन परिवार एवं पत्नीक हेतु हिनक अविरल प्रेम आओर चिन्ता असंदिग्ध छलैन्हि। एही भाँति शारीरिक असमर्थता एवं अन्य असुविधाक अछैत प्रमिलाक आजीवन अटूट पतिभक्तिकेँ दुर्लभ प्रेम तथा स्नेहक गाथा बुझबाक थिक।

ई सभ तँ छलैक, किन्तु हुगली स्थित एहि नव परिवारकेँ तत्काल आओर किछु वस्तुक आवश्यकता छलैक, अर्थात् परिवारक पालन लेल अर्थक उपलब्धि। ज्ञातव्य जे नजरुलक आर्थिक स्थिति कहिओ नीक नहि छलैन्हि। पोथी एवं लेखनादिसँ प्राप्त होमयबाला राशि बड़ कम होइत छलैक। एकरा संगहि ई छलाह मुक्तहस्त। कलकत्तासँ पाहुनक धरोंहि लागले रहैत छलैन्हि। हुनकालोकनिक खूब स्वागत-सत्कार होइत छल आ एहि लेल चाही आओर बेशी टाका। संगीत, सौजन्यपूर्ण गोष्ठी आओर आनन्दोत्सवक एक दोसरो पक्ष छलैक : व्ययाधिक्यक कारणेँ आर्थिक कठिनता। १९२५ ई०क

अन्तिम कालमे अवस्था आओर खराप भऽ गेल छलैक। एक दिशि आर्थिक असुविधा ओ दोसर दिशि वेर-वेर मलेरियाक प्रकोपसँ नजरुलक अस्वस्थता। ओहि समय नजरुलक पुरान मित्र मुजफ्फर अहमद रेगुलेशन तीनक अधीन कारावासमे छलाह। तेँ कृष्णगढ़क मित्रगण—विशेषरूपेँ स्वर्गीय हेमन्तकुमार सरकार—नजरुलकेँ (संभवतः ३ जनवरी १९२६ ई०) सपरिवार अपना ओहिठाम चल अएबाक आग्रह कएलथिन्ह।

किन्तु, उपरिलिखित असुविधा सभक अछैत, हुगलीवासक ओ अवधि राजनीतिक गतिविधि एवं काव्यरचनाक दृष्टिसँ विपन्न नहि छलैक। जेलसँ मुक्त भेला उत्तर जखन गांधीजी वंगालक भ्रमण पर आएल छलाह तखन एहीठाम नजरुलकेँ हुनक प्रथम ओ अन्तिम दर्शन भेल छलैन्हि। गांधीजीक प्रति नजरुल पूर्ण मुक्तहृदय नहि छलाह तथापि हुनकासँ उदासीनो नहि छलथिन्ह। ओहि दर्शनक प्रतापेँ 'चर्खागीत' एवं अन्य स्वागतपूर्ण रचना संभव भेल छलैक। 'चर्खागीत' गांधीजीकेँ वड़ पसिन्न भेल छलैन्हि। पुनः चित्तरंजन दासक मृत्युपर ओहिकाल किछु आओर मार्मिक एवं स्वतःस्फूर्त रचना भेल छलैक, जे साहित्यिक एवं संगीतात्मक दृष्टिसँ उच्च कोटिक छैक। (१९२५ ई०क २२ जूनकेँ) दार्जिलिंगमे देशबन्धुक देहान्त भऽ गेल छलैन्हि। समस्त वंगाल शोकसंतप्त ओ आकुलव्याकुल छल। नजरुलक लेल तँ ई व्यक्तिगत वज्राघात सदृश छल, कारण जे दास-परिवारसँ हिनका वड़ निश्छल स्नेह ओ प्रोत्साहन भेटैत छलैन्हि। हुनका प्रति शोक-निवेदनार्थ नरुजल अनेक कविता रचलैन्हि। पछाति ई कवितासभ 'चित्तनामा' काव्य-संग्रहमे प्रकाशित भेलैक। ओही अवधिमे 'झाड़' शीर्षक एक दीर्घ कविता सेहो रचित भेलैक, जे पश्चात् 'विषेर वाँसी' पोथीमे संगृहीत भेल। आओर नजरुलक राजनीतिक विचार एवं कार्यकलापकेँ प्रत्यक्षतः प्रभावित करऽवला तेसर वज्रप्रहार भेलैक १९२५ ई०क अन्तमे।

एक लेखकक रूपमे नजरुल इस्लाम १९२१ ई०क आरंभहिसँ रूसक समाजवादी पद्धति एवं विचारधारा दिशि आकर्षित छलाह। एहि मूलमे छलैक हिनक स्वाभाविक आदर्शवादिता तथा "स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व" भावनाक प्रति दृढ़ प्रेम। ओहि समय धरि भारतमे वहुत कम लोककेँ रूसी पद्धति अथवा साम्यवादी सिद्धान्त तथा व्यवहारक प्रत्यक्ष ज्ञान छलैक। तथापि साम्यवादक उदार विचारधारा अनेक आदर्शवादी भारतीय युवाजनक कल्पनाकेँ अनुप्रेरित कऽ चुकल छलैक। नजरुल आओर मुजफ्फर अहमद, जे

काव्यसाहित्यक माध्यमसँ एक दोसराक निकट आबि चुकल छलाह, राजनीतिक विचारसाम्य एवं जनसामान्यक प्रति आन्तरिक प्रेमक कारणेँ आओर बेशी निकट भऽ गेलाह। भारतमे साम्यवादक स्थापना हेतु प्रयत्न करबाक विषयमे नजरुल अपन मित्र अहमदसँ सहमत भऽ चुकल छलाह। मुजफ्फर अहमद दृढ़ संकल्प एवं स्थिर चित्तक व्यक्ति छलाह। ई प्रायः १९२२ सँ 'कम्युनिष्ट पार्टी आफ इण्डिया' क गठन लेल कार्यरत छलाह। मार्क्सवादी साहित्यक अध्ययनद्वारा एकर सिद्धान्त एवं व्यवहारक परिचय प्राप्त करबाक सुविधा यद्यपि नजरुलकेँ छलैन्हि, तथापि हिनक प्रकृति एकर सैद्धान्तिक समीक्षा आओर नियमित रूपेँ संगठनात्मक कार्य करबाक अनुकूल नहि छल। संगहि चतुर्दिक् व्याप्त स्वातंत्र्य-संग्राम तथा काव्य-संगीतमे सहज रुचिक कारणेँ हिनका समयाभाव सेहो छलैन्हि। 'धूमकेतु' मे प्रकाशित रचनासँ स्पष्ट होइछ जे एहि दिशि ई स्वतःस्फूर्त भावनासँ अनुप्रेरित भेल छलाह। कोनो भौतिक साम्यवाद—सर्वहारावर्गीय सिद्धान्तसँ हिनका अधिक अनुप्राणित करएवाला छल क्रान्तिकारी राष्ट्रीयता एवं जनतांत्रिक क्रान्तिवाद। ई काल नजरुल एवं अन्य स्वतंत्रताप्रेमी देशवासी लेल घोर परीक्षाक काल छल। बारदोली प्रस्तावक समयसँ राजनीतिक क्षेत्रमे प्रारंभ भेल उत्साहहीनता, जकरा स्वराजी आन्दोलन संसदीय विरोधक कार्यक्रम द्वारा रोकबामे असमर्थ छल, नजरुल एवं अन्य उत्सुक व्यक्तिकेँ अपना स्थितिक पुनःपरीक्षण करबाक लेल प्रेरित कऽ देने छलैन्हि। अस्तु, ई लोकनि समाजवादक समर्थक अवश्य छलाह। 'चर्खागीत' एवं देशबन्धुक मृत्यु पर अन्य गीतसभक निश्छल रचयिता नजरुल एक समय हेमन्त कुमार सरकारक संग समाजवादी दलमे सम्मिलित होएबाक लेल समुद्यत देखल गेल छलाह। १९२५ ई०क नवम्बर मासमे 'लेबर स्वराज पार्टी आफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रस' क स्थापना भेलैक। साम्यवाद-समर्थक ई मजदूर स्वराज पार्टी बंगालमे अपना कोटिक प्रथम संगठन छल। स्थापनाक एक मासक बाद (१९२५ ई०क २५ दिसम्बर) एहि दलक अपन पत्र 'लांगल' प्रारंभ भेलैक। नजरुल छलाह एकर मुख्य लेखक आओर वास्तविक सम्पादक। 'धूमकेतु' सदृश 'लांगल' क प्रथम अंकमे रवीन्द्रनाथक एक पद्य प्रकाशित भेलैक, जाहिमे एहि पत्रक एक स्वत्वपूर्ण शक्ति होएबाक शुभकामना छलैक। ई प्रथम अंक एक दोसर कारणसँ सेहो अविस्मरणीय भऽ गेल छैक। एहीमे प्रकाशित भेल छलैक नजरुलक 'सर्वहारा' कविता-माला—प्रत्येक कविता विशेष उपशीर्षकक अधीन—यथा 'ईश्वर', 'मनुष्य', 'पाप', 'वेश्या', 'नारी' आओर 'मजदूर'। ई युगान्तकारी घटना छलैक कारण,

'सर्वहारा' क सम्मानमे सर्वप्रथम ई कविता रचित भेल छलैक जाहिमे एहि वर्गकेँ काव्यात्मक संज्ञा 'सर्वहारा' देल गेल छलैक। ई कविता थिकैक अन्यायक ऊपर क्रोधाग्निपूर्ण प्रहार आओर एकरा बुझबाक थिक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादक अपेक्षा व्यावहारिक आदर्शवादक सुन्दर व्याख्या। मनुष्यक महिमाक गुणगानक कवितक रूपमे ई सदा स्मरणीय रहतैक। नजरुल जखन सपरिवार कृष्णगढ़ जएबालेल छलाह तखन 'लांगल'क दोसर अंकमे (१९२५ ई०क जनवरी) 'कृषकेर गान' तथा तेसर अंकमे 'सव्यसाची' प्रकाशित भेलैक। एहि सभ उच्च कोटिक कविताक कारणेँ 'लांगल' केँ खूब सफलता भेटलैक। 'धूमकेतु'क तुलनामे 'लांगल' किछु कम उग्र छलैक किन्तु रोकरा अपेक्षा अधिक स्पष्ट आओर मुखर रूपसँ सुविधाहीन कृषक, मजदूर आओर अन्य सभ शोषितजनक पत्र छलैक। दोसर ध्यान देबाक बात ई जे 'लांगल' नजरुलक अपन पत्र नहि छलैन्हि, ई एक राजनीतिक दल—मजदूर स्वराज पार्टी—क मुखपत्र छलैक। ओहि समय एहि पार्टीक कार्यालय ३७, हरिसन रोड (वर्तमान महात्मा गांधी पथ)मे छलैक। नजरुलक कृष्णगढ़ आवासकालमे इएह 'मजदूर स्वराज पार्टी' यथासमय बंगालमे साम्यवादी दलक रूपमे संगठित भेलैक।

१९२६ ई०क जनवरी मासमे नजरुल कृष्णगढ़ गेलाह। स्थानीय युवक तथा हेमन्तकुमार सरकार सदृश प्रगतिशील विचारक लोकद्वारा हिनक हार्दिक स्वागत भेलैन्हि। सरकार महोदय बंगाल विधान मंडलक स्वराजी सदस्य छलाह। ई सुभाष चन्द्र बोसक कालेजक मित्र सेहो छलथिन्ह। ओहि समय सुभाष १८१८ ई०क रेगुलेशन तीनक अधीन मांडले (बर्मा) जेलमे विना मोकदमाक बन्दी छलाह। हेमन्तकुमार सरकार छलाह भूतपूर्व प्रोफेसर, युवानेता आओर साहित्यिक अभिरुचिक व्यक्ति। ई स्वराज्य आंदोलनकेँ वास्तवमे जनोन्मुख बनाबऽ चाहैत छलाह। जखन मुजफ्फर अहमद कारागृहमे छलथिन्ह तखन नजरुलक कठिन समयमे सरकार हिनक मित्र बनलथिन्ह आओर दूनू मित्र राजनीतिक क्षेत्रमे कार्य करबाक लेल सहमत भेलाह। सरकार महोदय एवं कृष्णगढ़क अन्य मित्रगण ओतए अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक समारोहक योजना बनओने छलाह जाहिमे नजरुलक महत्वपूर्ण भूमिका होमएबाला छलैन्हि। 'निखिल बंगाल कृषक कांग्रेस' ६-७ फरवरी १९२६ ई०केँ होमएबाला छलैक। कृष्णगढ़मे प्राप्त चिकित्सा-सेवाक फलस्वरूप नजरुल अल्पकालहि स्वास्थ्य-लाभ कऽ कांग्रेसक काजमे लीन भऽ गेलाह। स्वाभाविक छलैक जे एहि अधिवेशनक उद्घाटन-गान 'श्रमिकेर गान' नजरुलक

होइन्ह । कृषक कांग्रेसक अधिवेशनक फलस्वरूप 'बंगाल पीजेन्ट्स एण्ड वर्कर्स पार्टी' (बंगाल कृषक ओ मजदूर दल)क स्थापना भेलैक । बंगालमे साम्यवादी संगठनक लेल ई प्रेरणा-स्रोत सिद्ध भेलैक । कोनो आश्चर्य नहि जे आब 'लांगल'क नाम बदलि कऽ 'गणवाणी' (२५ दिसम्बर, १९२६) भऽ गेलैक । ई मार्क्सवादक प्रथम उद्घोषित मुखपत्र छलैक । 'गणवाणी'मे नजरुलक कोनो मुख्य भूमिका नहि छलैन्हि । जेलसँ छुटलाक बाद मुजफ्फर अहमद पत्रक प्रभार ग्रहण कऽ चुकल छलाह । नजरुलक अभिरुचि छलैन्हि सरस साहित्यिक पत्र ओ पत्रकारितामे, आओर 'गणवाणी' बनि गेल छलैक मार्क्सवादी सिद्धांत एवं राजनीतिक व्याख्याता ।

कृष्णगढ़मे होमएबाला सम्मेलन सभक समय १९२६ ई०क मइ मासमे निर्धारित छलैक । किन्तु एही साल अप्रैल मासमे कलकत्ताबीच हिन्दू-मुसलमानक दंगा शुरू भऽ गेलैक । ई अपना कोटिक नव स्वरूपक दंगा छलैक—भयंकर आओर पैशाचिक—जे किछु कालक अन्तर पर प्रारम्भ भऽ जाइक आओर फेर ओही भाँति भयंकर रूपमे । धन-जनक क्षतिसँ पैघ बात ई भेलैक जे हिन्दू-मुसलमानक बीच पत्र-पत्रिका द्वारा जानि बूझि कऽ घृणा-पूर्ण विषाक्त वातावरण उत्पन्न कएल गेलैक । एकरा पाछू उद्देश्य छलैक साम्प्रदायिक भावनाकेँ जाग्रत कऽ क्षुद्र व्यावसायिक हित साधब । दंगासँ उत्पन्न पारस्परिक अविश्वास-विद्वेष तुरंत समाप्त नहि कएल जा सकलैक—बादहुमे नहि, जे परवर्ती घटनासँ स्पष्ट होइछ । नजरुल धरि अपन लेखनीक उपयोग साम्प्रदायिक भावनाक विरुद्ध करैत रहलाह । आ ई अन्तकाल तक हिनक जीवन एवं कर्मक लक्ष्य बनल रहल । नजरुलक व्यंग्यलेखन, देशभक्ति एवं हिन्दू-मुस्लिम सम्प्रदायक बीच सौमनस्य-सामंजस्य लेल हार्दिक निवेदन निरंतर जारी रहल । ओहि ग्रीष्म-ऋतुमे कृष्णगढ़क क्षितिज कलह-विद्वेषक धूमिल मेघसँ आच्छन्न छल । एकरा फलस्वरूप जे अधिवेशन भेलैक ताहि पर प्रभाव छलैक बहुसंख्यक हिन्दूक आओर जनिक राष्ट्रीयताक सिद्धांत 'मुस्लिम पृथक्तावाद' आओर 'मुस्लिम सम्प्रदायवाद'सँ धूमिल भऽ चुकल छलैक । एहि अस्तव्यस्त साम्प्रदायिक वातावरणसँ पृथक् रहि नजरुल किछु सर्वोत्तम गीत-रचना कएलन्हि, जाहिमे देशभक्ति एवं स्वाधीनताक महिमामय स्वर मुखरित भेलैक । कृष्णगढ़मे आयोजित अधिवेशन-समारोह एही गीतसभसँ उद्घाटित होइत छलैक ।

बंगलामे राष्ट्रीय गीतक भांडार भरल ओ महिमापूर्ण छैक, किन्तु प्रेरणा-

प्रद प्रभविष्णुता एवं स्पंदनशील लयतानक दृष्टिसँ सम्भवतः एहन कोनो वस्तु ओहिमे नहि छैक जेहन 'कंदरी हुसियार' छैक। राजनीतिक सम्मेलनक वार्षिक अधिवेशन एही गीतसँ प्रारम्भ भेल छलैक—

दुर्गम गिरि कांतार मरु दुस्तर पारावार
लांघिते हबे रात्रि निशीथे, यात्रीरा हुसियार।

[दुस्तर छैक पहाड़, कांतार आओर मरुभूमि आ छैक दुस्तर अनंत-अथाह सागर। तथापि एहि अंधकारपूर्ण निशीथमे पार करबैक अछि—यात्री लोकनि भऽ जाउ होशियार।]

किछु बेशी अवज्ञापूर्ण किन्तु प्रभावक दृष्टिसँ समान प्रेरणाप्रद एवं महिमामय छलैक अन्य दू समवेतगान जाहिमेसँ एक छैक ओ, जे छात्र-सम्मेलनक उद्घाटन-काल स्वयं नजरुलक नेतृत्वमे गाओल गेलैक। ई अभियान-गीत थिक। आरम्भिक पाँती एहि तरहक छैक :—

आमरा शक्ति, आमरा बल
आमरा छात्र-दल।

[हम विद्यार्थी समुदाय शक्ति ओ बल छी।]

आगूक तेजोमय पौरुषपूर्ण पंक्तिक्रमक अनुवाद सम्भव नहि छैक। युवा समवेतगान किछु दृष्टिमे छात्र-सम्मेलनक गानसँ अधिक उत्साहवर्द्धक छैक। एकर प्रारम्भ आह्वानात्मक छैक—

चल, चल, चल
ऊर्ध्वगगने बाजे मादल,
निम्ने उतला धरणीतल,
अरुण प्रातेर तरुण दल
चल रे चल रे, चल।

[महाभियान, महाभियान, महाभियान
ऊर्ध्वाकाशमे निर्घोषित निसान
निच्चाँ धरतीतल-उद्वेलन
हे अरुण प्रातक तरुण दल
आगू बढ़ू, आगू बढ़ू, आगू बढ़ू।]

ई तीनू राष्ट्रीय गीत, आओर किछु नहि तँ, नजरुलकेँ राष्ट्रकवि आओर कृष्णगढ़क आवासकालकेँ सतत स्मरणीय बनएबाक लेल पर्याप्त छैक। मुदा

तत्कालीन परिस्थिति एतेक-निराशापूर्ण छलैक जे क्रियाशीलता एवं संघर्षक प्रेरणा देवाक दृष्टिमे एहू भाँतिक ओजस्वी आह्वान निष्प्रभ रहलैक। साम्प्रदायिक स्थिति बड़ दुखद एवं दुस्सह छलैक। एकर गम्भीरताक आकलन कऽ नजरुल साम्प्रदायिक सौमनस्य तथा सामंजस्यक हेतु अपन प्रयत्न कहियो शिथिल नहि होमए देलथिन्ह। ई, गद्य वा पद्यमे, जे किछु लिखलैन्हि से हृदयविदारक करुणा-पीड़ासँ परिपूर्ण छैक। एहि कालक ई रचना सभ बंगवासीक लेल गौरवपूर्ण संगहि खेदजनक संपत्ति थिकैक—ओहि बंगवासीक जे बीस सालक पश्चात् खंडित-भंजित भऽ गेल। एहि अविस्मरणीय रचना-समूहमे छैक 'हिन्दू-मुस्लिम युद्ध', व्यंग्यात्मक निबंध 'पथेर दिशा' आओर 'मंदिर ओ मस्जिद'—सभ गद्य रचना।

एहि ठाम मोहित मजुमदार आओर नजरुलक बीच उत्पन्न भेल विवादक प्रसंग एतवे संकेत कऽ देल जाइछ जे ई विवाद आब दू साहित्यिक पत्रिका 'शनिवारेर चीठी' आओर 'कल्लोल'क पृष्ठ सभक मध्य बंद छैक, जाहि पर तत्कालीन साम्प्रदायिक कटुताक प्रभाव सेहो पड़ल छलैक।

नजरुलक हेतु ई कालावधि बड़ अकरुण-निर्दय सिद्ध भेल छलैन्हि। तथापि साहित्यिक साफल्यक संग एकर किछु अन्य आनन्दकर प्रसंग सेहो छलैक। ज्येष्ठ पुत्र बुलबुलक जन्म कृष्णगढ़मे भेल छलैक। नजरुलक भाग्याकाशमें ई घटना प्रकाशरेखा सदृश छलैन्हि, यद्यपि बुलबुल बाल्यावस्थहिमे कालकवलित भऽ गेलाह। ई नजरुलक हेतु बड़ पैघ दुर्भाग्याघात छलैन्हि। एहिकाल ई राजनीतिक आन्दोलनमे खूब संलग्न छलाह। वित्तीय स्थिति नीक नहि छलैन्हि आ नहि छलैक एहिमे सुधारक कोनो संभावना। 'दारिद्र्य' एही कालक रचना थिक। निराशा आओर विद्रोहक भावनासँ परिपूर्ण ई एक विलक्षण रचना छैक। निराशा एहि कारणसँ जे घोर दारिद्रय हिनक 'आत्माक आनन्दक स्रोत'केँ शुष्कप्राय करबाक लेल छलैन्हि आओर विद्रोह एहि अर्थमे जे ई 'स्रोत' बंद नहि भऽ एकर विपरीत प्रदाहपूर्ण प्रखर प्रवाहमे परिवर्तित होमएबाला छलैक—से नजरुल ललकारि कऽ घोषित कएने छलाह। तथापि कम-सँ-कम ई रचना एतवा तँ अवश्य संकेत करैछ जे स्थिति बड़ निराशापूर्ण छलैन्हि आओर कृष्णगढ़मे रहैत एहि स्थितिमे सुधारक कोनो सम्भावना नहि छलैक। कृष्णगढ़मे नजरुल गरीबगुरबाक धीयापुताक हेतु एक प्राथमिक स्कूल स्थापित कएने छलाह। ओतहि हिनका द्वारा 'कम्युनिष्ट इन्टरनैशनल'क सर्वप्रथम बंगलामे अनुवाद सेहो भेल छलैक। जे हिनक मित्रगणकेँ 'इन्टर-

नैशलन'क धुनिक स्वरलिपि नहि ज्ञात छलैन्हि, तें ई अनुवाद गेय नहि भऽ सकलैक।

हुगली-आवासक प्रायः अढ़ाए वर्षक पश्चात् (१९२८ ई०क अंतमे) नजरुल कृष्णगढ़सँ सपरिवार कलकत्ता चल अएलाह। तखनसँ हिनक स्थायी आवास कलकत्तामे भऽ गेलैन्हि। प्रारम्भमे ई नगरक मध्यस्थित पानबाजार लेनमे रहैत छलाह। किछु दिनक बाद उत्तरी भागमे चल अएलाह। हिनक आगूक जीवन शामबाजार-बागबाजार इलाकामे व्यतीत भेल। हँ, प्रायः १९६० ई०मे कलकत्ताक पूर्वीय भागमे क्रिस्टोफार रोड क सी० आइ० टी०क मकानमे हिनका पुत्रक संग धाबऽ पड़लैन्हि।

कृष्णगढ़-आवासकालमे नजरुल राजनीतिक जीवनक चरम शीर्ष पर छलाह। एहीकाल साम्यवादी मित्रगणक घनिष्ठ सम्पर्कमे सेहो अएलाह। ई पार्टीक सदस्य नहि भेलाह आ एकर की कारण छलैक से जानब कठिन नहि। मार्क्सिस्ट सिद्धान्तमे हिनक रुचि नहि छलैन्हि आओर नहि छल हिनक क्षेत्र सामाजिक-आर्थिक प्रश्नक अध्ययन-परीक्षण। राजनीतिक वाद-विवाद दिशि हिनक आकर्षण कहियो नहि भऽ सकलैन्हि। हिनक साम्यवाद छल विशुद्ध मानवतावाद—शोषित-उपेक्षितक प्रति भावनापूर्ण घनिष्ठ प्रेम। आगू चलिकऽ स्पष्ट होएत जे ईश्वरेच्छामे हिनक विश्वास सेहो छलैन्हि। नजरुल कम्यूनिस्ट रहथि वा नहि; एतबा धरि स्पष्ट छलैक जे ई अपन देशवासी एवं देशक स्वाधीनताक प्रेमी छलाह आओर तें सस्ते ई 'जनगणक कवि'क रूपमे ख्यात भेलाह। संगहि, पूर्ण सत्य नहि रहलोपर, ई 'साम्यवादी कवि' सेहो मानल जाइत छलाह।

●

५. गगन-विहारी नजरुल

नजरुलक सृजनात्मक ऊर्ध्वगामिता तृतीय दशकक प्रारंभमे हिनका यद्यपि ज्ञात दिशामे लऽ आनलक, तथापि इष्ट प्रदेश एवं क्षितिज ताहिकाल धरि छलैक अज्ञात ओ अदृश्य । ई जाहि लोकमे प्रवेश करबाक लेल छलाह, से छलैक संगीतक लोक । ई साधिकार कहल जा सकैछ जे रवीन्द्रनाथ ठाकुर सदृश, नजरुल जन्महिसँ संगीतक लेल बीछल-छाँटल प्रतिभा छलाह । आ' एक अर्थमे कहल जा सकैछ जे संगीत बंगदेशक माटि-पानिमे सन्निहित-समाहित छैक । लोककथा एवं लोकगीतक दृष्टिसँ बंगालक एतेक सम्पन्न होएबाक कारणो इएह छैक । इहो ज्ञातव्य जे बंगला साहित्य लघु कथा एवं गीतक विधामे काव्यक अन्य विधाक अपेक्षा अधिक समृद्ध छैक । बंगलागान भारतीय संगीतक एक विशेष कोटिक रूपमे, सामान्य, सुनिश्चित एवं समानुरूप लक्षणसँ युक्त छैक; कथा सुन्दर शब्दावलीसँ युक्त तथा सुर एकर राग देशी (अशास्त्रीय) एवं कौखन मिश्र वा नवनिर्मित होइछ आओर प्रभविष्णुता एवं प्रस्तुतीकरणमे जनोन्मुख प्रकृति होइत छैक ।

ज्ञात अछि जे नजरुलक जीवन लोकगीत-सह-लोकनाट्यकंपनी—लेटोर दलसँ प्रारंभ भेल छलैन्हि । एहि कंपनीमे ई सुरसाधक, गायक आओर अग्रणी भऽ गेल छलाह । स्वयं कथा लिखि ओकरा उपयुक्त 'सुर'मे बन्हबाक कलामे प्रवीन होएबाक संग ई बाँसुरी एवं अन्य वाद्ययंत्र सहज रूपेँ बजबैत छलाह । एहि विषयमे हिनक अनुपम मेधा देखि सिरसोल राजक हाइ स्कूलक अध्यापक सतीशचन्द्र काजीलाल आकर्षित भेलाह । काजीलाल महोदयकेँ शास्त्रीय संगीतक नीक आधारभूत ज्ञान छलैन्हि। ओ बड़ खुशीसँ हिनका शास्त्रीय संगीतक प्रारंभिक शिक्षा देलथिन्ह । एहिसँ नजरुलक अप्रशिक्षित प्रतिभाकेँ दृढ़ आधार प्राप्त भेलैक । भविष्यमे ई नजरुलक सृजनात्मक प्रयासमे बड़ लाभकर सिद्ध भेलैन्हि । आसू चलिकऽ ई जखन करांचीमे छलाह, हिनका संगीतक विभिन्न शैलीसभक अभ्यास करबाक सुअवसर भेटलैन्हि । सेनाक जवान मित्रमंडलीमे नजरुल बड़ प्रियगर छलाह आओर ओतहि ई

किछ अशास्त्रीय देशी शैली—पंजाबी एवं अन्य धुनि—सिखलैन्हि। संगीतक अंतरंग तत्वकें सिखिकऽ आत्मसात् करवाक विलक्षणता हिनकामे खूब छल। नवगीतक लेखक, मस्त गायक तथा नवाविष्कृत राग-रागिनीमे गीतकें आवद्ध करवाक नैपुण्य होएबाक कारणें हिनक खूब स्वागत भेल। विभिन्न प्रकारक मण्डलीमे प्रवेश करवामे कविताक अपेक्षा अधिक सहायक साधक संगीत छलैन्हि। कलकत्ता एवं सम्पूर्ण वंगालमे हिनक लोकप्रियताक कारण इएह संगीत छल। हिनक कंठस्वर ततेक नीक नहि छलैन्हि। ओहिमे गंभीरता तँ छलैक, किन्तु संगीतात्मकता नहि! तथापि जाहि गुणसँ नजरुल लोककें मंत्रमुग्ध कऽ लैत छलाह, से छल हिनक ओजस्विता ओ उत्साह, नितांत सहज ढंग तथा प्रस्तुतिमे स्वाभाविक-नैसर्गिक प्राणवत्ता। जेना कि सभ उत्तम कलामे होइछ, हिनक गीतक अनिवार्य वैशिष्ट्य छल प्राणवत्ता एवं निश्छलता, पूर्ण टटकापन एवं मौलिक कल्पनाशीलता आओर अंतमे भावात्मकता, सुरुचिपूर्ण शव्दविन्यास तथा धुनिक विलक्षण समन्वय। एहि गुणसभक अभाव रहलापर नजरुलक गीतक प्रति वंगाली श्रोतासमुदायक, जे रवीन्द्र-गीतक अभ्यस्त छल, अनुकूल प्रतिक्रिया नहि होइतन्हि। नजरुलक एहि विलक्षण गुणक अनुभव कऽ रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिनका संगीतपीठ शान्ति-निकेतनमे आवि व्यवस्थित रूपें अभ्यास द्वारा अपना गुणक विकास करवाक परामर्श देने छथथिन्ह। तत्कालीन स्वतंत्रता-आन्दोलन एवं राजनीतिमे लिप्त स्वतंत्र प्रकृतिक नजरुलक हेतु ई प्रस्ताव स्वीकार करव संभव नहि भेलैन्हि। ओहि समय (१९२१-२३ ई०) राजनीतिक समारोह जे होइत छलैक, ताहिमे उपस्थित नजसमुदायकें नजरुल अपन विलक्षण गुणक वलें उद्वेलित कऽ दैत छलाह। १९२२ ई०सँ १९२८ ई० वीच रचित नजरुलक गीतक महत्त्व एवं सामर्थ्यक उल्लेख पाहिनहुँ भऽ चुकल अछि। एहि (राजनीतिक-राष्ट्रीय) गीत सभक अतिरिक्त हिनक अन्य कोटिक गीत सेहो द्रष्टव्य अछि 'प्रेम-गीत', 'प्रकृति-गीत', आदि। वंगाली गीत-संदनमे नजरुल वस्तुतः एक नवीन कक्षक गजल-संयोजन समारंभ कएने छलाह। 'गजल'क उद्गमस्थल थिकैक फारस। भारतमे एकर स्वीकृति उर्दू काव्य द्वारा भेलैक आ' हिन्दुस्तानी संगीत एकर एक वड़ दिव शैलीक विकास कएलक। वंगाली संगीतमे एकर प्रवर्तक कलाकार छलाह नजरुल इस्लाम। 'गजल'क विशुद्ध भावाभिव्यक्तिक उपयुक्त सुरकें आओर अधिक शक्ति प्रदान करबामे हिनक मधुर शब्दविन्यास-प्रेम वड़ सहायक सिद्ध भेलैक। १९२६ ई०मे वंगाली संगीतक क्षेत्रमे नजरुल एक सृजनात्मक कलाकारक रूपमे स्वीकृत भऽ चुकल

छलाह। १९२८ ई० आबैत-आबैत हिनक संगीतविषयक क्षमता निस्संदेह प्रतिष्ठित भऽ गेलैन्हि। नजरुलक प्रथम गीत-ग्रन्थ 'बुलबुल' दिसम्बर १९२८ ई०मे प्रकाशित भेलैन्हि। एकरा तुरत बाद १९२९ ई०मे 'चोखेर चातक' आओर १९३०ई०मे 'नजरुल-गीतिका'क प्रकाशन भेलैक। एहि गीत सभक प्रचार समस्त बंगालमे द्रुत गतिसँ भेलैक। आब नजरुल सूक्ष्म रम्य आकाश दिशि ऊर्ध्वगमन कऽ चुकल छलाह—(आंग्लकवि) शेलीक स्काइलार्क सदृश भऽ चुकल छलाह 'गगनविहारी'।

एहि विकासक्रमक छैक एक निश्चित पृष्ठभूमि। १९२८ ई० धरि गद्य-पद्य रचना सभसँ प्राप्त राशिक कारणेँ नजरुलक वित्तीय स्थितिकेँ सम्पन्न नहि कहल जा सकैत छल। एहि काल, किछु दिन पूर्व, एक ब्रिटिश ग्रामोफोन कंपनी भारतमे व्यापक बाजार-क्षेत्रकेँ छानि रहल छल आओर एहिसँ कम्पनीकेँ क्रमिक लाभ भऽ रहल छलैक। कलकत्ताक रेडिओ कंपनी लड़खड़ाइत चलि रहल छलैक। ई छल एक निजी व्यवसाय। आ' तथाकथित 'फिलमी संगीत'क अस्तित्व प्रायः नहियेँ जकाँ छलैक।

ब्रिटिश ग्रामोफोन कंपनी 'विद्रोही कवि' क गीतमे अन्तर्निहित राजनीतिक दृष्टिसँ अवगत छल। कम्पनीकेँ नजरुलक साम्राज्यविरोधी अभिनाक कारणेँ हिनका प्रति किछु दुराग्रह सेहो छलैक। तथापि तीक्ष्ण व्यावसायिक बुद्धि एवं लाभ भावनासँ प्रेरित भऽ ब्रिटिश कंपनी एहि दुराग्रहकेँ त्यागि देलक।

बात ई भेलैक जे प्रसिद्ध गायक स्वर्गीय हरेन घोष कंपनी (हिज मास्टर्स भ्वाइस) द्वारा निर्मित एक रेकार्डमे नजरुलक दू गोट गीत भरबओने छलथिन्ह। किन्तु कंपनीकेँ ई ज्ञात नहि छलैक जे गीत नजरुलक थिकैन्हि। ई रेकार्ड व्यावसायिक दृष्टिसँ बड़ सफल भेलैक। आब ई स्वाभाविक छलैक जे एच० एम० भी० एहि विषयमे आओर संभावनाक जिज्ञासा करैक। शीघ्रे कंपनी नजरुलक गीतक रेकार्ड बनबऽ लागल। गीतक गायक रहैक कंपनीक वेतन-भोगी कलाकार, मुदा पछाति काल नजरुल स्वयं गाबऽ लगलाह। पुस्तकादिमे प्रकाशित रचनाक तुलनामे रेकार्डसँ प्राप्त आय बेशी होइत छलैक। नजरुल एवं हिनक गीतक रेकार्डक लोकप्रियतासँ प्रभावित भऽ कंपनी आब हिनका नियुक्त कऽ लेलकैन्हि। आब नजरुलक प्रति आदर, सम्मान आओर श्रद्धाक व्यवहार सेहो होमए लागल। स्वयं नजरुलकेँ कंपनीसँ संबद्ध होएब नीक लगलैन्हि। एकर कारण ई जे संगीत तँ नजरुलक सर्वाधिक प्रिय विषय

छलैन्हिए; निरंतर छलनामयी लक्ष्मीक सेहो अपेक्षा हिनका रहैत छल। हिनक नियोजकक विचार ई जे नजरुल कंपनीक संगीत-शिक्षक उस्ताद जियाउद्दीन खानसँ नीक जकाँ प्रशिक्षण-परामर्श लेथि। स्वयं नजरुल एहि सुयोगसँ लाभान्वित होएबाक लेल उत्सुक छलाह। खान महोदयसँ शास्त्रीय संगीतविषयक पूर्ण ज्ञान प्राप्त करबामे हिनका विलम्ब नहि भेलैन्हि। गुरु ओ शिष्यक मध्य एतेक ने घनिष्ठ संबंध स्थापित भऽ गेलैन्हि जे ई अपन गीतक पोथी 'बनगीत' उस्ताद जियाउद्दीनक नामेँ समर्पित कएलथिन्ह। एहि संगीत-विद्यामे नजरुल आब एतेक प्रवीण भऽ गेलाह जे उस्ताद जियाउद्दीनक मृत्यूपरान्त एच० एम० भी० कंपनी हिनका प्रशिक्षक तथा मुख्य स्वरकारक पद देलकैन्हि। आब अन्य ग्रामोफोन कंपनी, रेडियो तथा फिल्म-निर्माता सभ हिनक सेवा अर्जित करबाक उद्देश्यसँ आगू-पाछू करऽ लागल।

नजरुल अपन पद एवं आयक नीक जकाँ उपयोग कएलन्हि। एहि अवधिमे हिनक भाग्य आओर कर्मशीलता मध्य सुखद सामंजस्य छल। शीघ्रे एक नव चमचमाइत 'व्राइस्लर' मोटरगाड़ी कीनल गेल। ओहि समय कोनो कलाकारक हेतु मोटर कीनब ऐश-मौज कहल जा सकैत छल। नजरुलक मित्र-मंडली ओहि मोटरगाड़ीपर खूब सैर-सपाटा करथि आ सबसँ बेशी आनन्द तँ होइन्ह स्वयं वाहनक स्वामीकेँ। सामान्यतः आर्थिक दृष्टिसँ विपन्न रहलो पर जे नजरुल औदार्य, मस्ती आओर सौजन्यक लेल विख्यात छलाह, तनिका हेतु आब भोज आओर आनन्द-मोदमय पार्टीक आयोजन करबाक इच्छा होएब स्वाभाविक छल। से जा धरि एक-एक पाइ निःशेष नहि भऽ गेलैन्हि, ताधरि भोज-मौजक क्रम चलिते रहल। नजरुलकेँ एहूसँ बेशी धनार्जन करबाक स्वक्षमता पर विश्वास छलैन्हि।

किन्तु दैवदुर्विपाकसँ ई सौभाग्यक काल बड़ संक्षिप्त रहलैन्हि। सर्वप्रथम सभसँ दुखद वज्राघात छल हिनक मात्र साढ़े तीन वर्षक ज्येष्ठ पुत्र 'बुलबुल'क चेचकसँ आकस्मिक निधन (७।८ मइ, १९३४)। विलक्षण प्रतिभासँ सम्पन्न ई बालक परिवार भरिक लेल परम प्रियपात्र छल। एहि दुखद घटनासँ कवि पिताक जीवनक्रम भग्न भऽ भेलैन्हि। वस्तुतः एहि शोकाघातसँ ई कहिओ नहि उबरि सकलाह। आगू चलि कऽ नजरुलक जीवन एवं कृति पर एकर अमिट प्रभाव देखल जा सकैछ। यद्यपि हिनक सृजनात्मक क्षमतामे कोनो गुणात्मक ह्रास नहि भेलैन्हि, तथापि आब ई क्षमता अन्य पथ तथा दुरूह दशोन्मुख भऽ गेलैक। नजरुल मृत्यु एवं परलोकसँ संबंधित प्रश्न तथा धर्म

एवं तंत्र-मंत्र दिशि आकृष्ट भऽ गेलाह । तथापि संगीतसँ हिनक संबंध ताधरि बनल रहल, जाधरि १९४२ ई०मे हिनक स्वास्थ्य पूर्णरूपेण नष्ट नहि भऽ गेलैन्हि ।

नजरुलक संगीतात्मक प्रतिभाक सद्यस्ता एवं उर्वरता यद्यपि हिनक नियोजक कंपनीक लेल सतत लाभकर सिद्ध भेल, तथापि एक अर्थमे, इएह गुण ओहि परिस्थितिमे हिनका अपना हेतु ह्रासक कारण सेहो भऽ गेलैन्हि । एक दिशि बुलबुलक मृत्युक वज्राघात आओर दोसर दिशि कम्पनीक निरंतर बढ़ैत कार्यभार; एहिसँ कौखन रेकार्डमे गीतक स्तर मध्यम कोटिक होमए लागल छलैक । दोसर बात ई भेलैक जे रेकार्डक संख्यामे निरंतर होइत वृद्धिक कारणेँ स्वयं नजरुल आओर कम्पनी स्तर दिशि ध्यान नहि दऽ सकलाह । संगहि बिक्री भेल रेकार्ड सभक संरक्षणक प्रश्न तँ दूर रहल, एकर सूची पर्यन्त प्रस्तुत नहि कएल गेलैक । तेँ नजरुलद्वारा लिखित एवं सुरसाधित लगभग ३५०० गीतमेसँ अधिकांश, लगभग २०००क पता असंभव भऽ गेल छैक, यथा—'बुलबुल' (१९२८ ई०), 'चोखेर चातक' (१९२९ ई०), 'नजरुल गीतिका' (१९३० ई०), 'गुलबगीचा' (१९३३ ई०), 'जुलफिकार' (१९३२ ई०), 'सुर महल' (१९३४ ई०), 'गीति-शतदल' (१९३४ ई०), 'गानेर माला' (१९३४ ई०), आदि-आदि । लोकप्रिय राष्ट्रीय गीतकेँ छाड़ि अन्य सभ प्रायः विस्मृत भऽ गेलैक । नजरुलक गीतक पूर्ण संकलन करबाक एखन धरि जे प्रयास भेलैक अछि से व्यवस्थित रूपेँ नहि, आ' जँ-जँ कालक्षेप भऽ रहल छैक तँ-तँ ई कार्य कठिन भेल जाइछ । एहि दिशामे अजहरुद्दीन खान बड़ कठिन एवं प्रशंसनीय प्रयत्न कएने छलाह । प्रत्येक गीतक प्रथम पाँतीक शब्दावली दैत प्रायः १६००-१७०० गीतक सूची प्रस्तुत कएल गेल छलैक । एहि सूचीकेँ आओर पूर्ण करबाक पुनः कोनो प्रयास नहि भेलैक अछि ।

नजरुल-रचित गीतक परिमाणाधिक्य (३५००) तँ अछिए, वैविध्य सेहो विस्मयकारी छैक । एही रूपेँ छैक विषय-वस्तुक बाहुल्य तथा रागक विस्तार । नजरुलक गीतक विषयवस्तुगत विभाजन अधोलिखित श्रेणीमे कएल जाइत छैक :—

१. 'स्वदेशी गान' : एहिमे सम्मिलित छैक सार्वजनिक जीवनसँ संबंधित गीत अर्थात् स्वाधीनता-संघर्षपरक राष्ट्रीय गीतक संग-संग राजनीतिक-सामाजिक विषयपर रचित गीत, यथा—'कृषकेर गान', 'श्रमिकेर गान' एवं अन्य गीत ।

२. 'प्रेम-गीत' : वा प्रणय-गीत, जाहिमे 'गजल' विशिष्ट कोटिक वस्तु छैक।

३. 'प्रकृति-गीति' : एकरा अन्तर्गत आबैछ साधारणतः प्रकृति-संबंधी गीत।

४. 'अध्यात्म-गीति' : अथवा आध्यात्मिक विषयपर रचित गीत, जे पुनः विभिन्न प्रकारक छैक, यथा, सामान्य निवेदनात्मक, शक्ति वा वैष्णव संबंधी, इस्लाम धर्मसँ सम्बद्ध वा रहस्यभावनासँ युक्त (सूफी, वेदान्तिक आदि) गीत।

५. 'कौतुक-गीति' : लोकप्रिय हास्यगीत, जे पुनः व्यंग्य-पूर्ण (राजनीतिक वा सामाजिक) वा सामान्यतः हास्यपूर्ण गीत।

६. 'विविध गीति' : वा विविधविषयक एहन गीत सभ जे श्रेणीनिबद्ध नहि भऽ सकैछ।

नजरुलक गीत वा सामान्य रूपसँ 'बंगला गान'क रसास्वादन हेतु सौन्दर्य-शास्त्रक विद्वान अथवा संगीतकला आर संगीतक सिद्धान्तक ज्ञाता होएब आवश्यक नहि छैक; संगीत-विशेषज्ञ एवं समालोचक विशेष दृष्टिसँ ओकर अध्ययन-परीक्षण अवश्य करैत छथि, किन्तु सामान्य बंगवासी अथवा भारतवासीकेँ सेहो संगीतक आनन्दानुभव लेल छैक अपन स्तर एवं मूल्य जे अधिकांशतः खूब ठोस होइछ आओर एकरा संगहि नजरुलक गीतक रसास्वादन एवं विवेचनक अभिरुचि-क्षमता सेहो छैक। बंगलामे शास्त्रीय आओर लोकप्रिय राग-धुनिपर आधारित पर्याप्त गीत छैक। आधुनिक कालमे रवीन्द्रनाथ ठाकुर एवं द्विजेन्द्र लाल राय सदृश कविक अवदानस्वरूप एकर खूब समृद्धि भेलैक अछि। एहि क्षेत्रमे नजरुलक विशिष्ट योगदान छैन्हि अभियानगीत, जाहि विषय सुभाषचन्द्र बोसक उक्ति छलैन्हि जे एहि गीतमे निहित छैक 'देशभक्त योद्धाकेँ सीमा धरि उत्प्रेरित कऽ लऽ जएबाक क्षमता।' उदाहरणस्वरूप 'दुर्गम-गिरि कान्तार मरु', वा 'कारार ओइ लौह कपाट भेँगे फेल, करे लोपाट', वा 'एइ सिकल-परा छल आमादेर सिकल-परा छल', वा 'आमरा छात्रदल' वा 'ऊर्ध्वगगने बाजे मादल' आदिमेसँ कोनो गीतक स्मरण करबाक अर्थ थिक १९२० ई०-१९४७ ई०क मध्य अभियानोन्मुख राष्ट्रक ध्यान करब। नजरुल यदि एहि गीत सभक रचना एवं स्वर-बन्धन करबाक अतिरिक्त आओर किछु

नहिओ करितथि तथापि राष्ट्रीय गीत-लेखक गणक मध्य ई सर्वाधिक प्रेरणा-दायक आओर लोकप्रिय गीतकार रहितथि। हिनक रचित उच्च कोटिक अन्य गीत सभ सेहो समान रूपसँ महत्वपूर्ण छैक, यथा—'डोमीनियन स्टेटस', 'प्रैक्ट', 'दे गोरुर गा धुइए' आदि तीक्ष्ण व्यंग्ययुक्त गीत। ई गीत सभ पुस्तक-रूपमे मुद्रित होइतहि सरकार द्वारा प्रतिनिषिद्ध भऽ जाइत छलैक किन्तु मौखिक रूपसँ समस्त बंगालमे एकर प्रचार भऽ जाइक।

उपर्युक्त गीतसभक अतिरिक्त नजरुलक 'गजल'सँ बंगाली श्रोता द्वितीय दशकक मध्य भागमे पूर्णरूपेण अभिभूत भऽ चुकल छल। नूतन एवं अनुपम 'गजल' गीत मात्र नजरुलक सृजनात्मक शक्तिक विज्ञापक नहि छलैक, अपितु एहू बातक द्योतक जे, आवश्यकतानुसार बंगलाभाषामे कतबा कोमलता आओर लोच छैक। एहि सभ गीतमे काव्यात्मकता, सौन्दर्य तथा आकर्षण निश्चितरूपेण सन्निहित छैक, यथा—

'अमारे चोख इशाराय डाक दीए लाए कोन से दरदी,
एतो जल ओ काजल चोखे
बागीचाय बुलबुली तइ फूल-शाखाते
करुण केनो अरुण आँखि
केउ भोले ना केउ भोले'—आदि।

'जुलफिकार'क (१९३२ ई०) माध्यमसँ पार्थिवता एवं आध्यात्मिकताक नवीन स्वरक सभारंभ भेलैक आओर एहि संग्रहमे संकलित गीत सभक प्रेरणा-स्रोत छलैक इस्लाम धर्म। ई सभ गीत भक्तिपरक, निश्छल एवं गंभीर प्रकृतिक छलैक। प्रभावक दृष्टिसँ 'जुलफिकार' तीक्ष्ण ओ स्थायी सिद्ध भेलैक। हिनक ई आध्यात्मिक एवं धार्मिक भाव अनेक धारामे प्रवाहित भेल छलैन्हि—हिन्दू आओर मुसलमान दूनू। तृतीय दशकमे नजरुलक मुख्य अवदान छलैन्हि इएह भक्त्यात्मक एवं रहस्यात्मक गीतपुंज। एहिमे सन्निहित छैक रूप एवं भाव तथा स्वर-संगमक विस्मयकारी वैविध्य। तथापि जीवन, उन्मुक्तता एवं हँसी-आनन्दक प्रति अदम्य उत्साह नजरुलमे अंतिमरूपेँ विक्षिप्तिग्रस्त होएबाक काल धरि बनल रहलैन्हि। हिनक 'चन्द्रविन्दु' शीर्षक गीत पुस्तक पर बहुत दिन धरि प्रतिबंध लागल छलैक। एहिमे संकलित व्यंग्य-विद्रूपपूर्ण गीत ब्रिटिश अधिकारीकेँ असह्य बूझि पड़लैक।

यदि सौन्दर्यानुभूतिक हेतु सूक्ष्म शिल्पगत ज्ञान आवश्यक हो, तखन नजरुलक गीतक दक्षतापूर्ण मूल्यांकन विशेषज्ञ, संगीत-समालोचक एवं विद्वान

लोकनिक हाथ छोड़ि देल जा सकैछ। किन्तु सामान्य जनसमुदाय, जाहिमे गंभीर संगीतप्रिय लोक सम्मिलित छथि, एहि गीत सभक उत्तमताक आनन्द-पूर्ण रसास्वादन बरोबरि करैत रहलाह अछि आओर इएह थिक कोनो कलाकृतिक उत्कृष्टताक सर्वस्वीकृत निकर्ष। गीतक वैशिष्ट्यक अनुभव ता धरि मात्र ओकर शब्दावलीसँ असंभव छैक जा धरि संगीतविशारद द्वारा ओ स्वरबद्ध नहि कएल जाइछ।

यदि पाठकगण उपयुक्त कलाकार द्वारा गाओल गीतक रेकार्ड मनोयगसँ सुनथि, तँ हुनक नजरुलक गीतक रसास्वादनपरक प्रयत्न निष्फल नहि होएतैन्हि—एहि लेल ओ लोलनि आश्वस्त रहथि। किछु रेकार्ड सम्प्रतिअहु उपलब्ध छैक। एहिक्रममे ईहो कहि देब अपेक्षित बुझना जाइछ जे शिल्प-वैशिष्ट्यक क्षेत्रमे नजरुलक प्रतिभाक मूल्यांकन असाधारण रूपेँ भेलैन्हि अछि। अपना गीतकेँ स्वरबद्ध बरबामे निश्चित रूपेँ हिनक मार्गदर्शक रहलैन्हि अछि हिनक सौन्दर्यक प्रति अन्तःप्रेरणा एवं सहजभाव। शास्त्रीय पद्धतिसँ निर्धारित प्रामाणिक नियमक कट्टरतापूर्वक पालन नजरुल नहि करैत छलाह। हिनकामे शास्त्रीय राग एवं लोक-धुनिक बहुधा सुन्दर समन्वय भेल अछि। एहि कारणसँ हिनक गीत मात्र आकर्षक नहि, विशेष रूपेँ हिनक अपन होइत छल। उदाहरणक अन्त नहि छैक। निस्संदेह विशुद्धतावादी द्वारा एहि भाँतिक प्रयासक विरोध भेलैक, मुदा कविक रूपमे तँ नजरुल विद्रोही छलाहे; हुनक विद्रोहभाव पूर्ण प्राणवत्ताक संग संगीतहु कक्षेत्रमे प्रसारित भेल। विद्रोही आव सृजनात्मक कलाकारक रूपमे स्वीकृत भऽ चुकलाह। ज्ञातव्य जे नजरुल सामान्य सामाजिक वर्गक व्यक्ति छलाह, तेँ लोकमध्य प्रचलित संगीत एवं एकर विभिन्न कोटिक प्रति हिनक प्रेम स्वाभाविक छलैन्हि। इएह कारण छलैक जे लोकगीतक विभिन्न रूप दिशि ई आकर्षित भेल छलाह। यथा—

'कीर्तन' : बंगालक खास अपन संगीतरूप (एकर शिष्ट एवं सामान्य दुनू शैली छैक।)
'भटियाली' : पूर्व बंगालक नदी-गीत।
'जारी आओर सारी' : पूर्वबंगालहिक आओर दू अन्य रूप।
'बाउल' : रहस्यात्मक उत्तरी भागक प्रेमगीत।
'भाओइया' : बंगालक उत्तरी भागक प्रेम-गीत।
'मुर्शिदा' : सूफी-वर्गक भक्ति-गीत।
'रामप्रसादी' : हिन्दू समुदायक भक्ति-गीत।
'झूमर' : पश्चिम बंगालक लोकगीतक एक रूप।

उदाहरणस्वरूप किछु उद्धरण देल जा सकैछ—

आमि कि सुखे लो गृहे रवो ···—'कीर्तन'

आमि ख्यापा बाउल, आमार देउल आमार एइ आपन देह—'बाउल'

ओरे माझी भाइ, तुइ कि दुक्ख पेये

कुल हाराली अकुल दुनियाय—'भटियाली'।

नजरुलकेँ किछु नव राग-रागिनी बनएबाक श्रेय सेहो छैन्हि, जकर नामकरण ई स्वयं कएलन्हि, यथा—'निर्झरनी', 'सांध्यमालती', 'बनकुन्तल', 'दोलनचम्पा' आदि—सभ केहन कलात्मक नाम छैक।

नजरुल इस्लामक गीतकोश कालक्रमेण दुलर्भ भेल जा रहल छैक, कारण जे एकर पंजीकरण एवं सुरक्षाक कोनो समुचित प्रयत्न नहि कएल गेलैक अछि। तथापि जे किछु गीत उपलब्ध छैक, ताहिसँ अधोलिखित बात निस्संदेह स्पष्ट भऽ जाइत छैक :—

१. नजरुल ओजपूर्ण एवं पौरुषपूर्ण गीतक, विशेषतः अभियानगीतक, अतुलनीय ज्ञाता ओ स्रष्टा छलाह;

२. नजरुल नवीन शैलीक प्रवर्तक छलाह आओर अपन 'गजल' द्वारा वंगलागीतभांडारक अभिवृद्धि कएलन्हि;

३. धार्मिक एवं भक्त्यात्मक गीतक क्षेत्रमे ई एक विलक्षण तत्वक प्रतिनिधि छलाह। दोसर शब्दमे श्यामासंगीत एवं मुसलमानी संगीतक आध्यात्मिक धरातल पर समन्वय करबाक प्रयासमे नजरुल विशिष्ट भारतीय प्रवृत्तिक प्रतिनिधान कएलन्हि;

४. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अतुल प्रसाद सेन, रजनीकान्त सेन आदिक क्रममे नजरुल वंगलागानक क्षेत्रमे अग्रणी सृजनात्मक कलाकार छलाह, जे भावी संततिक लेल विपुल संपदा छोड़ि गेल छथि।

नजरुलक गीतकेँ व्यापक जनसमुदायक समक्ष उपस्थित कएनिहार कलाकारमे विशेष रूपसँ उल्लेखनीय छथि कुमार सचिनदेव वर्मन, दिलीप कुमार राय, अब्बासुद्दीन, कमल दासगुप्त, धीरेन्द्र चन्द्र मित्र, संतोष सेनगुप्त, सुप्रभा सरकार, फिरीज बेगम, आदि।

एहि धारणामे किछु सत्य अवश्य छैक जे संगीत-स्रष्टा नजरुल कवि नजरुलसँ श्रेष्ठ छथि। जहाँ धरि कविताक प्रश्न छैक, हिनक प्रवाहशीलता हिनका लऽ दऽ कऽ उड़ि जाइत छल, किन्तु अपना गीतमे ई अपन सहज एवं श्रेष्ठतम रूपमे छलाह।

६. कपचल पाँखि

संगीतक संसारमे व्यावसायिक दृष्टिसँ श्रेष्ठ कलाकारक सुरक्षित पदपर आसीन नजरुल १९२९ ई०मे जीवनक ओहि मार्गपर संचरणशील छलाह, जे छलैक अभावसँ दूर एवं आर्थिक दृष्टिसँ सक्षम। दू पुत्रक भाग्यवान पिता नजरुलक घर तेसर संतानक आगमन होमऽवाला छलैन्हि। सासु गिरिवाला देवीक अनुरागपूर्ण एवं कुशल व्यवस्थाक प्रतापसँ हिनका वा पत्नीकेँ घर-परिवारक कोनो विशेष चिन्ता नहि रहैत छलैन्हि। हिनका अपना व्यवसाय-क्षेत्रमे आओर प्रगति करवाक छलैन्हि। एच० एम० भी० कंपनीक सदृश अन्य ग्रामोफोन कंपनी सभ, यथा—'सेनोला' आओर 'मेगाफोन' कंपनी हिनक सेवा उपलब्ध करवाक लेल उत्सुक छल। एक रेडिओ कौरपोरेशन सेहो हिनक संगीत एवं सेवा प्राप्त करवाक हेतु प्रस्तुत छल। बम्बइ आओर कलकत्ताक फिल्म कंपनीकेँ बीच-बीचमे हिनक सेवा प्राप्त होइत छलैक। फजली ब्रौस कंपनी अपन फिल्म 'चौरंगी'क हेतु हिनकासँ संगीत उपलब्ध कएने छल, भले पूर्ण भुगतान नहि कएल गेलैक। नजरुल किछु नाटक सेहो लिखने छलाह आओर ओहि लेल स्वयं किछु गीत स्वरबद्ध कएलैन्हि। कहल जाइछ जे एक एहन नाटकमे ई रंगमंचो पर उपस्थित भेल छलाह। इहो ज्ञात छैक जे एक सिनेमा (ध्रुव)मे ई अभिनय सेहो कएने छलाह। किन्तु रंगमंचक कला, संभवतः, हिनक प्रतिभा-क्षेत्रसँ बाहरक वस्तु छल, विशेष कऽ ओहि अवधिमे जखन कि हिनक स्वाभाविक आनन्दमयता मृत्युशोक एवं मानसिक चिन्तासँ प्रायः धूमिल भऽ गेल छलैन्हि।

हिनका जीवनमे प्रथम आघात भेलैन्हि १९३० ई०मे। ज्येष्ठ पुत्र बुलबुलक देहान्त एही साल भेलैक। एहि पुत्रक जन्म १९२६ ई०मे कृष्णगढ़मे भेल छलैक। नजरुल अपन प्रथम गीत-पुस्तकक (१९२८ ई०) शीर्षक-निर्धारिण एही पुत्रक नाम पर कएने छलाह। 'बुलबुल' शब्द नजरुलकेँ पहिनहिसँ बड़ प्रिय छलैन्हि आओर ओहि बालकक कारणेँ ई शब्द आओर

प्रियगर भऽ गेलैन्हि । ओ बालक बड़ गुण-सम्पन्न आओर सभक प्रिय छलैक। मृत्युक बहुत बादहु मुजफ्फर अहमद 'बुलबुल'क स्मरण अश्रुसिक्त स्नेहक संग करैत छलाह । चेचक रोगसँ ग्रस्त भेलाक बाद अल्प कालहिमे बुलबुल कालकवलित भऽ गेलाह । पिता सदिखन रुग्ण पुत्रक खाट लग बैसल रहैत छलथिन्ह । एहि मृत्युसँ समस्त परिवार शोकनिमग्न भऽ गेल छल आओर कवि पिताकेँ, जे बादक घटनासँ स्पष्ट होइछ, सबसँ बेशी आघात भेल छलैन्हि । अथवा इहो कहल जा सकैछ जे अतिभावुक एवं संवेदनशील पिता एहि आघातकेँ सहन करबामे सभसँ कम समर्थ छलाह । नजरुल वास्तवमे एहि शोकाघातसँ कहियो उबरि नहि सकलाह । जँ मनोवैज्ञानिक शब्दावलीमे कहबाक हो तँ कहल जा सकैछ जे एहि दुर्घटनासँ पूर्व नजरुल बहिर्मुखी प्रवृत्तिक, प्राणवन्त चेतनासँ परिपूर्ण व्यक्ति छलाह जनिक समुत्साह एवं सहज प्रसन्न स्वभाव सभकेँ अपना दिशि आकृष्ट कऽ लैत छलैक । ई शोकाघात आनन्दमय व्यक्तित्वकेँ निर्ममतापूर्वक झनारि देने छलैक । एहि घटनासँ हिनक कार्यक्रम बाह्यतः व्यवहित नहि भेलैन्हि । किछुए दिनक बाद नजरुल अपनाकेँ स्वस्थ एवं स्थिरचित्त करबाक प्रयासमे सफल भऽ पुनः गीत प्रस्तुत करऽ लगलाह । एहि क्रममे ई कौखन अपन गीतपुस्तक 'चन्द्रबिन्दु'क प्रूफ पढ़बासन नीरस कार्यमे संलग्न रहैत छलाह । कवि जसमुद्दीन एक बेर हिनका ओहि पोथीक प्रूफ पढ़ैत देखने छलथिन्ह ।

तथापि पछाति कदाचित् एक भाँतिक उदासीनता एवं दुश्चिन्ता एवं गाम्भीर्य हिनका व्यक्तित्व तथा कृतित्वकेँ प्रभावित करऽ लागल छलैन्हि । ग्रामोफोन कंपनीक इच्छापूर्तिक हेतु नजरुल अपन प्रतिभाक उपयोग विभिन्न क्षेत्रमे करऽ लगलाह । आब हिनक भक्त्यात्मक गीत तथाकथित एवं देखौआ मात्र नहि रहि गेल । एहि कालमे रचित हिनक किछु गीतपर ध्यान देलासँ ई बात स्पष्ट भऽ जाइछ, यथा 'भजन' (चलो मन अनन्त धाम), 'कीर्तन' (आमि कि सुखे गो गृहे रवो), 'बाउल', 'श्यामा-संगीत' आओर इस्लामी गीत आदि । साम्प्रदायिक दृष्टिसँ देखला उत्तर किछु गीतक विषय आपाततः विरोधास्पद बुझना जाइछ । एकर कारण ई जे इस्लामी दृष्टि घोर मूर्तिपूजा-विरोधी आओर एकेश्वरवादी छैक आओर नजरुलक हिन्दू गीतमे मातृशक्तिक प्रतीक 'काली' अथवा कृष्णक प्रेमलीलाक विभिन्न पक्ष (प्रेम, सखा, पुत्र) वर्णित भेल छैक । पुनः ई स्मरणीय जे नजरुलक हेतु कोनो प्रकारक साम्प्रदायिक भावना—हिन्दू वा मुसलमानसँ मुक्त रहब सहज छलैन्हि ।

विषयक दृष्टिसँ एक दिशि हिनक हिन्दू गीत एक तरहसँ सामान्य रीतिक अनुसरण करैछ तँ दोसर दिशि मुसमानी गीत मुसललानी परंपराक अनुकूल भेल छैक। ई छल हिनका विषयमे एक विशेष रोचक बात। मुसलमान होएबाक कारणेँ अपनाकेँ इस्लामी परंपराक अनुकूल करबाक हिनकामे आश्चर्यजनक क्षमता छलैन्हि, मुदा कट्टरतासँ पृथक् रहि। ज्ञातव्य जे कट्टर-पंथी मुसलमानक हेतु संगीत ग्राह्य नहि होइछ। 'जुलफिकार' (१९३२ ई०) गीतसंग्रहमे अनेक एहन-एहन गीत छैक जाहिमे मुसलमान जातिक आशा एवं गौरवक अभिव्यक्ति भेलैक अछि--

दिके-दिके पुनः ज्वालिये उठिछे दीन इस्लामी लाल मशाल।

[इस्लाम धर्मक लाल मशाल पुनः चतुर्दिक प्रज्वलित भऽ रहल अछि।]

एहि ठाम जाहि 'मशाल'क उल्लेख भेलैक अछि से संकुचित धार्मिकता वा सर्वमुसलमानवादक अर्थमे नहि, बल्कि पुनरुत्थित-पुनर्जीवित इस्लामक अर्थमे, जे नजरुलक दृष्टिमे कमालपाशा, जगलुलपाशा, रेजाशाह पहलवी, आदि द्वारा उपस्थित कएल गेल छलैक। एहन अनेक गीत ओ कविता छैक, जे मुसलमानी दृष्टिकोणसँ अवर्ज्य अनुकूल रहलो पर आध्यात्मिक चेतना एवं प्रभावमे सार्वजनीन सेहो छैक।

बुलबुलक मृत्युक पश्चात् दोसर चरणमे नजरुल द्वारा रचित गीतमे माँ काली वा सहजिया उपासनाक 'देह-तत्व' वा अन्य गुह्य विषय प्रमुख भऽ गेल छलैक। वास्तविक जीवनमे सेहो ओहि काल ई तंत्र-मंत्र (रहस्यवादसँ भिन्न) आओर एतादृश योग-साधनादिमे व्यस्त रहऽ लागल छलाह, जकर स्वीकृति हिन्दू आओर मुसलमान दुनूमेसँ कोनहु धर्ममे नहि छैक। किन्तु बादमे एही चरणमे नजरुलक इस्लाम दिशि अभिमुख होएब परिलक्षित होइछ। एतबे नहि; एक तरहक पाप-स्वीकृति एवं पश्चात्तापक भाव सेहो देखल जाइछ जे संकुचित अर्थमे नजरुलक नास्तिकताक लेल पश्चात्ताप कहल जा सकैछ। हिनक रचनामे हिन्दूक श्यामा-संगीत आओर मुसलमानक आत्मनिवेदनपरक गीत—भक्तिक दुनू रूप—अंतधरि समानान्तर चलैत रहल। ई एहि तथ्यक द्योतक छल जे स्वेच्छया दुनूक स्वीकृति आध्यात्मिक महत्त्वक लेल समान रूपसँ आधारभूत छैक। नजरुलक बाह्य जीवन एवं आत्मिक व्यक्तित्वसँ अभिज्ञात होइछ जे ई जतबा पैघ काली-भक्त छलाह, ततबे पैघ इस्लामक अनुयायी सेहो छलाह। ई ओहि ईश्वरक भक्त छलाह जे एक छथि : दोसर नहि। नजरुलकेँ सतत ई अनुभव होइत छलैन्हि जे सत्य एक छैक

आओर ईश्वर तक पहुँचबाक मार्ग अनेक एवं प्रशस्त छैक, यथा—सगुण, निर्गुण एवं अन्य प्रकारक साधना-आराधना।

भविष्यमे होमएवाला अस्वस्थताक किंचित् लक्षण आगूक कार्यकृतिसँ परिलक्षित होएत लागल छलैक। प्रतिभापर नियंत्रणक अभाव आओर क्रमिक क्षयशीलता—जे हिनक शरीर एवं आंशिक रूपमे सृजनात्मक शक्तिकेँ प्रभावित कएने छलैन्हि—प्रारंभ भऽ गेल छल। १९३६ ई० आओर १९४२ ई०क बीचक हिनक रचनाक मूल्यांकन करबाक हेतु एहि कालावधिक हिनक जीवनक एहि दुखपूर्ण पक्षकेँ ध्यानमे रखबाक थिक।

बुलबुलक मृत्युक संग नजरुलक बाह्यतः अनीश्वरवादक अन्त भऽ गेलैन्हि। वस्तुतः अनीश्वरवादमे हिनका कहिओ भीतरसँ विश्वास नहि छलैन्हि। हिनका अन्तस्तलसँ निःसृत उद्गारमे कखनहु ईश्वरीय शक्तिक प्रति अनास्था देखबामे नहि अबैछ। हँ, प्रायः १९२०-२१ ई०सँ ई विवेकपूर्वक खूब सोचि कऽ धर्मिकतामे विश्वास त्यागि देने छलाह। जेनाकि हिनक स्वभाव छल, नजरुलक विरोध-स्वर किछु बेशी मुखर होइत छलैन्हि आओर आवश्यकतासँ अधिक जोरसँ अपनाकेँ ई अनीश्वरवादी वा कम्युनिस्ट उद्घोषित करैत छलाह। धार्मिकताक प्रति हिनक विद्रोहक कारण छल विश्वव्यापी अन्याय, मानवद्वारा मानवक शोषण-दोहन, आ' सेहो ईश्वर, वर्ण वा संप्रदायक नाम पर। इएह कारण छल हिनक एहि विश्वासक जे कोनो दैवी शक्ति द्वारा एहि संसार अथवा मनुष्यक भाग्यक दिशानिर्धारण-परिचालन नहि होइत छैक। मनुष्यकेँ अपना भाग्यक निर्माण स्वयं करक होएतैक। (आंग्लकवि) शेलीक भाँति नजरुलक निरीश्वरवादक आधार छलैक एक गहन आन्तरिक आस्था-विश्वास; कोनो आडंबरपूर्ण धर्मसँ बढ़ि कऽ छलैक ई आस्था-विश्वास। किन्तु जखन मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ नजरुलक 'निरीश्वरवाद'क परीक्षण कएल जाइछ, तखन ई उपरी-उत्थर सिद्ध होइछ। आ' एहि बातक ज्ञान नजरुलकेँ अपनहु छलैन्हि।

भारतवर्षमे एक सामान्य बालककेँ माइक दूधक संग अलौकिक देवी शक्तिमे किछु-ने-किछु विश्वास परंपरया प्राप्त होइत छैक। नजरुल एहि सामान्य नियमक अपवाद नहि छलाह। हिनका भेटल छलैन्हि इस्लाममे आस्था एवं मकतव पद्धतिक शिक्षा-दीक्षा। एकरा संगहि प्रारंभहिमे ई अर्जित कएने छलाह तंत्र-मंत्रक सिद्धान्त आओर साधना (हठयोगादि) एवं फकीर-योगी लोकनिक चमत्कारपूर्ण शक्तिमे विश्वास। प्रकृत्या नजरुलक कट्टर-

पंथी होएब संभव नहि छल। किन्तु हिनका ई विश्वास अवश्य छलैन्हि जे संत-महात्माक मार्गदर्शनमे, चाहे ओ कोनो धर्मक होथि, साधना एवं आस्थाक द्वारा एहि भौतिक अलौकिक शक्ति प्राप्त भऽ सकैछ। एहि भौतिक परंपरागत आस्था-विश्वास दीर्घकालीन अभ्यास द्वारा कम कएल जा सकैछ, किन्तु ई पूर्णतः समाप्त नहि होइत छैक। ई सचेतन वा अचेतन अवस्थामे सामान्य मनुष्यक कार्यकलापकेँ प्रभावित करैत छैक—ई तथ्य आधुनिक कालमे मनोविज्ञान द्वारा स्वीकृत छैक। तथापि ईहो ज्ञात छैक जे अवस्था बढ़बाक संग एहि तरहक विचार-विश्वास एवं लक्षण-विशिष्ट अनुभव, तर्क-वितर्क शक्ति एवं वैज्ञानिक प्रशिक्षण द्वारा आंशिक रूपमे परिवर्तित भऽ सकैत छैक। समर्थाइमे पहुँचलापर नजरुल सेहो एहि स्थितिमे पहुँचल होएताह, जखन अपन बुद्धि आओर अनुभवक संग मानवतावाद आओर स्वतंत्रताप्रेमक कारणेँ हिनका अपन आस्था-विश्वास पर शंका-संदेह होमए लागल होएतैन्हि; आओर एकरा फलस्वरूप नवीन चेतनाक निर्माणमे रूसी क्रान्तिक अंशदान अवश्य भेल होएतैक। एक आत्मचिंतनशील स्वभावक व्यक्तिक हेतु आस्तिकतासँ नास्तिकता तथा आरंभिक निश्चित 'स्वीकृति' सँ शंकालु अनन्त अस्वीकृतिक मार्ग ग्रहण करब बड़ मनःसंतापकारी होइत छैक। बहिर्मुखी नजरुल एहि संतापसँ प्रायः मुक्त छलाह। किन्तु हुनकहु एहि 'द्वैधभाव'क समाधान ताकए पड़लैन्हि, जे एक दिश विकृत ईश्वरवादक प्रति संदेह आओर दोसर दिशि दैवी भावनाक प्रति आग्रहक परिणामस्वरूप छलैन्हि, जे हार्दिक उद्गारसँ परिपूर्ण रचना, यथा—'राजबंदीर जवानबंदी'मे व्यक्त भेलैक अछि। एकरा संगहि इहो तथ्य छैक जे कोनहु भावुक स्वभावक व्यक्तिक लेल घोर भौतिकवाद आओर परोपकारवादी नास्तिकता वा वस्तुवादी मानवतावाद वा प्रत्यक्षवादसँ समझौता करबामे कठिनता होइत छैक। १९२१ ई० एवं १९३० ई०क बीच नजरुलक हृदयमे दैवी विश्वास दबकल छलैन्हि। ओहि बाह्यतः धर्मविहीनताक अवधिमे अरविन्दक भ्राता बारीन्द्र कुमार घोष तथा आर्य पब्लिशिंग हाउस (नजरुलक प्रथम प्रकाशक)क सदस्यगणक संग हिनक घनिष्ठ सम्पर्क आकस्मिक वा मात्र राजनीतिक विचारधाराक कारणेँ नहि छलैन्हि। हिनक ई मित्रगण श्री अरविन्द द्वारा प्रवर्तित तांत्रिक योग-दर्शन ग्रहण कएने छलाह तथा प्रकट रूपेँ गुह्य जोग-टोनक प्रचार करैत छलाह। ई लोकनि, सम्भवतः प्रत्यक्ष रूपेँ, नजरुलक तंत्रवाद, काली-मत तथा फकीर, सिद्ध, योगी आदिक चमत्कारपूर्ण शक्तिमे पूर्व विश्वासकेँ पुष्ट कऽ देलथिन्ह।

१९३० ई०मे बुलबुलक देहान्त नजरुलकेँ जीवन एवं मृत्युक गूढ़ रहस्य, आत्मा एवं पारलौकिक जीवनक प्रश्न तथा स्वयं आत्मस्वरूपक समक्ष उपस्थित कऽ देलकैन्हि। अपन पूर्वक विश्वासकेँ ई गहिया कऽ धऽ लेलैन्हि : एहन विश्वासकेँ जे तांत्रिक साधनाक बलेँ जीवित एवं मृत व्यक्तिक बीच—बुलबुल आओर ओकर पिताक बीच— सम्पर्क स्थापित भऽ सकैछ। कोनो अन्तर्मुखी व्यक्ति एहि स्थितिमे मध्ययुगीन संत आओर सूफी (कबीर, दादू आदि) द्वारा निर्दिष्ट मार्ग एवं मंत्रणा पर चलि रहस्यक अन्वेषण तथा विशुद्ध आध्यात्मिक साधनामे लीन भऽ जा सकैत छल, किन्तु अतिभावुक, तंत्रवादमे विश्वास रखनिहार आओर बहिर्मुखी प्रकृतिक व्यक्ति नजरुल चमत्कार एवं पारलौकिक प्रत्यक्ष प्रमाणकेँ छाड़ि अन्य कोनो बातसँ संतुष्ट होमएवाला नहि छलाह। तेँ ई तंत्रसाधना एवं हठयोग दिशि उन्मुख भऽ गेलाह। आब स्पष्ट भऽ जाइछ जे हिनक आकर्षण आध्यात्मिक जिज्ञासासँ बेशी योगसाधनामे छलैन्हि। ई एहन तांत्रिक 'सिद्ध' आओर 'फकीर'क उत्सुकतापूर्वक खोजमे छलाह, जे मृत व्यक्तिक संग संपर्क स्थापित करएवामे क्षम होथि। तेँ, जेना कि स्वाभाविक छलैक, गम्भीर मनस्ताप आओर शारीरिक तथा आध्यात्मिक सम्पर्कक उत्कट्ट आकांक्षासँ प्रेरित भऽ नजरुल एहि भाँतिक तर्कहीन बात दिशि उन्मुख होइत गेलाह। धारीन्द्र कुमार घोष (अथवा संभवतः हिनक कलाकार मित्र नलिनीकान्त सरकार) हिनका कहने छलथिन्ह जे लालगोला हाइ स्कूलक तत्कालीन हेडमास्टर स्वर्गीय वरदाचरण मजुमदार श्री अरविन्दक सदृश आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कएने छथि आओर हुनक सहायतासँ—हुनक निर्देशनमे यौगिक साधना द्वारा—नजरुलकेँ बुलबुलसँ सदेह साक्षात्कार भऽ सकैत छैन्हि ई सुनतहि नजरुल लालगोला गेलाह आओर मजुमदार महोदयसँ दीक्षित भऽ हुनक निर्देशनमे योगक अभ्यास प्रारम्भ कऽ देलैन्हि। किछु दिन गेरुआ वस्त्र सेहो धारण कएने छलाह। एहि दिशामे कहाँ धरि हिनक प्रगति भेलैन्हि वा ई की उपलब्ध कएलैन्हि, से साधारण बुद्धिक मनुष्य लेल बोधगम्य नहि छैक मुदा एतबा संकेत कऽ देब महत्वपूर्ण बुझना जाइछ जे ओहू अवस्थामे कम-सँ-कम किछु साल धरि नजरुल उच्च स्तरक सृजनात्मक रचना करबामे समर्थ छलाह।

ततःपर शनैः शनैः नजरुलक काया गुप्तरूपेण रोगाक्रान्त होमए लगलैन्हि। प्रारंभिक अवस्थामे एहि पर ठीकसँ ध्यान नहि देल गेलैक। समुचित चिकित्सा सेहो नहि भेलैक। भ्रमवश रोगक कारण बूझल गेलैक कठिन योगाभ्यास।

जाधरि मानसिक विक्षिप्तताक लक्षण गंभीर रूप धारण नहि कऽ लेलकैक, ताधरि हिनक चिकित्सा-सेवा टारल जाइत रहलैन्हि। आब ई व्यवस्थित रूपसँ कार्य करबामे अक्षम भऽ गेल छलाह।

मुदा नजरुलक लेल दोसर प्राणान्तक आघात भविष्यक गर्भमे संचित छलैन्हि आ' से छल १९३७ ई०मे हिनक धर्मपत्नीक रोगग्रस्त होएब। रुग्ण होइतहिँ ई शय्यागत भऽ गेलीह आओर तुरत ज्ञात भेलैक जे नीचाँसँ शरीरक अर्द्धांश पक्षाघात-पीड़ित भऽ गेल छैन्हि। तथापि ई पूर्ण चेतनामे छलीह आओर ओहू अवस्थामे यथासंभव गृहकार्य करबाक योग्य सेहो छलीह। स्वयं अस्वस्थावस्थामे पड़ल नजरुलक हेतु ई आघात असह्य भऽ गेलैन्हि। हिनक मानसिक रूपसँ अस्थिर-उद्विग्न भऽ जाएब एकदम स्वाभाविक छल। आब प्रमिलाक सतत रुग्णतासँ चिन्तामे वृद्धिक संग पारिवारिक खर्चा सेहो बढ़ि गेल छलैन्हि। पति-पत्नी दूनूक नियमित चिकित्सा आवश्यक भऽ गेल छलैन्हि।

एहि विपत्तिक समय नजरुलक आर्थिक अवस्था आओर अधिक चिन्तनीय भऽ गेलैन्हि। तत्काल जे कलाकारक आर्थिक अवस्था होइत छलैक ताहि मोताबिक, शरीरसँ कार्य करबामे अक्षम होएबाक किछु साल पूर्व, ई बढ़िया जकाँ धनार्जन कएने छलाह। किन्तु मितव्ययितासँ छलाह ई ध्रुवान्त दूर। दुर्गुणक सीमाधरि उदार नजरुल मित्रवर्गक संग आनन्दोपभोगमे धनक अपव्यय करैत रहलाह। ई जे एना करथि तकर संभवतः कारण छल वुलवुलक निधनोपरान्त दुख-शोकसँ अवकाशक प्रयास। हिनक अतिव्ययितापर केओ नियंत्रण नहि राखि सकैत छल—ने हिनक पत्नी आ नहि हिनक सासु गिरि-वाला देवी। एहि विषय स्वयं नजरुलसँ विवेकक कोनो अपेक्षा नहि कएल जा सकैत छल कारण जे ई सोचैत छलाह जे ई सम्पन्नताक दिन आओर सृजनात्मक क्षमता सभ दिन समानरूपेँ बनल रहत। घोर दारिद्र्यसँ विवश भऽ हिनका एच० एम० भो० कंपनीक रेकार्डसँ प्राप्य रोयल्टी आओर १९३७ ई०सँ अन्य साहित्यिक कृति केवल चारि हजार रुपैया पर ओकील असीम कृष्ण दत्तक हाथ बँधकी राखऽ पड़लैन्हि। ई प्रसंग ओहि दुखद स्थितिक पूर्ण परिचायक छल—मूल्यवान् एवं उत्कृष्ट कलात्मक निधिक हेतु केवल चारि हजार रुपैया। आ फेर ई तथा पूर्वहुक कोनो वस्तु कहिओ बँधकीसँ छोड़ाएल नहि जा सकलैक। ओकील असीमकृष्ण दत्त महोदय कलकत्ताक राजनीतिक-सामाजिक विशिष्ट जनक बीच बड़ सम्मानित व्यक्ति छलाह। एहिसँ तत्काल

जे राशि भेटलैन्हि से बड़ कम समयमे खर्च भऽ गेलैन्हि। छोट-छीन उधारी राशिक भुगतान कऽ देल गेलैक। उपलब्ध राशि पारिवारिक खर्च चलएबाक लेल अपर्याप्त छलैक। विशेष रूपसँ देय राशि छलैक बहुत दिनसँ बकिऔता औषधक दाम। एकरा संगहि दिनानुदिन नजरुलक अक्षम असमर्थ भेल जएबाक कारणेँ रुग्ण प्रमिलाक हेतु एक प्रशिक्षित सेविकाक आवश्यकता पड़लैक। द्वितीय विश्व-युद्ध प्रारंभ भऽ गेलासँ आवश्यक वस्तुजातक मूल्य एवं दुर्लभता बढ़ल जाइत छलैक।

आब (गगनविहारी) पक्षिराजक पाँखि कपचल छल। कोनो तत्काल उपस्थित आवश्यकताक पूर्ति हेतु समय-समय पर प्रयास कएल जएबामे त्रुटि नहि होइक, किन्तु ताहिसँ की होमएवाला छल? नजरुल आब कतहु नियमित रूपेँ काज नहि करैत छलाह। लेखनकार्य सेहो ठीकसँ नहि चलैत छलैन्हि। आ' आवश्यकता दिन-दिन बढ़ले जाइन्ह। तैओ ई अपना भरि चेष्टा करबामे शिथिलता नहि कएलैन्हि। ओहि समय मुस्लिम लीग आओर कांग्रेसक बीच विरोध बड़ बढ़ि गेल छलैक। ए० के० फजलुल हक द्वारा पुनः प्रारंभ कएल गेल दैनिक पत्रक माध्यमसँ नजरुल एहि द्वैध राष्ट्रीयताक सिद्धांतक विरोध करबाक निश्चय कएलैन्हि। एहि पत्रमे प्रकाशित हिनक रचना बड़ विलक्षण छल—भावनापूर्ण आओर आदर्शसँ परिप्लावित, किन्तु असंतुलित आओर तत्कालीन आवश्यकताक परिप्रेक्ष्यमे विषय-वस्तुसँ किंचित् हटल। (तथापि) एहि कालक किछु रचना, यथा—'शक्ति-स्तुति' वा रवीन्द्रनाथक निधनपर लिखल गेल अंश—उच्च स्तरक छलैक। हिनक प्रत्येक क्रिया-कलापमे राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं मानवताक प्रति गंभीर चिन्ता परिलक्षित होइत छल। आगू चलि कऽ एहिमेसँ किछु रचना 'नूतन चाँद' शीर्षक पोथीमे संकलित भेलैक (१९४५ ई०)। हिनक अवस्थामे कोनो सुधार नहि भेलैन्हि, कोनो उत्साह-वर्द्धक संकेत नहि। ओहू काल किछु मित्रगण हिनका प्रति भक्ति एवं सहानुभूति रखने छलथिन्ह, जाहिमे छलाह स्व० कालीपद गुहराय जे बनारसमे बसि गेल छलाह आओर देशक गण्यमान्य योगी मानल जाइत छलाह, सुन्दर आओर विचारपूर्ण लेखक अमलेन्दु दासगुप्त, एक अन्य उत्तम निबंध-लेखक स्व० नृपेन्द्र कृष्ण चटर्जी, जुलफिकार अहमद (पछाति बंगलादेशस्थ एवं सूफी जुलफिकार अहमद नामसँ अभिज्ञात) आओर किछु अन्य हिन्दू-मुसलमान मित्रगण। ई लोकनि पारिवारिक दुख-चिन्ता तथा आर्थिक भारकेँ यथासाध्य हल्लुक करबाक प्रयास कएलथिन्ह। मुदा ई सभ आध्यात्मिक व्यक्ति छलाह आओर अपना-अपना विश्वासक अनुरूप (चाहे हिन्दू होथि वा

मुसलमान) अदृश्य आओर तंत्रमंत्र पर बेशी भरोस रखैत छलाह। हिनका लोकनिक मतमे वैज्ञानिक चिकित्साक बड़ कम महत्व छलैक। एहि विषय स्वयं नजरुलक एहन स्थिति छलैन्हि। ई आओर अधिक योगाभ्यासमे लीन रहऽ लागल छलाह, जाहिमँ कोनो लाभ होमएवाला नहि छल।

एहि दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिक बढ़ैत चरणक चिह्न बहुत पूर्वहिसँ देखल जा सकैछ। नजरुल बनगाँव (२४ परगना)मे भेल साहित्यिक समारोहक (१९४१) सभापति छलाह। ओहि अवसर पर ई (आंग्ल-भाषाक एक शब्द) 'मिस्टी-सिज्म' आओर 'मिस्ट' शब्दक विचित्र रूपसँ अर्थहीन प्रयोग कएने छलाह—

"एहि रहस्यवादमे हमरा जे मधुर (मिष्टी) भेटल अछि, एहिमे हम जाहि अमृतक अन्वेषण कएल अछि, से हमरा वक्तव्यकेँ मधुर बना दैत अछि। मधुरम्, मधुरम्, मधुरम्।"

एकर व्याख्या करैत ई कहलथिन्ह—

"हम अपनाकेँ समर्पित कऽ रहल छी आओर ओ सभ वस्तु 'हुनका' चरणमे समर्पित अछि, जे हमरा आत्मासँ संबद्ध अछि आओर हम भऽ रहल छी मुक्त, सभ चीजसँ मुक्त।"

एहि ठाम वाक्यविन्यास तँ बड़ सुन्दर अछि, किन्तु संकेत छल ई कोनो दोसर बात (विक्षिप्तता)क। पुनः 'मुस्लिम समिति'क सम्मेलन (अप्रैल १९४१ ई०)मे नजरुल ओही मनोदशामे बजैत देखल गेलाह—

"हमर बाँसुरी यदि नहि बाजए तँ अहाँ हमरा कृपया क्षमा कऽ देब आओर हमरा बिसरि जाएब—ई, एहि ठाम हम कविक रूपमे नहि, बल्कि एहि अधिकारसँ कहि रहल छी, जे हम कवि होएबाक योग्य नहि छी आओर नहि छी हम कोनो नेता बनबाक लेल। हमर जन्म भेल छल प्रेमार्पण करबाक लेल—ओ प्रेम जाहि लेल हम सतत उत्कंठित रहलहुँ आ जे हमरा कहिओ प्राप्त नहि भेल। हम असंतुष्ट चुपचाप एहि प्रेमविहीन रूक्ष संसारसँ विदा भऽ रहल छी।"

तथापि नजरुल पूर्णरूपेण विक्षिप्त नहि भेल छलाह। एकबेर (१९४२ ई०) एक शोककविता द्वारा ई रवीन्द्रनाथक प्रति अश्रुसिक्त श्रद्धा निवेदित कएने छलाह। पुनः एक अन्य अवसर पर जखन चिआंग काइ शेक (फरवरी, १९४२ ई०) भारत आएल छलाह आओर कांग्रेसक प्रयाससँ भारत-चीनक बीच संपर्क-सहयोगक बात चलि रहल छलैक, तखन नजरुल चीनी नेताक शुभा-

गमनक स्वागत एक कविताक माध्यमसँ कएने छलाह, जे बहुत उच्च कोटिक तँ नहि छैक, किन्तु अधलाह सेहो नहि छैक।

एक दिन नजरुल संध्याकाल अपन श्यामबाजार स्थित आवाससँ नापता भऽ गेलाह। दोसर दिन संध्याकाल धरि हिनक कोनो संधान नहि भेटलैन्हि। बादमे दक्षिणेश्वर काली-मन्दिरक समीप (जतऽ श्री रामकृष्णक पीठस्थान छलैन्हि) मुख्य सड़कक कात ई बीआइत भेटलथिन्ह—द्रुतगामी सैनिक मोटर गाड़ीक कोनो परवाहि नहि छलैन्हि, जाहिसँ कोनो क्षण दुर्घटना भऽ सकैत छलैन्हि।

अन्ततः जुलाइ १९४२ ई०केँ ओ दुर्भाग्यपूर्ण निर्धारित क्षण आबि गेल। संध्याकाल ई कलकत्ता केन्द्रसँ रेडिओवार्ता दऽ रहल छलाह कि सहसा हिनक वाक्‌शक्ति समाप्त भऽ गेलैन्हि। यावत् हिनका आवास पर आनल गेल, हिनक मानसिक क्षमता क्षीण होमए लागल। दुर्भाग्यक राहु काव्याकाशक चन्द्रमाकेँ ग्रसित करब प्रारंभ कऽ चुकल छल। बूझि पड़लैक जे ई ग्रहण पूर्ण आओर स्थायी होएतैक आ सैह भेलैक। कहल जाइछ जे १९७० ई०मे नजरुल दू गोट असंबद्ध वाक्य बाजल छलाह :—

'हम गाँधीजीसँ भेँट करब'। 'हम ढाका जायब।'

ज्ञातव्य जे १९४२ ई०क अस्वस्थताक तुरन्त बाद नजरुलक चिकित्सा-सहायताक प्रयास भेल छल आ स्वर्गीय विधानचन्द्र राय एहि लेल सद्यः प्रस्तुत भऽ गेल छलाह। मुदा सभ निष्फल। तखन हिनका मानसिक रोगक लुंबिनी पार्क अस्पतालमे भर्ती कराओल गेल। ओतऽ डाक्टर जी० एस० बोस हिनक चिकित्सा कएलथिन्ह। एहूसँ कोनो लाभ नहि भेलैन्हि। डाक्टरक कहब छलैन्हि जे रोगक जड़ि शारीरिक छैक आ आब बहुत विलम्ब भऽ गेल छैक। युद्धक समय छलैक तेँ विदेश लऽ जा कऽ चिकित्सा करएबाक कोनो गुंजाइश नहि छलैक। तेँ विशेष रूपसँ एहि दिशामे ठोस किछु नहि भऽ सकलैक। हँ, सहानुभूतिक धरि अभाव नहि छलैक। कवि आओर असहाया-वस्थामे पड़ल कविक परिवारक सहायतार्थ हृदयसँ प्रयास कएल गेलैक। श्यामाप्रसाद मुखर्जीक अध्यक्षतामे विपत्तिग्रस्त नजरुलक मदतिक हेतु एक रिलीफ कमीटी स्थापित भेलैक। हिनक साहित्यिक रचना एवं संगीतक रेकार्ड पर कविक अधिकार वापस करएबाक प्रयास तँ कएल गेलैक, किन्तु कमीटीकेँ एहिमे सफलता नहि भेटलैक। स्मरण हो, जे ई सभ की तँ विक्रय भऽ गेल छलैक वा बँधकी राखल छलैक। कालक्रमेँ कमीटी लड़खड़ाइत-

लड़खड़ाइत समाप्त भऽ गेलैक। एहि बीच नजरुलक अवस्था दिनानुदिन अधलाह होइत गेलैन्हि। दैवदुर्विपाकसँ युद्ध-समाप्तिक वर्ष १९४६ ई०मे गिरिवाला देवी कतहु नापता भऽ गेलथिन्ह। एतेक दिन ओएह उठौने छलीह परिवारक दुर्वह भार-चिन्ता, काज-टहल, शय्या-ग्रस्त प्रमिला तथा मानसिक एवं शारीरिक दुनू भाँतिक रोगसँ ग्रस्त नजरुलक सेवा-परिचर्याक भार। (परिस्थिति एवं) घटनाक्रमसँ विचलित भऽ (संभव जे) ओ ईश्वरक शरणमे जएवाक अंतिम उपाय कएने होथि। फेर हुनक विषय किछु सुनवामे नहि अएलैक।

ओहि नितान्त निस्सहाय स्थितिमे पश्चिम बंगाल सरकारकेँ दू सए टाका मासिक अनुदान (पेंसन) देवाक लेल प्रवृत्त कएल गेलैक। देश तुरंत स्वाधीन भेल छल। रोग-शय्या पर पड़लि प्रमिला मात्र दू सए टाकासँ परिवारक खर्च चलबैत छलीह। पहिवारमे छलैन्हि दू गोट शिशु आओर पति नजरुल। ३० जून १९६२ ई०केँ ईहो स्वर्गवासी भऽ गेलीह—ई एहन महिला छलीह जे तैस वर्ष धरि स्वयं रुग्ण रहलो उत्तर परिस्थितिसँ निरंतर संघर्ष करैत नजरुलक सेवा-परिचर्यामे लीन छलीह। समसामयिक बंगला साहित्यमे एहि महान महिलाक हेतु विशेष स्थान संरक्षित रहव अपेक्षित अछि।

एहि दुर्घटनाक दस साल पूर्व १९५२ ई०मे नजरुलक विदेशमे विशेष चिकित्साक हेतु एक चिकित्सा सहायता कमीटी बनल छलैक। मित्रवर्गद्वारा अर्थ-संग्रह भेल आओर १९५३ ई०क मइ मासमे नजरुल एवं प्रमिलाक संग एक दल यूरोप प्रस्थान कएलक। लंदन आओर वियेना (स्विटजरलैंड) सँ सेहो विचार-विमर्श भेलैक। सर्वसम्मतिसँ निर्णय इएह भेलैक जे एतेक विलम्बक बाद आब किछु करब संभव नहि छैक। एहि प्रकारेँ चिकित्सार्थ यूरोप गेल दल निराश ओ विवश भऽ कलकत्ता फिरि आयल। नजरुलक आरोग्यलाभविषयक अंतिम किरण अस्त भऽ गेलैक।

१९६२ ई०मे प्रमिलाक देहान्तक पश्चात् नजरुलक जीवनमे कोनो तेहन उल्लेखनीय बात नहि घटित भेलैन्हि। आब दुनू पुत्र वयस्क ओ विवाहित भऽ नजरुलकेँ पितामह सेहो बना चुकल छलथिन्ह। काजी सव्यसाची, जनिका संग (सी० आइ० टी० फ्लैट, कलकत्ता—१४) नजरुल १९७२ ई०मे रहैत छलाह, कवि पिताक काव्यक सुन्दर पाठ करबाक कारणेँ विख्यात छथि।[1]

१. आब स्वर्गवासी भऽ गेल छथि।

छोट पुत्र काजी अनिरुद्ध कलापूर्ण वाद्यसंगीतक क्षेत्र (गिटार)मे प्रर्याप्त यश अर्जित कएने छलाह। ज्ञातव्य जे अनिरुद्ध किछु दिन पूर्व स्वर्गवासी भऽ गेलाह।

एकरा वादक कथा कविक प्रति जनताक वर्द्धमान प्रेम ओ श्रद्धाक कथा थिक। नजरुलक जन्मदिन एक राष्ट्रीय पर्वक रूपमे गौरव एवं समुत्साहक संग मनाओल जाइत अछि। मुफ्त चिकित्साक अतिरिक्त पश्चिम वंगाल सरकार हिनक मासिक पेंसन दू सए टाकासँ बढ़ा कऽ तीन सए टाका कऽ देने छलैन्हि। तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान सरकारक दिशिसँ मंजूर भेल तीन सए पचास टाका मासिक पेंसन, जे मार्च १९७१ ई०मे पूर्वी वंगालमे क्रान्ति प्रारंभ होइतहि वन्द भऽ गेल छलैक, पुनः वंगलादेश सरकार द्वारा देल जाए लगलैन्हि। भारतक राष्ट्रपति हिनका 'पद्मभूषण' उपाधि प्रदान कएने छलथिन्ह आओर कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा स्पृहणीय जगतारिणी स्वर्ण-पदक सेहो हिनका ससम्मान अर्पित कएल गेल छलैन्हि। १९६७-१९६९ ई०क संविद सरकार एक भवन-निर्माणक निर्णय कएने छल जाहिमे हिनका हेतु आवासीय सुविधाक संग नजरुल शोध-संस्थानक प्रावधान छलैक। १९६९ ई०मे कलकत्ता कौरपोरेशन दमदम हवाइ अड्डासँ नगर धरि आवऽवाला सड़कक नामकरण हिनका नामपर कएने छल। किन्तु सभसँ अधिक महत्व-पूर्ण योजना जे तत्कालीन संविद सरकार प्रारंभ कएने छल, से किछु स्वार्थी व्यक्ति द्वारा कानूनी व्यवधान उपस्थित कएलाक कारणेँ पूर्ण नहि भऽ सकलैक। ई योजना छलैक नजरुलक समस्त रचनाक साधारण मूल्य पर प्रकाशन, जाहिमे हिनक प्रत्येक गीतक स्वरलिपि देवाक व्यवस्था सेहो छलैक। ई क्षेत्र एहन थिकैक जतए दुनू बंगालक वीच नजरुल इस्लामक सम्पूर्ण साहित्यक फेरसँ अन्वेषण, संकलन आओर सम्पादनमे महत्वपूर्ण स्पर्द्धाक अवकाश छैक—कारण जे नजरुलक कृति दुनू देशक जनताक गौरवपूर्ण सम्पत्ति थिकैक।

एहि ठाम एहि बातक उल्लेख अपेक्षित बुझना जाइछ जे नजरुलक दू गोट विशिष्ट रचना कवि सत्येन्द्रनाथ दत्तकेँ संबोधित छैन्हि। ज्ञातव्य जे बंगला साहित्यमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक बाद दोसर स्थान हिनके छलैन्हि। दत्त महोदयक नेत्र-ज्योति तीव्र गतिसँ क्षीण भऽ रहल छलैन्हि। हिनक मृत्यून्मुख अवस्थासँ मर्माहत नजरुल १९२९ ई०क सितम्बर मासमे 'दिल दरदी' शीर्षक कविता रचलैन्हि। कवितामे निहित निश्छलतासँ अभिभूत भऽ वरिष्ठ कवि दत्त कृतज्ञता-ज्ञापनार्थ नजरुलक तालटोला लेन स्थित आवास धरि स्वयं चल

गेल छलाह, मुदा नजरुलक अनुपस्थितिक कारणेँ भेँट नहि भऽ सकलैन्हि। १९२२ ई०क जूनकेँ दत्त महोदय स्वर्गवासी भऽ गेलाह। दुनू कविक बीच अनेक बातमे समानता छलैन्हि, यथा—अटूट देशप्रेम, प्रगतिशील सामाजिक विचार आओर श्रेष्ठ काव्यगत ध्वनि ओ छन्दक प्रति आग्रह। दत्त महोदयक मृत्युपर रवीन्द्रनाथ एक मार्मिक कविता लिखलैन्हि। शोक-सभामे नजरुल सेहो एक बड़ उत्कृष्ट शोक-गीतक पाठ कएने छलाह, जकर प्रारंभिक अंश छैक—

चल-चंचल वाणीर दुलाल एसे छिलो पथ भुले
ओगो एइ गंगार कूले।

[सरस्वतीक चंचल दुलारू संतान मार्ग भोतिया गेलाक कारणेँ एहि (संसारक) गंगाकूल धरि चल आएल छलाह]

एही अवसरपर 'सत्यकवि'शीर्षक रचनाक माध्यमसँ ई दत्त महोदयकेँ एक बेर आओर श्रद्धांजलि निवेदित कएने छलाह। दत्त महोदय एक कवि ओ मनुष्यक रूपमे वस्तुतः ई श्रद्धांजलि प्राप्त करबाक अधिकारी छलाह। एहि कवितामे हुनक व्यक्तिगत निश्छलता एवं काव्यात्मक कृतित्वपर प्रकाश छलैक। दुनू कविकेँ सत्यक प्रति आग्रह छलैन्हि। अपन कविकर्म, समसामयिक घटनाक्रम तथा जनसंघर्षक प्रति दुनू कवि सत्यनिष्ठ आओर इमानदार छलाह।

स्थितिक पूर्ण अनुभव लेल एहि बातक उल्लेख अपेक्षित बुझना जाइछ जे ओहि अवधिमे (१९२१-२२ ई०) राजनीतिक जीवन संकटपूर्ण भऽ चुकल छलैक। नेतागण मध्य मौलाना मोहम्मद अली आओर शौकत अलीकेँ सभसँ पहिने दीर्घकालीन कारावासक दण्ड देल गेलैन्हि। एहि दूनू भाइ पर कराचीमे मोकदमा चलाओल गेल छलैन्हि। एहि अवसर पर जन-आक्रोशक संग नजरुल सेहो अपन कविताक माध्यमसँ क्रोध व्यक्त कएलैन्हि। एहि कारणसँ लोकमे मात्र आक्रोश नहि छलैक : समस्त वातावरणमे दृढ़ संकल्प आओर संभावना व्याप्त छलैक। गांधीजीक प्रतिज्ञा (एक वर्षक अभ्यंतर स्वराज्य)क अनुसार ई 'स्वराज्य-वर्ष' छलैक। समय बितलाक संग-संग राजनीतिक आन्दोलन जोरगर भेल गेलैक। अन्तमे ब्रिटिश अधिकारी किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ उद्विग्नताक स्थितिमे नृशंसतापर उतरि आएल। ओ निश्चय कएलक जे येन केन प्रकारेण आन्दोलनकेँ रोकि कांग्रेसक कार्यकलापकेँ समाप्त कऽ दी। स्वराज्यक कार्य-क्रमकेँ आगू बढ़ाबएबाला 'कांग्रेस स्वयंसेवक दल' पर सभ प्रान्तमे प्रतिबंध

लगा देल गेलैक। तुरन्त एकर परिणाम भेलैक कांग्रेसजन द्वारा एहि निषेधाज्ञाक शांतिपूर्ण उल्लंघन—अर्थात् व्यापक रूपसँ सत्याग्रहक आरम्भ। सहस्राधिक लोक स्वेच्छया जेल गेल। स्त्रीगण सेहो पाछू नहि रहलीह। कलकत्तामे स्त्री-सत्याग्रहीक त्रिसदस्यीय दलक नेत्री छलीह वासंती देवी (चित्तरंजन दासक पत्नी)। हुनक अनुसरण करैत देश भरिमे हजारक हजार महिला अग्रसर भेलीह। सभ प्रान्तमे असंख्य आंदोलनकारी नेता ओ कार्यकर्ता लोकनि शांतिपूर्वक सत्याग्रहमे भाग लेलैन्हि। मुदा केओ अदालतिमे अपन बचाव लेल प्रयत्न नहि करैत छलाह। सरकार द्वारा विशेष रूपसँ जेलक व्यवस्था कएल गेलैक। मुदा सत्याग्रहीसँ सेहो भरि देल गेलैक आओर स्वेच्छासँ लोकक जेल अभियान अव्याहत रहल। विवश भऽ सरकार हुनका-लोकनिकेँ विना मोकदमा चलओनहि छोड़ि दैन्हि। कांग्रेसी महान् नेता लोकनिक हेतु कष्टमय जीवनक ई प्रथम परीक्षा छल—काराजीवन। एहिमे छलाह चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमल खान, डा० अंसारी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, आदि। १९४७ ई०मे स्वतंत्रता-प्राप्तिक काल तक ई लोकनि अनेक बेर काराजीवन व्यतीत कएलैन्हि। स्वतंत्रताप्रेमी जनसमुदायक हेतु ब्रिटिश जेलक भय आब समाप्त भऽ गेल छलैक। एतबे नहि; 'जेल जायब' देशभक्तिक प्रतीक बनि गेलैक। एकर परिणामस्वरूप जन-साधारण एवं साहित्यकारलोकनिपर समरूपसँ एकर नैतिक प्रभाव पड़लैन्हि।

दिसम्बर (१९२१ ई०)क अंतमे कांग्रेसक वार्षिक अधिवेशन अहमदाबादमे भेलैक। अधिवेशन मनोनीत अध्यक्ष आओर अन्य-अन्य नेतागण कारावासमे छलाह। एकमात्र अपवाद छलाह गांधीजी। एहिमे सरकारक एक बुद्धिमानी छलैक, जे आगूक घटनासँ स्पष्ट भेलैक। जनताक क्रोधाग्निकेँ आओर अधिक पसरबसँ रोकबाक उद्देश्य छलैक। १९२३ ई०क ओहि घड़ीमे साहित्यकार ओ जनसमुदाय दूनू दम साधने छलाह। अधिवेशनमे स्वराज्यक प्रस्ताव पास होमएबाला छलैक। तनावपूर्ण वातावरणमे प्रतिनिधिगणक बैसक भेलैन्हि। राष्ट्रीय संघर्षक लेल निश्चित क्षणक संग १९२२ ई०क आरंभ भेल। एहन आशा कएल गेलैक जे अंततः एकर परिणति कर-विरोधी आन्दोलन तथा अवश्यंभावी स्वराज्यक लेल शांतिपूर्ण संघर्षमे होएतैक। राष्ट्रनेता गांधीजीक आह्वानपर कोनो घड़ी आन्दोलन प्रारंभ होमएबाला छलैक।

ई भेल एहि अवधि (१९२१-२२ ई०)मे नजरुल इस्लामक जीवन ओ

कृतिक पृष्ठभूमि। एहिसँ अधिक मात्र एतवे कहवाक अछि जे वस्तुतः 'आह्वान'क आवश्यकता नहि पड़लैक। जनसमुदायक उत्साह ओ क्रोधाग्नि स्वतः प्रज्वलित भऽ उठलैक। १९२२ ई०क जनवरी मासमे उत्तरप्रदेशक चौड़ा-चौड़ी गाममे भयंकर हिंसात्मक घटना भऽ गेलैक। ई भेल संकेत गांधीजीक हेतु आन्दोलन स्थगित करवाक, कारण जे जनता एखन धरि अहिंसाक पाठमे दीक्षित नहि भेल छल। शीघ्रे १९२२ ई०क फरवरीमे कांग्रेस कार्यकारिणी समितिक वैसक वारदोली (गुजरात)मे आहूत भेल, जाहिमे गांधीजीक निर्देश पर 'वरदोली प्रस्ताव' पास भेलैक। तत्काल सभ तरहक आन्दोलन सभ ठाम स्थगित कऽ देल गेलैक। कटाइ-विनाइ, ग्रामोत्थान, हिन्दू-मुसलमानक वीच एकता (अस्पृश्यता-निवारण पछाति जोड़ल गेलैक) आदि रचनात्मक कार्य प्रारंभ करवाक आदेश भेलैक। ओहि प्रस्तावक संग गांधीजीक स्वतंत्रता-संग्रामक प्रथम चरण समाप्त भेल। संघर्षक दोसर चरण प्रारंभ होमएवाला छलैक १९३० ई०मे, जाहिमे सम्मिलित छलैक 'नमक सत्याग्रह' आओर 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन'। एहि वीच गांधीजीक जेल-यात्रा आओर चित्तरंजन दास एवं मोतीलाला नेहरूक नेतृत्वमे स्वराज्य पार्टीक संवैधानिक लड़ाइ चलैत रहल। नजरुलक हेतु ई अवधि विद्रोह एवं जन-चेतनाक कविक रूपमे गगनस्पर्शी उन्नति आ प्रगतिक काल छलैन्हि।

७. नजरुलक बीजमंत्र

एक कलाकारक रूपमे नजरुल इस्लामक जीवनक पृष्ठ १९७२ ई०क आस-पास बूझू जे बन्द भऽ भेल छलैन्हि। कोनो अलौकिक चमत्कारहिसँ एकर निवारण संभव छलैक, किन्तु से भेलैक नहि। लगभग साठि वर्ष पूर्व साहित्याकाशमे उदित होएबाक कालसँ निरंतर हिनक विलक्षण प्रतिभाक स्वीकृति असंदिग्ध रूपसँ होइत रहल अछि। जनगणक कवि, निर्भीक परंपरा-प्रवर्तक, राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम एवं मानवाधिकारक योद्धा तथा एक संगीत-स्रष्टाक रूपमे हिनक बहुपक्षीय योगदान भेल अछि। आओर एहि योगदानक कृतज्ञतापूर्वक शिरोधारण सुयोग्य आलोचक एवं लक्षाधिक देशवासी द्वारा सेहो भेलैक अछि। कलाक्षेत्रमे जाहिरूपेँ हिनक अवदान भेल छैन्हि, तकर आओर अधिक व्यापक एवं ध्यानपूर्वक अध्ययन होएबाक चाही।

समसामयिक वंगीय साहित्य एवं जीवनमे नजरुलक स्थान-निरूपण रवीन्द्र-युगक द्वितीय कविक रूपमे भेलैन्हि अछि। नजरुल एक श्रेष्ठ साहित्यकार आओर संगीतनिर्माता छलाह। रवीन्द्रनाथकेँ छाड़ि एहि भाँतिक साहित्य एवं संगीतक समन्वय कोनो दोसर व्यक्तिमे देखबामे नहि अबैछ। रवीन्द्रनाथक उपजीवी होइतहुँ अपन वैशिष्ट्य स्थापित कएनिहार आधुनिक कविगणक मध्य सत्येन्द्रनाथ दत्त, यतीन्द्र नाथ सेनगुप्त आओर मोहितलाल मजुमदारक नाम लेल जाइछ। हिनका लोकनि अथवा रवीन्द्र-युगक कोनो अन्य कविसँ भिन्न भऽ अपन मौलिकता सिद्ध करबाक हेतु नजरुल वाह्याडंबर आओर शैलीगत प्रदर्शन अथवा स्वयं रवीन्द्रक प्रभावसँ बचबाक प्रयास नहि कएलैन्हि। चिंतन एवं कार्यपद्धतिगत मौलिक अन्तरक कारणेँ नजरुल रवीन्द्रनाथसँ सहजहि भिन्न छलाह। एक बात आओर ज्ञातव्य जे नजरुल विद्वान् नहि छलाह आओर नहि ई कहिओ विद्वान् होएबाक छद्माचरण कएलन्हि। हिनका हेतु जे किछु छल से हृदय, आओर इएह हृदयपक्ष छल हिनक काव्यक निष्कर्ष एवं दिशा-निर्देशक। पाठकवर्ग एवं जनसमुदायक बीच नजरुलक विशिष्टताक तथा प्रशंसाक कारण

छल हिनक तेजोमय भाव, सहज-सरल आकर्षण, निश्छलता-निष्कपटता तथा अक्षय प्राणवत्ता एवं ओजस्विता ।

स्वभाव एवं विश्वास दूनूसँ नजरुल जनगणक कवि छलाह । सृजनात्मक जीवन भरि हिनका एहि सिद्धान्तने विश्वास छलैन्हि जे 'कला जनताक हेतु थिक'—यद्यपि संभवतः हिनका नहि बूझल छलैन्हि जे ई सिद्धान्तवाक्य लेनिनक थिकैन्हि । चतुर्दिक व्याप्त वस्तुस्थिति एवं मानवीय परिस्थितिसँ अपनाकेँ अप्रभावित-असंपृक्त राखब हिनक स्वभावक विरुद्ध छल । संभव जे हिनक सहज कल्पना एवं सृजनशीलता, अधिकारपूर्ण भाषा-शैली अथवा बुद्धि-चातुर्य एवं भावतरंग कौखन संयम-रेखाक अतिक्रमण करैत होइन्ह, मुदा हिनक सहजोद्रेक तथा उत्कट स्वच्छन्दता असंदिग्ध रूपसँ निश्छल ओ निष्कपट छल । नियोजक स्वामीक तगेदा पर कौखन एक दिनमे हिनका १०-१५ गोट गीत सुरबद्ध करऽ पड़ैत छलैन्हि । परिणामतः ई स्वयं अपन वैशिष्ट्य एवं प्रवाहमयताक शिकार होइत छलाह । स्वाभाविक छल जे हिनक कृति कौखन मंद, विषम, आडंबरपूर्ण, एवं उत्साहाधिक्यसँ उपदेशात्मक भऽ जाइत छल । एतबे नहि, कौखन उदात्तसँ हास्यास्पद सेहो होइत छलैक । तथापि एहि सभ त्रुटिसँ जे प्रतिभावानक लेल सामान्य बात होइछ, हिनक उपलब्धिक पलड़ा बहुत बेशी भारी छलैन्हि, यथा—तीव्र भावोद्रेक एवं ओजस्विता, मार्दवगुण, शैलीक नवीनता तथा फारसी-अरबी एवं संस्कृत-बंगला शब्दावलीक सफल समन्वय । हिनक रचनामे प्रेमक विभिन्न मनोदशाक सूक्ष्म वर्णन भेल अछि जे ऐन्द्रियसँ लऽ कऽ आध्यात्मिक धरातल तकक छैक । हिनक रचना सदैव देश, जनसामान्य तथा हिन्दू-मुस्लिम एकताक प्रश्नसँ घनिष्ठ रूपेँ संबद्ध रहल ।

आब एक प्रश्न पूछल जा सकैछ—की नजरुलक कृतिमे कोनो 'गंभीर विषय' निहित छैन्हि ? हिनक परिचय प्रथमतः एक विद्रोही कविक रूपमे होएबाक कारणेँ अधिकांश लोककेँ ई तथ्य विस्मृत भऽ जाइत छैन्हि जे नजरुल अपनाकेँ मात्र विद्रोह तक सीमित नहि रखलैन्हि । तखन ईहो सत्य जे ई अपन विद्रोही रूपक त्याग कहिओ नहि कएलैन्हि । स्वयं कविक तथा हमरालोकनिक दुर्भाग्यसँ नजरुलक साहित्यिक जीवनक्रम दुखद एवं अदृश्य तत्वक द्वारा भंग भऽ गेलैन्हि आओर तेँ ई सर्वांगीण रूपेँ पूर्ण सेहो नहि भऽ सकल । तथापि हिनक जीवन एक गंभीर प्रेरणापूर्ण आकांक्षा दिशि संकेत करैछ, जाहिसँ ई सतत व्याकुल-व्यग्र रहैत छलाह । यदि ओहि अंधकारसँ जाहिसँ ई आवृत भऽ गेल छलाह, ई उबरि जैतथि तँ संभवतः हिनक

जीवनोद्देश्यक विवृति आओर भव्य रूपें होइत। एहि लेल 'सिन्धु-हिन्दोल'मे संकलित कविता तथा 'आमार सुन्दर'मे उद्घोषित आस्था दिशि संकेत कएल जा सकैछ।

'सिन्धु-हिन्दोल'क किछु कविताक गणना नजरुलक प्रौढ़ एवं उत्कृष्टतम रचनाक रूपमे भेलैक अछि। पोथीक शीर्षक-निर्धारण एहिमे संकलित दीर्घ कविता 'सिन्धु-हिन्दोल'क नामपर भेल छैक। दू गोट आओर महत्वपूर्ण कविता 'अनामिका' एवं 'दारिद्र्य' सेहो एहि संग्रहमे छैक। एक बेर नजरुल अपन मित्र मुजफ्फर अहमदक गाम शेल हलाह जे संदीप द्वीपमे छैक। चटगाँवक तटवर्ती ई संदीप द्वीप बंगालक खाड़ीमे अवस्थित छैक। एतए स्टीमर जहाजसँ पहुँचल जा सकैछ। 'सिन्धु-हिन्दोल' एही जलयात्राक प्रतिफल थिक। तीन खंडमे विभक्त एहि कविताक प्रथमांशमे समुद्रक स्तुति भेलैक अछि। कविकें समुद्रमे आत्मानुभूत आकांक्षा एवं वेदनाक दर्शन होइत छैन्हि अर्थात् सौन्दर्याकांक्षा एवं अज्ञातक अभिलाषा। द्वितीय अंशमे प्रेमक अवधारणा एक उदात्त एवं कल्याणकारी तत्त्वक रूपमे कएल गेलैक अछि। कवि अपनाकें एक विप्रयुक्त प्रेमी ज्ञापित कऽ समुद्रसँ पूछैत छथिन्ह—'की अहूँ हमरे सदृश वियोगी छी?' तृतीयांशमे समुद्रक वर्णन एक शिष्ट एवं श्रेष्ठ प्रेमीक रूपमे भेलैक अछि, ओ प्रेमी जे बिना प्रतिदानक आशा कएने अपन सर्वस्व विश्व जीवनक लेल अर्पित कऽ देने हो। कवि द्वारा समुद्रक अभिनंदन एक परमप्रिय मित्रक रूपमे भेल छैक—

'सुन्दर आमार
नमस्कार
तुमि काँदो, आमि काँदो, कीदे मोर प्रिया अहरह....'
[हे हमर अपन सुन्दर, हमर प्रणाम।
अहाँ कनैत छी, हम कनैत छी आ कनैत छथि
हमर राति दिन प्रियतम।]

कविताक भाव खूब स्पष्ट नहि छैक, किन्तु निहित छैक निःसंदेह एहिमे जीवन ओ प्रेमसँ संबद्ध भाव : एक अतृप्त आकांक्षा। कविक 'सुन्दर आमार' आओर औन्दर्यक बीच तादात्म्य संबंध स्थापित कएल गेलैक अछि।

संग्रहक दोसर महत्वपूर्ण कविता छैक 'अनामिका' जाहिमे शाश्वत सत्य अर्थात् प्रेमक अर्थ निरूपित भेल छैक। कविक मतानुसार प्रेमक मूल तत्व एक छैक, किन्तु प्रेमी भऽ सकैछ अनेक। एहि ठाम प्रेमक व्याख्या

'काम' भेलैक अछि, प्रेमक ओ रूप नहि, जे जीवनक ज्योति होइछ। तथापि नजरुलक अभिप्राय छैन्हि उन्मुक्त एवं उदात्त प्रेमाकांक्षासँ। तेसर कविता 'दारिद्र्य'क महत्व कम नहि छैक। एहि कविताकेँ नजरुलक वस्तुनिष्ठ आओर व्यष्टिनिष्ठ दृष्टिकोण मध्य संयोजक कड़ी बुझबाक थिक। दारिद्र्य हिनका अपना पथसँ विचलित नहि कऽ सकैछ आओर सौन्दर्य निष्फल नहि भऽ सकैछ—ई थिक नजरुलक उद्घोषणा। एकरा विपरीत हिनक विश्वास छलैन्हि जे दारिद्र्य क्रान्तिकेँ जन्म देत आओर करत असत्य एवं विद्रूपक विनाश :

संदेहग्रस्त नहि होएबाक थिक,
सौन्दर्यक देवी दिग्‌दिगंतमे यौवनक विजन-गान गाबथि,
असत्य एवं विद्रूपक हो सर्वनाश,
स्वागतम् हे हमर परमानंद, सौन्दर्यक हो अभ्युदय, प्रकाशमान हो।

एहि तीनू कवितामे सौन्दर्यकेँ जीवनक मुख्य प्रयोज्य विषय मानल गेलैक अछि आओर प्रेमकेँ एकर प्रेरक शक्ति। एहि भाँति कविक व्यक्तिगत जीवन यद्यपि कंटककीर्ण होन्हि, निखिल मानवीय धरातलपर एकर पूर्ण एवं प्रासकाम होएबामे हिनका दृढ़ आस्था छैन्हि, कारण जे क्रान्ति, जाहिसँ कवि प्रतिबद्ध छथि, अवश्यंभावी छैक आओर एकरा संग आविर्भूत होएतैक एहि भूतलपर सौन्दर्य, परमानन्द एवं नवज्योतिक महान कल्प।

आठ सालक बाद लिखल गेलैक गद्यकाव्य 'आमार सुन्दर'। एहि कालांतर-मध्य दुख एवं वेदनासँ हिनक उद्‌विग्न उत्कंठा-अभिलाषा दृढ़ संकल्पमे परिवर्तित भऽ गेलैन्हि—ओहि शक्तिपर अधिकार करबाक लेल जे परिवर्तन-क्रमेँ हिनक स्थिति ओ स्वरूपक निर्माण कएने छलैन्हि। ए० के० अहमद द्वारा फेरसँ शुरू भेला पर 'नवयुग'मे नजरुलकेँ पुनः बजाओल गेलैन्हि। एहि दैनिक पत्रक उद्देश्य छलैक हिन्दू-मुस्लिम एकता। १७ ज्येष्ठ १३५२ (१९४५ई०क मइ मास)क अंकमे हिनक 'आमार सुन्दर' प्रकाशित भेलैक। एहि रचनामे नजरुलक स्थिति एवं कथ्यक परिचय भेटैछ। ई वस्तुतः हिनक आस्थाक स्वीकृति, जीवनोद्देश्यक संलेख, संगहि 'जीवनदेवता'क उपलब्धि छल। यद्यपि प्रस्तुत गद्यकाव्यमे रवीन्द्रनाथक 'जीवनदेवता' सदृश स्पष्टता एवं भावक संबद्धता नहि छैक, तथापि ई एक विशिष्ट कृति थिक आओर थिक नजरुलक अध्ययन करबाक हेतु महत्वपूर्ण साधन-सामग्री।

नजरुलक स्वोक्ति छैन्हि—"'आमार सुन्दर'क अवधान प्रथमतः लघुकथाक रूपमे भेल आओर पुनः संगीत, सुर, लय, छन्द एवं भावक रूपमे। तत्पश्चात् 'नवयुग' पत्रमे ई (१९२० ई०) 'शक्ति सुन्दर'क रूपमे तीव्र प्रकाशक संग क्रांति एवं विद्रोहक संदेश लऽ कऽ आएल।" एकरा बाद अएलैक जनगणक प्रेम आओर नजरुलक कारावासक अवधि। "ओहि काल हम सोचि नहि सकैत छलहुँ जे हम जे किछु लिखल अछि से हमर नहि थिक, किन्तु वस्तुसत्य तँ थिक ई जे ओ सभ छलैक हमर प्रतिभा सुन्दरक।" पुनः आठ वर्ष धरि नजरुल बंगालक गाम-गाम एवं नगर-नगर भ्रमण करैत रहलाह। "तखन अपन 'प्रतिभा सुन्दर'क पहिल बेर परिचय हमरा मातृभूमिक रूपमे भेटल। हमरा सतत अनुभव होइत रहल जे हमर जन्म जाति वा धर्मकेँ बिसरि मानवमात्रसँ प्रेम करबाक हेतु भेल अछि। ओही काल हमरा 'यौवन सुन्दर' एवं 'प्रेम सुन्दर'क ज्ञान सेहो भेल। पुनः 'प्रतिभा सुन्दर' हमरा समक्ष 'शोक सुन्दर' रूपमे आएल।" नजरुलक पुत्रक आगमन 'स्नेह सुन्दर'क रूप धारण कएने छलैन्हि आओर ओकरा संगहि लुप्त भऽ गेलैन्हि हिनक आनन्द, काव्य, हँसीखुशी एवं संगीत। नजरुल पुनः कहैत छथि—"एहन छल हमर 'शोक सुन्दर'।"

अपन वेदना एवं विद्रोहक क्षणमे नजरुल पूछैत छलथिन्ह—"ओ निर्दय स्रष्टा के थिक आओर किएक कएलक ओ हमर 'शिशु सुन्दर'क अपहरण?"

एक मित्रसँ नजरुलकेँ परामर्श भेटलैन्हि—जेँ हेतु 'प्रलय सुन्दर'क उपलब्धि आवश्यक अछि, तेँ ध्यान ओ पूजा-अर्चन करू।

नजरुल 'प्रलय सुन्दर'क प्राप्त्यर्थ खूब करुण प्रार्थना-अर्चना कएलैन्हि। कुरान एवं वेदक पाठ सेहो कएलैन्हि। हिनका ई सूचित भेलैन्हि जे हिनक काव्य एवं विद्रोहभावक माध्यमसँ सौन्दर्यक जे अभिव्यंजना होइछ, से प्राक्चेतन मनःस्थितिमे होइछ आओर ई सतत संगमे मित्रवत् विद्यमान रहैछ। एहिसँ हिनक निद्राभंग भेलैन्हि, हिनकामे ज्ञानक आलोक उद्भासित भेलैन्हि आओर ई अध्ययन-मननमे लीन भऽ गेलाह। हिनका आभास भेलैन्हि जे दृष्टि-पथसँ क्षितिजक आवरण हटि गेल अछि आओर "हमरा प्रथम बेर 'स्वर्गीय सुन्दर'क दर्शन भेल।"

आओर तखन नजरुल एक विकट भयंकर शक्तिसँ परिचालित भेलाहु। ओ शक्ति गरजि कऽ कहलकैन्हि—"हओ बत्ताह, मातृभूमिक ऋण बिना चुकओने एहि ठामसँ कोना प्रयाण करबह।" "तेँ हम पृथ्वीमाता 'जन्मभूमि' दिशि उन्मुख भेलहुँ।" आ जतबा बेर कवि पलायनक प्रयास कएलैन्हि, हिनका पर कसि कऽ प्रहार भेल। पत्नी पर रोगक प्रकोप एवं धनक क्षति

भेलैन्हि। संगहि ऋणक भारसँ ई दबैत गेलाह। तखन एक अपरिचित मित्रसँ हिनका अन्तर्दृष्टि भेटलैन्हि। विषादमय अंधकारक अन्तराल हटि गेलैन्हि। "हम पृथ्वीमाताकेँ स्नेहसँ स्वीकार कएल आओर कएलहुँ हुनक आलिंगन···· आओर देखल बंगाल एवं भारतक दारिद्र्यपूर्ण शोषित अवस्था।" नजरुल तत्कालहि उद्घोषपूर्ण संकल्प कएलैन्हि जे यावत् ई मातृभूमिकेँ स्वतंत्र नहि करताह तावत् हिनका ईश्वर एवं मुक्ति पर्यन्त स्वीकार नहि होएतैन्हि।

आब तेँ मातृभूमिक लेल सम्पूर्ण समर्पण। अति सामान्य पुष्पमे, जे प्रस्फुटित भऽ मुरझा जाइछ, नजरुलकेँ 'पुष्प सुन्दर'क प्रमाण भेटऽ लगलैन्हि। सरिता, समीर, नीलसागर सभ हिनका आत्मीय बूझि पड़लैन्हि आओर ईहो बूझि पड़लैन्हि जे ओ सभ हिनक आह्वान-अभिनन्दन कऽ रहल होइन्ह। एकरा बाद संप्राप्त भेल एक झंझावात—भयंकर आओर अंधकारणपूर्ण जे अनुग्रह-पूर्वक घोषणा कएलक—"हम छी 'प्रलय सुन्दर'।"

तखनहि भेटलैन्हि हिनका आत्मदृष्टि आओर अनुभव भेलैन्हि 'सृष्टि सुन्दर'क। एहिमे निहित छलैक परम सिद्धिक संभावना। एकरा संगहि भेटलैन्हि आदेशना जे ई पहिने अपन कर्तव्यक पालन करथि, विश्वमानवक लेल प्राचीन अक्षत पवित्रता एवं सौन्दर्यक पुनरावृत्ति हेतु प्रयास करथि। एहि रचनाक समापन 'आमीन' अर्थात् 'एवमस्तु' शब्दसँ भेलैक अछि।

एहि भाँति नजरुल अपना जीवनक विभिन्न चरणक विवरण प्रस्तुत कएलैन्हि अछि, जे चिन्तन-ध्यान, आत्मनिष्ठ सूक्ष्म आदर्शवादसँ मानवक संघर्षपूर्ण वस्तुनिष्ठ लक्ष्य आओर अन्ततः मातृभूमि एवं मानवताक सेवाक महत्वावधारणाक पथ पर संचरणशील यात्रीक प्रगतिक कथा थिक। किन्तु विभिन्न चरणक रूपरेखा खूब स्पष्ट आओर व्याख्यायित नहि छैक। एक चरणसँ दोसर चरणक संचरणक्रम तथा लघु नकारात्मक 'नहि'सँ बहुमुखी स्वीकारात्मक 'हँ' तक भेल प्रगति गुह्य योगसाधनामे दीक्षित व्यक्तिकेँ छाड़ि सामान्यजनक लेल बोधगम्य नहि छैक। तथापि किछु विषय तँ अवश्य स्पष्ट छैक आओर स्पष्ट छैक हिनक जीवनक किछु लक्ष्य जाहि दिशि प्रसंग-निर्देश भेलैक अछि। नजरुलक लक्ष्य छलैन्हि 'सौन्दर्य', आ एहि सर्वव्यापी सौन्दर्यक पूर्ण सफल अवधारणा जीवन एवं जगतक स्वीकृतिसँ संभव छैक। तेँ मातृ-भूमि एवं मानवताक सेवाकेँ शीर्षस्थान देल गेलैक अछि। एही आदर्शक हेतु नजरुल अपनाकेँ समर्पित कएने छलाह।

ई मात्र सौन्दर्य किंवा आस्थाक विज्ञप्ति नहि; ई एक मानवतावादीक बीजमंत्र सेहो थिक।

ग्रन्थ-सूची-संबंधी टिप्पणी

नजरुल इस्लामक मुख्य रचनाक निर्देश मूल ग्रन्थमे भऽ चुकल अछि। यथासाध्य सत्यापित प्रकाशनतिथि सेहो देल गेलैक अछि। मानसिक रूपसँ विक्षिप्त होएबाक पश्चात् कविक किछु आओर गद्य-पद्य रचना प्रकाशित भेलैन्हि अछि, यद्यपि सम्पूर्ण कृति उपलब्ध नहि छैक। ओकर प्रकाशन सेहो नहि भेलैक अछि।

पुस्तकक मूल भागमे निर्दिष्ट रचनाक अतिरिक्त किछु अन्य उल्लेखनीय रचना निम्नस्थ छैक :—

कविता : **संचयन** [काव्य संग्रह, १९५५ ई०]
मरु-भास्कर [१९५७ ई०],
शेष सौगात [१९४८ ई०]

गद्य-पद्य : **नजरुल-रचना-संभार** [२ भाग, एहिमे एहनो कविता सभ संकलित छैक, जे पहिने उपलब्ध नहि छलैक]

गीतग्रन्थ : **बुलबुल** [भाग २, १९५२ ई०]

मूल ग्रन्थमे समुचित रूपसँ निर्दिष्ट नहि भेल रचना अधोलिखित छैक :—

उपन्यास : **बाँधनहारा** [१९२७ ई०]
मृत्यु-क्षुधा [१९३० ई०]
कुहेलिका [१९३१ ई०]

नाटक : **आलेया** [१९२५ ई०]
मधुमाला [१९५९ ई०]
झिलीमिली [१९३० ई०]

कविता : **झिंग-फूल** [१९२६ ई०]
सात भाइ चम्पा [१९२७ ई०] } नेना-भुटकाक हेतु।

आख्यायिका : **व्यथार दान** [१९२१ ई०]

रिक्तेर वेदन [१९२५ ई०]
सिउली माला [१९३१ ई०]

अनुवाद : **रुबाएत-इ-हाफिज** [१९३० ई०]
काव्य अम्बर [१९३३ ई०]
रुबाएत-इ-उमरखैयाम [१९६० ई०]

'नजरुलक उत्कृष्ट कविताक संकलन' प्रस्तुत भऽ रहल छल। साहित्य अकादेमी द्वारा एकर प्रकाशन मुख्य भारतीय भाषा एवं अंग्रेजीमे होएबाक लेल छलैक।

विदेशी भाषामे प्रकाशित रचना :

नजरुलक उत्कृष्ट कविता रूसी भाषा तथा रूसक अन्य भाषामे प्रकाशित भऽ चुकल अछि। रूसी भाषान्तर १९७० ई०मे आओर अन्य रूपान्तर एतत्पश्चात् भेल।

हिन्दी — नजरुलक किछु मुख्य कविता (१०)क अनुवादक संग साहित्यकारक रूपमे नजरुलक संक्षिप्त परिचय राष्ट्रभाषा परिषद्, वर्धा द्वारा प्रकाशित भेल छैक (विवरण एवं संकलनकर्त्ता—गोपाल हालदार)।

अंग्रेजी — नजरुल एवं हिनक कृति पर टिप्पणी एवं पोथी :
(१) **काजी नजरुल इस्लाम** नई दिल्ली १९६८ ई०—वसुधा चक्रवर्ती);
(२) **क्रियेटिभ बंगाल**, कलकत्ता—काजी अब्दुल वदूद।

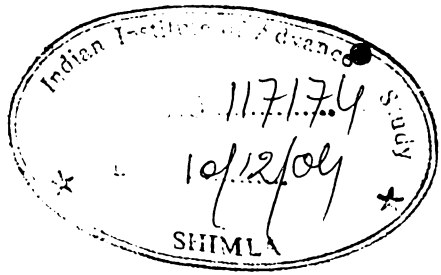

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रामे अपन महत्वपूर्ण पदचिह्न जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नबका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझाँ राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रममे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचाँ देल जाइत अछि :—

मूलतः अङरेजीमे :—

विद्यापति	:	रमानाथ झा
चन्दा झा	:	जयदेव मिश्र

मूलतः मैथिलीमे :—

सीताराम झा	:	भीमनाथ झा

मैथिलीमे अनूदित :—

नामदेव	:	माधव गोपाल देशमुख
चण्डीदास	:	सुकुमार सेन
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	:	हिरण्मय बनर्जी
जयदेव	:	सुनीति कुमार चटर्जी